DELED 03
Block I Nature of Language
Unit-01 What in Language

इकाई–1 भाषा क्या है?
खण्ड–1 भाषा की प्रकृति

- मनुष्य एवं पशु संप्रेषण में अंतर
- भाषा की विशेषताएं
- भाषा के कार्य

इकाई–1 भाषा क्या है?

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 भाषा की परिभाषा एवं अर्थ

1.4 भाषा की उत्पत्ति

1.5 भाषा का उपयोग एवं महत्व

1.6 भाषा की प्रकृति

1.7 संप्रेषण क्या है?

1.7.1 संप्रेषण प्रक्रिया के मुख्य तत्व

1.8 मानव एवं पशु संप्रेषण में अंतर

1.8.1 मानव संप्रेषण में भाषा

1.8.2 पशु संप्रेषण में भाषा

1.9 भाषा की विशेषताएं

1.10 भाषा की संरचना

1.11 भाषा के कार्य

1.12 सार संक्षेप
1.13 प्रगति की जाँच
1.14 चर्चा और स्पष्टीकरण
1.14.1 चर्चा के लिए
1.14.2 स्पष्टीकरण के बिन्दु
1.15 संदर्भ

1.1 प्रस्तावनाः–

मानव जिसकी सहायता से अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करता है, वही भाषा है। समाज में व्यक्ति परस्पर विचारों एवं भावों का आदान–प्रदान करते हैं, भाषा सामाजिक जीवन में किसी व्यक्ति के द्वारा अर्जित ऐसा सामर्थ्य है, जिसे वह भाव एवं विचार के संप्रेषण में सहज ही हो जाता है। अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए व्यक्ति जिन व्यक्त ध्वनि संकेतों को नित्य व्यवहार के लिए स्वीकार करता है, उसको भाषा कहते हैं भाषा विचारों को व्यक्त करने वाली ध्वनियों और वाक्यों का एक समूह होता है। वास्तव में भाषा मनुष्य के मुख से निसृत वह सार्थध्वनि समूह है जिसका विश्लेषण और मध्ययन किया जा सके। सामान्य रूप से मानव मात्र की भाषा को भाषा कहा जाता है। भाषा एक सामाजिक क्रिया है। यह वक्ता एवं श्रोता दोनों के आचार–विनियम साधन है।

1.2 उद्देश्यः–

इस इकाई के अध्यन से आप–

- भाषा की परिभाषा समझ सकेगें।
- हिन्दी भाषा के विकास को समझने का प्रयास करेंगे।
- छात्रों की संभावित त्रुटियों को समझेगें।
- हिन्दी भाषा की उत्पत्ति को समझने का प्रयास करेंगे।
- हिन्दी भाषा का उपयोग एवं महत्व समझेगें।
- हिन्दी भाषा की प्रकृति को समझ सकेंगे।
- मनुष्य एवं पशु संप्रेषण में भाषा के महत्व को समझेंगे।
- हिन्दी भाषा की विशेषताएं समझेंगे।
- हिन्दी भाषा के कार्यो को समझने का प्रयास करेंगे।

भाषा की परिभाषा एवं अर्थः–

समाज में व्यक्ति परस्पर विचारों एवं भावों का आदान–प्रदान करते हैं, तभी सही अर्थो में समाज बनता है। भाषा सामाजिक जीवन में किसी व्यक्ति के द्वारा अर्जित ऐसा सामर्थ्य है, जिसे वह भाव एवं विचार के संप्रेषण में सहज ही हो जाता है। भाषा का अस्तित्व व्यक्ति के लिए अत्यावश्यक है भाषा किसी समाज, राष्ट्र की मौलिक सम्पत्ति है, जिससे जीवंत समाज एवं राष्ट्र का निर्माण होता है। चल्सी के प्रकरण से भाषा के तत्व भाषायी क्षमता तथा अन्य क्षमताओं के बारे में चार महत्वपूर्ण निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

1. भाषा में प्रधान तत्व है उसका वाक्य विन्यास शब्द भंडार नही है।
2. उम्र के बढ़ने से शब्द भंडार में वृद्धि या नए शब्द सीखने की क्षमता कम नही होती है।
3. संज्ञात्मक योग्यता भाषात्मक योग्यता से भिन्न है। एक छः वर्ष का बालक भाषा का उपयोग करने वाले समुदाय से किसी भी व्यक्ति की कोई अभिव्यक्ति समझने में सक्षम होता है, भले ही उसने वैसी अभिव्यक्ति पहले कभी न सुनी हो, इसी प्रकार वह ऐसे वाक्यों का उपयोग करने में भी सक्षम होता है, जिसका दूसरे व्यक्तियों ने कभी उपयोग न किया हो, तथा जिन्हें भाषा के दूसरे बोलने वाले सार्थक तथा व्याकरण समान स्वीकार करने हों।

भाषा की उत्पत्तिः–

भाषा की उत्पत्ति से आशय उस काल से है, जब मानव ने बोलना आरंभ किया और भाषा सीखना आरंभ किया, इस विषय में बहुत सी संकल्पनाएं हैं जो अधिकाशंतः अनुमान पर आधारित हैं। मानव के इतिहास में यह काल इतना पहले आरंभ हुआ कि इसके विकास से संबंधित कोई भी संकेत मिलना असंभव है।

भाषा की उत्पत्ति का संबंध इस बात से है कि मानव ने सर्वप्रथम अपने किस काल में अपने मुख से निसृत होने वाली ध्वनियों को वस्तुओं, पदार्थो एवं भावों से जोड़ा। भाषा की उत्पत्ति का प्रश्न भाषा विज्ञान की विचार सीमा में नही आता विज्ञान जो पदार्थ का तात्विक विश्लेषण करके यह बता देगा कि भाषा किस वर्ग की भाषा है।

भाषा की उत्पत्ति के विषय में विद्वानों ने दो प्रकार के विचार मार्ग अपनाएं हैं, जिन्हें प्रत्यक्ष एवं परोक्ष मार्ग कहा जाता है।

प्रत्यक्ष मार्गः–(Deductive)-

जिसमें भाषा की आदिम अवस्था से चलकर उसकी वर्तमान तक विकसित दशा का विचार किया जाता है।

परोक्ष मार्ग :–(Inductive)-

भाषा की आज की विकसित दशा से पीछे की ओर चलते हुए उसकी आदिम अवस्था तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

भाषा की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांतः–

इन सभी का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है–

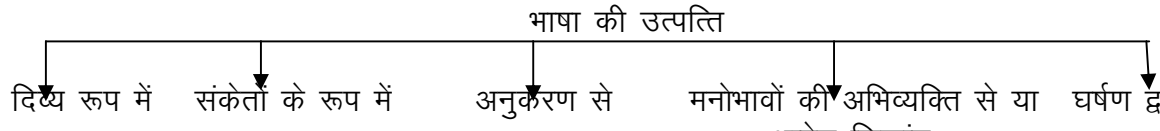

1. **दिव्य उत्पत्ति सिद्धांतः–**इस सिद्धांत के अनुसार भाषा की उत्पत्ति ठीक उसी दैवीय आधार पर हुई, जिस आधार पर इस पृथ्वी पर मनुष्य की उत्पत्ति हुई है, अर्थात भाषा को भी ईश्वर ने ही जन्म दिया। परन्तु कुछ आलाचकों का मानना है कि प्राणी मात्र की उत्पत्ति तो ईश्वर द्वारा हुई है, जबकि ईश्वर की दृष्टि से सभी प्राणी समान है, अतः भाषा का जन्म ईश्वर द्वारा नहीं, अपितु मनुष्य के अपने द्वारा किया गया है।
2. **सांकेतिक उत्पत्ति भाषाः–**इस सिद्धांत के आधार पर जब मनुष्य की आवश्यकताएं अति सीमित रही, उसका क्षेत्र भी सीमित रहा होगा भाषा के अभाव में उसने अपने विचारों एवं भावनाओं का परस्पर आदान–प्रदान संकेतों द्वारा ठीक उसी प्रकार से किया होगा, जिस प्रकार गूंगे लोग अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं, संकेतों के माध्यम से।
3. **अनुकरण सिद्धांतः–**इस सिद्धांत के प्रतिपादक मैक्समूलर है के अनुसार पशु–पक्षियों और मनुष्यों की आवज के आधार पर ही उनके नाम रखे गये होगें। जैसे काँव–काँव (कौआ) कुहू–कूहू (कोयल) आदि ।
4. **आवेग का सिद्धांतः–**हर्ष, विषाद, उल्लास, आश्चर्य करूणा आदि स्थितियों में जो ध्वनि निकलती है, जैसे आहा, ओह–ओह । भाषा की उत्पत्ति भी मनोभावों की इसी अभिव्यक्ति से हुई है।
5. **घर्षण द्वाराः–**इस सिद्धांत के अनुसार ध्वनि और अर्थ में (घनिष्ठ) संबंध होता है प्रत्येक पदार्थ अलग–अलग स्थितियों में एक ही प्रकार की ध्वनि करता है। भाषा की उत्पत्ति पदार्थ की रगड़ से उत्पन्न ध्वनियों से हुई है।

भाषा का उपयोग एवं महत्वः–भाषा का उपयोग मुख्य रूप से निम्न कार्यो के लिये किया जाता है–

1. शिष्टाचार के निर्वहन के लिए ।
2. सूचनाओं, समाचार और जानकारी के आदान–प्रदान के लिए ।
3. भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति तथा संप्रेषण के लिए ।
4. निर्देशों के आदान–प्रदान के लिए ।

1.शिष्टाचार के निर्वहन के लिएः–हरेक समाज में शिष्टाचार के अपने नियम है, जिनका पालन करना न केवल समाज अपितु प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है, अधिकतर का निर्वहन भाषा के माध्यम से होता है, व्यक्तियों का अभिवादन उन्हें संबोधित करना हर समाज के अपने तरीके हैं। उनका पालन करना भाषा के लिए आवश्यक है।

2.सूचनाओं समाचार एवं जानकारी आदान–प्रदान के लिएः–भाषा समाज एवं समुदाय के सदस्यों को जोड़कर सामूहिक शक्ति प्रदान करती है, समुदाय के सदस्यों को एकजुट रखने, सूचनाएं और जानकारी आदान–प्रदान करने में भाषा अहम् भूमिका निभाती है।

3. विचारों एवं भावनाओं की अभिव्यक्तिः– भाषा दो प्रकार से कार्य करती है वास्तव में भाषा के रूप में मनुष्य के पास वह शक्ति है, जो अपने समुदाय के दूसरे सदस्यों के मस्तिष्क की घटनाओं को अच्छी तरह से व्यक्त कर सकता है। भाषा के माध्यम से वह अपने व्यवहारों एवं विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है।

4. भाषा का महत्वः—भाषा मनुष्य को अन्य पशुओं से अलग करती है पशु केवल वर्तमान की घटना अथवा आवश्यकता की अभिव्यक्ति के लिए संप्रेषण का उपयोग करते हैं मनुष्य अपने वर्तमान की ही नहीं वरन् भूतकाल की घटना और भविष्य की संभावित घटनाओं का संप्रेषण भाषा के माध्यम से करते हैं।

आज से हजारों वर्ष पहले पशुओं की अनेक प्रजातियों एवं मनुष्य ने समूह में रहना शुरू किया। भाषा मनुष्य को अन्य पशुओं से अलग करती है। भाषा समुदाय की परम्परा एवं संस्कृति की निरंतरता बनाये रखने का साधन है। अपने पूर्वजों की जीवनचर्या उनकी सामाजिक परम्पराओं आदि की जानकारी आज भी हमें मिलती है। भाषा ही चिंतन एवं मनन का माध्यम है।

भाषा की प्रकृति

भाषा का उपयोग संप्रेषण तथा अन्य क्रिया के लिए होता है भाषा एवं परम्परा आधारित तंत्र है। समुदाय के सदस्यों ने संप्रेषण एवं अन्य क्रिया के लिए जो तंत्र विकसित किया है, वह परम्पराओं पर आधारित है। भाषा में वाचिक ध्वनि या संकेत के रूप में उपयोग की जाती है। मातृभाषा सीखते समय बालक को ध्वनि विशेष का ध्यान रखना होगा। भाषा सीखने की आयु में बालक किसी भी भाषा की ध्वनियों का उच्चारण सीख सकता है। किसी एक प्राणी या वस्तु के लिए अलग—अलग भाषाओं में अलग शब्दों का उपयोग होता है। उदाहरणार्थ जिसे हिन्दी में हाथी के नाम से जाना जाता है, उसी को अंग्रेजी में एलिफेंट के नाम से जाना जाता है। बालक में भाषा अर्जन की नैसर्गिक क्षमता होती है इसमें माला पिरोए हुए फूलों के समान शब्दों की श्रृखंला नहीं होती है।

बालक की अवस्था जब एक वर्ष की होती है, तब बोलना शुरू करता है और तीन वर्ष की आयु तक चार—पाँच शब्दों के व्याकरण सम्मत वाक्यों का उपयोग करने लगता है। चार वर्ष की आयु के बाद उसे अपनी भाषा के लिखित उपयोग वाले मिश्रित वाक्यों की संरचना करने लगता है। छः वर्ष की आयु तक अभिव्यक्ति की क्षमता सौ फीसदी होने लगती है।

संप्रेषण क्या है?

संप्रेषण के लिए अंग्रेजी भाषा में Communication शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसकी उत्पत्ति लैटिन शब्द Communis शब्द से हुई है, जिसका अर्थ—किसी विचार या तथ्य सूचनाओं को एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक इस प्रकार पहुँचाना कि वह उसे जान एवं समझ सकें। संप्रेषण एक ऐसी कला है, जिसके अंतर्गत विचारों, सूचनाओं, संदेशों एवं सुझावों का आदान प्रदान होता है। संप्रेषण एवं निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक दूसरे व्यक्ति को, एक समूह दूसरे समूह को भावनाओं, सूचनाओं का आदान प्रदान करना है।

प्रेषक ⟶ संदेश संप्रेषण ⟶ माध्यम ⟶ प्रतिपुष्टि ⟶

संप्रेषण मुख्यतः दो प्रकार का होता है—

1. शाब्दिक संप्रेषण
2. अशाब्दिक संप्रेषण

शाब्दिक संप्रेषणः—शाब्दिक संप्रेषण में हमेशा भाषा का प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक संप्रेषण दो प्रकार का होता है।

(अ) मौखिक संप्रेषण

(ब) लिखित संप्रेषण

मौखिक संप्रेषण एक ऐसा संप्रेषण होता है जिसमें हम मौखिक रूप से सूचनाओं का आदान—प्रदान करते हैं, इसमें संदेश भेजने वाला एवं ग्रहण करने वाला दोनों आमने—सामने होते हैं। इसमें टेलीफोन टी.वी. आदि के द्वारा चर्चा, परिचर्या, कहानी के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति की जाती है। यह अनौपचारिक होता है।

मानव एवं पशु संप्रेषण में अंतरः—

हम संप्रेषण के लिए अपने मुख तथा शरीर का भी उपयोग करते हैं, जैसे कि बंधे हुए हाथ हमारे रक्षात्मक होने को दर्शाते हैं। पशु बिना बोले संप्रेषण करते हैं, वस्तुतः उनके बिना बोले किया जाने वाला संप्रेषण हमारे संप्रेषण से काफी अधिक उन्नत होता है, रीढ़ वाले पशु मुख के हावभाव तथा शरीर मुद्राओं का मिलाकर उपयोग करते हैं। कोई हिंसक पशु अपने को बड़ा कर लेता है, पीछे तनकर बाल खड़े करके, पंख फैलाकर। हाथियों का संप्रेषण आपस में जुड़ी हुई सूंड एवं कानों को फड़फड़ाना आदि के द्वारा होता

है। जोर से पैर पटकने पर भूमि में ऐसी तरंगें उत्पन्न होती है, जो लगभग 20 मील तक जा सकती है। हाथियों के पैर खतरों के इन संकेतों को पहचान लेते हैं।

पशुओं का संचार प्रजाति तथा अंतरा प्रजाति दोनों होता है, जिस जीव के लिए वह संदेश भेजा जाता है, वह संचार के तरीके को समझ लेता है। जबकि मनुष्य में ऐसा नही होता है। लिखित भाषा ही हमारी एकमात्र विशेषताएं हैं।

पशु और मनुष्य के बीच अनेक भिन्नताएं हैं। इन भिन्नताओं में एक भिन्नता महत्वपूर्ण है कि मनुष्य को अपने पुण्यकर्मो और स्वश्रम से विद्या, धन व शक्ति जिस रूप में प्राप्त हो जाती है। वैसी प्राप्ति पशुओं को कभी नहीं होती है। मनुष्य सामान्यतः इन प्राप्तियों से लोक जीवन में सुख पाने के लिए इनका प्रयोग एक विशेष साधन के रूप में करता है।

मानव संप्रेषण में भाषाः–

मनुष्य में संचार क्षमता होती है, जो अन्य जानवरों में नहीं होती है, समय और स्थान जैसे पहलुओं को संप्रेषित करने में सक्षम होने के नाते कुछ ठोस उदाहरण थे। ऐसा कहा जाता है कि मनुष्य दूसरों से सूचना देने में सबसे आगे है। भाषा किसी व्यक्ति की संस्कृति को दूसरे में व्यक्त करने में मदद करती है। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के साथ संवाद करता है, तो भाषा उसे अपने विचारों को अधिक सटीक रूप से व्यक्त करने में मदद कर सकती है। और भाषा समाज के साथ अच्छे संबंध बनाने में मदद करती है, तो भाषा समाज के साथ अच्छे बनाने के लिए एक उपकरण है। मनुष्य के विचार भावनाएं, ज्ञान और सीखने को भाषा के माध्यम से व्यक्त किया जाता है।

पशु संप्रेषण में भाषाः–

भाषा को आमतौर पर एक संचार उपकरण के रूप में है जो अपनी भावनाओं विचारों को व्यक्त करने और उन्हें दुनियां को समझने में मदद करता है, यह एक विशेष समाज की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को परिभाषित करता है। यह भी महत्वपूर्ण है कि अन्य सभी जानवर भी संप्रेषण का उपयोग करके संवाद करते हैं, जो जन्मजात है।

पशु संचार में रचनात्मकता एवं लचीलापन का अभाव है। यह सच है कि जानवर सीमित संख्या में संचार संकेतों के साथ पैदा होते हैं और किसी भी तरह से उनका विस्तार नहीं कर सकते हैं। पशु संचार जैविक संचरण का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अलावा जब मानव भाषण की नकल करने की बात आती है, तो वैज्ञानिक ने साबित किया है कि कुछ तोते शोर पैदा करने में सक्षम हैं,जिन्हें मानव वाक्यों के रूप में सुना जाता है।

भाषा की विशेषताएंः–

भाषा के कारण ही विज्ञान, तकनीकी तथा अन्य क्षेत्रों में प्रगति हो सकी है। मानव इतिहास में दूसरी बड़ी क्रांति तब आई जब मनुष्य ने अपनी भाषा के लिए लिपि का अविष्कार किया। लिपि के विकास के बाद अपने अनुभवों एवं विचारों को भावी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रखना संभव हो सका।

वेदों की ऋचाएं शताब्दियों तक एक के बाद दूसरी पीढ़ी द्वारा कंठस्थ की जाती रही इस प्रकार उन्हें अपनी भावी पीढ़ियों के लिए मौखिक रूप से सुरक्षित रखना मुश्किल होगा, इसका अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है।

1. प्रत्येक भाषा का मानक रूप होता है।
2. भाषा संयोग से वियोगा अवस्था की ओर बढ़ती है।
3. भाषा व्यक्तिव के निर्माण में सहायक है ।
4. प्रत्येक भाषा की संरचना में भिन्नता होती है ।

1. भाषा सामाजिक संपत्ति है–

समाजिक व्यवहार, भाषा का मुख्य उद्देश्य है, हम भाषा के सहारे अकेले में सोचते या चिंतन करते हैं। परन्तु वह भाषा सामान्य यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों पर आधारित भाषा से भिन्न होती है। भाषा का विकास एवं अर्जन समाज में होता है, इसका प्रयोग भी समाज में ही होता है, यह सर्वविदित है कि जो बालक जिस समाज में जन्म लेता है, पलता है, वह उसी समाज की भाषा को सीखता है।

2. भाषा पैतृक संपत्ति नहीं है–

कुछ लोगों की मान्यता है कि पुत्र की पैतृक सम्पत्ति (घर,धन,बाग) के समान भाषा की भी प्राप्ति होती है, अतः उनके अनुसार भाषा पैतृक सम्पत्ति है, किन्तु यह पूर्णतः असत्य है कि यदि किसी भारतीय

बच्चे को 1–2 वर्ष की अवस्था (शिशु काल) में किसी विदेशी भाषा भाषी के लोगों के साथ कर दिया जाये तो वह उनकी ही भाषा बोलने लगेगा। यदि भाषा पैतृक सम्पत्ति होती है तो बालक बोलने लायक होने पर अपने माता–पिता की ही भाषा बोलता, परन्तु ऐसा नहीं होता है।

3. भाषा व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है–

भाषा सामाजिक सम्पत्ति है, भाषा का निर्माण भी समाज के द्वारा होता है। कोई भी भाषा प्रेमी भाषा में एक शब्द को जोड़ा या उसमें से एक शब्द को घटा भी नहीं सकता इससे स्पष्ट है कि भाषा में अर्जित सम्पत्ति है।

4. भाषा सर्वव्यापक है–

यह सर्वमान्य है कि विश्व के समस्त कार्यो का संपादक प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाषा के ही माध्यम से होता है। व्यक्ति–व्यक्ति का संबंध या व्यक्ति–समाज का संबंध ।

भर्तृहरि ने वाक्य पदीय में इस तथ्य को स्पष्ट किया है–

न सोडस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।

अनुबिद्धमिव ज्ञानं सर्व शब्देन भासते। (वाक्य पदीय) 123–24

मनुष्य के मनन–चिंतन तथा भावाभिव्यक्ति का मूल माध्यम भाषा है यह भाषा की सर्वव्यापकता का प्रबल प्रमाण है।

5. भाषा मानकीकरण है–

भाषा परिवर्तशील है, यही कारण है कि प्रत्येक भाषा एक युग के पश्चात् दूसरे युग में पहुँचकर पर्याप्त भिन्न हो जाती है, और इस परिवर्तन के कारण भाषा में विविधता आ जाती है। यदि भाषा परिवर्तन पर बिल्कुल नियंत्रण न रखा जाये तो तीव्रगति के परिवर्तन के परिणाम स्वरूप कुछ ही दिनों में भाषा का रूप अबोध्य हो जायेगा, किन्तु भाषा में बोधगम्यता बनाए रखने के लिए स्थिरीकरण आवश्यक है। इस प्रकार की स्थिरता से भाषा का मानकीकरण हो जाता है।

भाषा की संरचना–

जिस प्रकार भवन की रचना में ईट, सीमेंट, लोहा, शक्ति अर्थात मजदूर और कारीगर की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार भाषा संरचना में ध्वनि, शब्द पद, वाक्य, प्रोत्ति और अर्थ की अपनी–अपनी भूमिका होती है। भारतीय परम्परा में संस्कृत कालीन संरचनात्मक व्याकरण में पाणिनी का व्याकरण सबसे प्रमुख है।

भाषा की संरचना से तात्पर्य है–भाषा की ईकाइयाँ और उनके बीच प्राप्त संबंध। संरचना एक अमूर्त अवधारणा है भाषा की इकाईयों में दो प्रकार के संबंध प्राप्त होते हैं।

(क) विन्यासक्रमी संबंध

(ख) सहचारक्रमी संबंध

विन्यासक्रमी संबंध

यह संबंध भाषा की क्रमिक इकाईयों का अपनी पूर्व और बाद की इकाईयों से होता है, यह सभी भाषिक स्तरों पर प्राप्त होता है।

सहचारक्रमी संबंध

यह एक संरचना में आई ईकाई के स्थान पर आ सकने वाली इकाईयों के बीच होता है उदाहरण के लिए पानी शब्द में "प" की जगह "ब द न" आदि आ सकते हैं। पानी शब्द पानी इसलिये है, क्योकि वह दानी,पानी, नानी नहीं है । यही बात अन्य वर्णो पर लागू होती है । ऐतिहासिक अध्ययन संरचानात्मक अध्ययन पर ही अमित है , किसी भाषा के काल, क्रमिक विकास को समझने के लिये सभी कालक्रमों में उस भाषा के संरचानात्मक स्वरूप का ज्ञान आवश्यक है ।

भाषा की संरचना के दो पक्ष है – 1. अभिव्यक्ति संरचना 2. कथ्य संरचना । पत्येक भाषित ईकाई में दोनों पक्ष होते है । अभिव्यक्ति संरचना के दो रूप है– मौखिक एवं लिखित ।

भाषा भावों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, मनुष्य पशुओं से इसलिये श्रेष्ठ है , क्योंकि उस के पास अपनी अभिव्यक्ति व्यक्त करने का माध्यम है , अभिव्यक्ति के लिये एक ऐसी भाषा है जिसे लोग समझ सकते है ।

भाषा बौद्रिक क्षमता को भी अभिव्यक्त करती है ं

1. **इच्छाओं और आवश्यकताओं की संतुष्टि :–** भाषा व्यक्ति को अपनी आवश्यकता, इच्छा, पीडा, अथवा मनोभाव दूसरे के समक्ष व्यक्त करने की क्षमता प्रदान करती है , जिससे दूसरा व्यक्ति सरलता से असकी आवश्यकताओं को समझकर तत्संबंधी समाधान प्रदान करता है ।
2. **ध्यान खींचने के लियेः–** सभी बालक अपनी ओर लोगों का ध्यान खीचना चाहतें है, इसलिये वे अभिभवकों से प्रश्न पूछकर समस्या का समाधान करते है, भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बालक अपनी ओर ध्यान खींचकर समस्या का समाधान करता है ।
3. **थ्वचार विनिमयः–** का सरलतम एवं सर्वोच्तम साधन के रूप में बालक जन्म के कुछ समय पश्चात भाषा सीखने लगता है , यह भाषा वह अनुकरण द्वारा सीखता है वह किसी अध्यापक द्वारा पही बल्कि विचार विनिमय द्वारा सीखता है ।
4. **समाजिक संबंध के लिये :–** भाषा के माध्यम से ही कोई व्यक्ति समाज के साथ तालमेल विसकित कर पाता है जो बालक समाज से कम अंतक्रिया करते है उनका पर्याप्त सामाजिक विकास नहीं हो पाता है, भाषा सामाजिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण कडी का कार्य करती है ।
5. **ज्ञान प्राप्ति के प्रमुख साधन के रूप में :–** भाषा के माध्यम से ही एक पीडी तक सौपते है ।
6. **समाजिक मूल्यांकन के लिये :–** बालक समाज के लोंगों के साथ कि तरह बात करता है । कैसे बोलता है इस प्रश्नों के उत्तर से उसका सामजिक मूल्यांकन होता है भाषा सामाजिक मूल्यांकन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।
7. **व्यक्तित्व निर्माण के लिये :–** भाषा व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक होती है व्यक्ति अपनी छिपि प्रतिभा को भाषा के माध्यम से व्यक्त करता है विचारो एवं भावों को सफलतार्पूक व्यक्त करता है
8. **शैक्षिक उपलब्धि के महत्व में :–** भाषा का संबंध बौधिक क्षमता से है ,यदि बालक भाषा के माध्यकम से अपने विचारों को व्यक्त करने में असमर्थ है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि भी पर्याप्त नहीं होती है।
9. **दूसरों के विचारों को प्रभावित करने के लिये :–** भाषा प्रिय, मधुर एवं ओजस्वी होती है , अपने समूह, परिवार एवं समाज के व्यक्तियों को प्रभावित करने की क्षमता रखती है, लोग उन्ही को महत्व देते है , जिनका भाषा व्यवहार प्रभावपूर्ण होता है।
10. **साहित्य, कला, संस्कृति एवं सभ्यता का विकास करनें मेंः–** भाषा के द्वारा व्यक्ति अपने समाज के आचार–व्यवहार तथा विशिष्ट जीवन शैली से अवगत होते है, और नवीन रचना का सृजन कर भाषा वनाते है ।

सार संक्षेप :–

भाषा भावों एवं विचारें के आदान प्रदान करने का मुख्य साधन है । भाषा एक सामाजिक क्रिया है, यह वक्ता एवं श्रोता दोनों के विनिमय का साधन है । भाषर की उत्पक्ति उस काल से है, जब मानव ने बोलना आंरभ किया भाषा समुदाय के सदस्यों को जोडकर सामुहिक शक्ति प्रदान करती है भाषा मनुष्य को अन्य पशुओं से अलग करती है, पशु केवल वर्तमान की घटना को अभिव्यक्त करने के लिये संप्रेषण का उपयोग करत है । मानव एंव पशु संप्रेषण में काफी अतंर है । मनुष्य अपने संप्रेषण के लिये मुख का उपयोग करते है पशु अपनी संप्रेषण के लिये हावभाव, शरीर की मुद्रओं , पंखों का उपयोग करते है । इनमें भाषा ही एस ऐसा माध्यम जो संप्रेषण में मदद करता है भाषा के द्वारा ही इच्छाओं एवं आवश्यकताओं की संतुष्टि, विचार विनिमय एवं ज्ञान प्प्ति के मुख्य साधन के रूप में जाना जाता है । भाषा संयोग से वियोगवस्था की ओर बढती है । प्रत्येक भाषा का मानक रूप होता है, भाषा में शाब्दिक एवं अशब्दिक संप्रेषण है, जिसके द्वारा एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को ,समूहों को भावनाओं एवं सूचनाओं का आदान–प्रदान है ।

1.10 प्रगति की जॉच

- भाषा का अर्थ एवं परिभाषा दीजिये ।
- मनव एवं पशु संप्रेषण में अंतर लिखिये ।

- भाषा के 3 कार्य लिखियें ।

1.11 चर्चा और स्पष्टीकरण :– इस ईकाई के अध्ययन के बाद हो सकता है, आप कुछ बिन्दुओं पर करना चाहें , वह अन्य के बारे में कुछ स्पष्टीकरण चाहें कृप्या उन्हें नीचे नोट कीजियें ।

1.11.1 चर्चा के बिन्दु

1.11.2 स्पष्टीकरण के बिन्दु

∞ संदर्भ :– जैन, दीपचंद एवं कैलाश तिवारी (1972) हिंदी और उसकी विविध बोलियां : म.प्र हिंदी ग्रंथ अकादमी भोपाल , शर्मा, लक्ष्मी नारायणः हिंदी का विवरणत्मक व्याकरण– विश्व पुस्तक मंदिर

बैस्टन, रामः सेल्स – एन इन्ट्रोउक्शन टु दि स्टडी आगरा आफ सोशल विलेशन्स 1965 (टैविस्टाक)

डेविस के : ह्यूमन सोसाइटी, 1948 (मैकेनिकल, न्यूयार्क)

थ्तवारी पुरूषोतम लात (1992) हिंदी शिक्षण , राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर ।

DELED-03

[illegible] (Block) – I

[illegible] (Unit) : II [illegible]

(Language Diversity and Multilingualism)

[illegible] (Structure of Unit)

1.1 [illegible] (Introduction)

1.2 [illegible] (Objectives)

1.3 [illegible] (Constitutional Provisions about Language)

1.4 [illegible]: [illegible], [illegible], [illegible] (Multilingual Diversity in India: Socio, Political, Economic Power Associated with Languages)

1.5 [illegible] (Critical Understanding of Notions of 'Standard' and 'Non Standard' forms of Language)

1.6 [illegible] (Relationship of Language with Society and Life)

1.7 [illegible] (Summary)

1.8 [illegible] (Assignment)

1.9 [illegible] (References)

1.1 [illegible]:-

[illegible], [illegible] (Monolingual) [illegible], [illegible] (Monolingual Habitats) [illegible], [illegible], [illegible] I

[illegible], [illegible], [illegible]; [illegible], [illegible]

1.2 [illegible] (Objectives)

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible] , [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

1.3 [illegible] (Constitutional Provisions about Language)

[illegible] 29 [illegible] "[illegible], [illegible]" [illegible] " [illegible] 343 [illegible], [illegible], [illegible]

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ 15 □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□

□□□□□□□□□ 346 □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ "□□□□□□□" □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□, □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□□□□□□ 347 □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□

□□□□□□□□□ 350B □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ 22 □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□:

1. □□□□□□□ (Assamese)
2. □□□□□□□ (Bengali)
3. □□□□□□□□ (Gujarati)
4. □□□□□□□ (Hindi)
5. □□□□□□□ (Kannada)
6. □□□□□□□□ (Kashmiri)
7. □□□□□□□ (Konkani)
8. □□□□□□□ (Malyalam)
9. □□□□□□□□ (Manipuri)
10. □□□□□□ (Marathi)
11. □□□□□□□ (Nepali)
12. □□□□□□ (Oriya)
13. □□□□□□□ (Punjabi)
14. □□□□□□□□ (Sanskrit)
15. □□□□□□ (Sindhi)
16. □□□□□□ (Tamil)
17. □□□□□□□ (Telugu)
18. □□□□□□ (Urdu)
19. □□□□□ (Bodo)
20. □□□□□□□ (Santhali)
21. □□□□□□□ (Maithili)
22. □□□□□□ (Dogri)

□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□

- □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ 2 □□□□□, 11 □□□□ □□□□ 18 □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ 26 □□□□□□, 1950 □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□
- □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ 14/9/1949 □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□
- □□□□□□□□ □□ □□□□ 5 □□□□ 6 □□ □□□□□□: □□□□□□□□□ 120 □□□□ 210 □□□□ □□□□ □□□□ 17 □□ □□□□□□□□ 343, 344, 345, 346, 347, 348, 349, 350 □□□□ 351 □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ 22 □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□-8 □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□-
- □□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□□□, □□□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□□, □□□□□□, □□□□□□, □□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□□
- □□ 1967 □□□□ 21□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ 8□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ 1992 □□□□ 71□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ 8□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ 2003 □□□□ 92□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ 8□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

- [illegible] 120 [illegible]
- [illegible] 120 [illegible] (1) [illegible] -17 [illegible] 348 [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
- [illegible] 120 [illegible] (2) [illegible], [illegible]- [illegible]

[illegible]

- [illegible] 210 [illegible]
- [illegible] 210 [illegible] (1) [illegible] -17 [illegible] 348 [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
- [illegible] 210 [illegible] (2) [illegible], [illegible]- [illegible]

[illegible]

- [illegible] -17 [illegible] 343 [illegible] 351 [illegible]
- [illegible] 343 [illegible]
- [illegible] 343 [illegible] (1) [illegible] 343 [illegible] (2) [illegible] ([illegible] 26 [illegible], 1965) [illegible] ([illegible] 26 [illegible], 1965 [illegible], [illegible])
- [illegible] 343 [illegible] (2) [illegible] 26 [illegible], 1965 [illegible]

[illegible] 343. [illegible]--

- (1) [illegible], [illegible]
- (2) [illegible] (1) [illegible], [illegible] :
- [illegible], [illegible], [illegible]
- (3) [illegible], [illegible], [illegible]

- ([illegible]) [illegible], [illegible]
- ([illegible]) [illegible],
- [illegible]

[illegible] **344.** [illegible]--

- (1) [illegible], [illegible], [illegible], [illegible]
- (2) [illegible]--
- ([illegible]) [illegible],
- ([illegible]) [illegible],
- ([illegible]) [illegible] 348 [illegible],
- ([illegible]) [illegible],
- ([illegible]) [illegible], [illegible]
- (3) [illegible] (2) [illegible], [illegible], [illegible]
- (4) [illegible]
- (5) [illegible] (1)[illegible]
- (6) [illegible] 343 [illegible], [illegible] (5) [illegible]

  [illegible]

  [illegible] **345.** [illegible]--
- [illegible] 346 [illegible] 347 [illegible], [illegible]-[illegible], [illegible], [illegible]
- [illegible]-[illegible], [illegible], [illegible]

  [illegible] **346.** [illegible]--
- [illegible], [illegible] :
- [illegible]

[illegible] **347.** [illegible]--

[illegible]

[illegible] 3 - [illegible]

[illegible] 348. [illegible]--

- (1) [illegible]--
- ([illegible]) [illegible],
- ([illegible]) (i) [illegible],
- (ii) [illegible]
- (iii) [illegible]
- (2) [illegible](1) [illegible] ([illegible]) [illegible]
- [illegible]
- (3) [illegible] (1) [illegible] ([illegible]) [illegible] (iv) [illegible]

[illegible] 349. [illegible]--

[illegible] 348 [illegible] (1) [illegible] 344 [illegible] (1) [illegible] (4) [illegible]

[illegible]

[illegible] 350 [illegible]. [illegible]--

[illegible]

[illegible] 350 [illegible]. [illegible]--

- (1) [illegible]
- (2) [illegible],

[illegible]

[illegible] 351. [illegible]--

[illegible]

1.4 [illegible]: [illegible], [illegible], [illegible] (Multilingual Diversity in India: Socio, Political, Economic Power Associated with Languages)

[illegible]

[illegible] (1966) [illegible] 1 [illegible]

[illegible] 3 [illegible]

[illegible]

[illegible] 1779 [illegible]

[illegible] 4 [illegible]

[illegible]?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

“… ([illegible]) [illegible]”

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] :-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] (1989) [illegible]

[illegible] "… [illegible]," [illegible] "[illegible]

[illegible]

[illegible] "[illegible]"

[illegible]

[illegible] 6 [illegible] ([illegible]) [illegible]

[illegible]

… [illegible]

[illegible] […] [illegible]

[illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible] [illegible]) [illegible]

[illegible]

[illegible] 581 [illegible]

[illegible] ([illegible] 2002) [illegible]

[illegible]

[illegible] "[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ([illegible] 20 [illegible] 10.7%) [illegible] ([illegible] 8.4 [illegible] 8.2%) [illegible] 3 [illegible] 5% [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 10% [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]) [illegible] [[illegible]] [illegible] "[illegible]

[illegible] ([illegible]) [illegible] "[illegible]" [illegible] "[illegible]" [illegible] [69] [illegible] "[illegible] ([illegible]) [illegible]" ([69] 29)

[illegible] 1990 [illegible] "[illegible]… [illegible] "(cf. [43]: 404) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ... [[] [illegible] [] [illegible] ([illegible] [illegible])

[illegible]

[illegible] [74] [illegible]: "... [illegible] "[illegible]

[illegible] "[illegible] '[illegible] '[illegible] standards [illegible]' [illegible] "[illegible] [76] [illegible] "[illegible]" [illegible]

(1) [illegible]

(2) [illegible]

(3) [illegible]

(4) [illegible]

(5)) [illegible]

(6) [illegible]

(7) [illegible]

(8) [illegible]

[illegible]

[illegible]:

[illegible]

[illegible]

[illegible] (SARS) [illegible] 2003 [79] [illegible] [used] [illegible] [80]

[illegible]

1.5 [illegible] (Critical Understanding of Notions of ‘Standard’ and ‘Non Standard’ forms of Language)

[illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]

- (□) [illegible]
  - ‘[illegible]’ [illegible]

[illegible]

1.6

1.7

(1)

(2)

□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□

(3) □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□

(4) □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□

(5) □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□

(6) □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

(7) □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□

(8) □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□

1 .8 □□□□□□ □□□□□□ (Assignment):

Q 1 □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ |

Q 2 □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ |

Q 3 □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ ?

Q 4 □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ |

Q 5 □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ , □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□|

1.9 □□□□□□□ (Summary):-

□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□-□□□□□□□ (□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□) □□ □□□□-□□□□□□□ (□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□) □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

□□□□□□□□ **(References)**

- □□□□□, □□□□ □□, □□ (2007)□ "□□□□□□□" □□□: □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□: □□□□ □□ □□□□□□□□
- □□□□□□□□, □□□□□ (2007)□ "□□□□□□□□□□□□": □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ .: □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□
- □□□□□□□□,□□□ (1995)□ □□□□□□□□□□□ □□□□,□□□□□□□□□ □□ □□ .: □□□□□□□ □□□□□□
- □□□□□□□□,□□□ (2007)□ "□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□,□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ "□□: □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□,□□ □□□□□□
- □□□ □□□□□□,□□□□□□□□□: □□□□ □□ □□□□□□□□ □
- □□□□□□, I (2006)□ "□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ "□□: □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ 8. □□□□□□□□□ □□ □□□: □□□□□□□□□ □□□□□□□ □
- □□□□□, □□□□□ (2009)□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□: □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□
- □□□□□□□,□□□ □□□ (1997)□ "□□□□□□□□" □□□: □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□: □□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□
- www.mhrd.in
- www.tripurauni.in
- www.wiki.com
- www.ncert.nic.in
- www.eklavya.org
- http://shodhganga.inflibnet.ac.in

भाषायी समझ एवं भाषा का विकास
खण्ड 1– भाषा की प्रकृति
इकाई 3– भाषा कैसे प्राप्त एवं विकसित होती है।

3.0 परिचय

3.1 उद्देश्य

3.2 भाषा एवं सामाजिक अंतः क्रिया

3.2.1 द्विभाषिता /बहुभाषिता

3.3 भाषा मन एवं मस्तिष्क

3.3.1 भाषा तथा मन

3.3.2 भाषा तथा मस्तिष्क

3.4 भाषा विकास की प्रक्रिया

3.4.1 भाषा सीखने की प्रक्रिया

3.4.2 भाषा और विकास

3.4.3 भाषा विकास का क्रम

3.4.4 भाषा को प्रभावित करने वाले कारक

3.5 व्यगोत्सकी और भाषा अर्जन

3.6 इकाई सारांश

3.7 नियत कार्य

3.8 चर्चा एंव स्पष्टीकरण के बिन्दु

3.9 संदर्भ ग्रंथ

3.0 परिचय –

यह सर्वविदित तथ्य है कि कोई भी भाषा अनुसरण से सीखी जाती है। लेकिन इसका मतलब यह बिलकुल नहीं कि भाषा को सीखने की जरूरत ही नहीं। इसका मूल कारण यह है कि परिवारिक वातावरण में सीखी हुई भाषा पूर्ण रूप से शुद्ध रूप से ,व्याकरण सम्मत नहीं होती है। भावाभिव्यक्ति के लिए भाषा को शुद्ध , व्याकरण सम्मत वह परिमार्जित होना आवश्यक है। अतः बच्चे के विकास के लिए भाषा की शिक्षा आवश्यक है। भाषा की शिक्षा से तात्पर्य है कि उसका मौखिक एवं लिखित ज्ञान । बालक के सुनने , बोलने, पढ़ने तथा लिखने के कौशल को विकसित करना भाषा शिक्षण के मुख्य उद्देश्य है।

मातृभाषा का बालकों के जीवन के साथ बहुत ही गहरा संबंध है। मातृभाषा के अध्ययन से बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है। मातृभाषा की शिक्षा के द्वारा बच्चों में आत्म प्रकाशन की क्षमता का आश्चर्य जनक रूप से विकास होता है । साथ ही दूसरे के प्रकाशित भावों और विचारों को समझने की क्षमता भी प्राप्त होती है। मात्भाषा के माध्यम से आत्म प्रकाशन सर्वोत्तम ढ़ग से हो सकता है। आत्म प्रकाशन में सक्षम तथा विचार ग्रहण में प्रवीण बच्चों के अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। यह आत्म विश्वास का गुण व्यक्तित्व को प्रशस्त बनाने एंव विकसित करने के लिए बहुत ही आवश्यक है। इस गुण से सम्पन्न बच्चे अपने विचारों को निर्भीक हो कर प्रकट करते है। तथा उनके अन्दर के सुसुप्त नैसर्गिक गुणों का सुन्दर ढंग से विकास होता है। इतना ही नहीं, अपनी तथा अन्य जातियों की सभ्यता एवं संस्कृति का ज्ञान तो भाषा के माध्यम से ही होता है। मातृभाषा इस दिशा में सहायक तो होती ही है। साथ–साथ समाज सम्मत आचरण को समझने में भी सहायक होती है।

भाषा एक ध्वनि संकेत है। जिसके द्वारा मानव अपने भावों और विचारों का विनिमय करता है। भाषा सामाजिक मानव द्वारा एक अर्जित उपलब्धि है। यह अर्जित उपलब्धि पीढ़ी दर पीढ़ी सम्प्रेषित संवर्द्धित एंव परिष्कृत होती रहती है।`

भाषा विचार अभिव्यक्ति की संवाहिका होती है। यह मानव मन के भावों को व्यक्त करती है। मानव की संवेदना , हास्य व्यंग आदि भाव इसके द्वारा स्पष्ट होते है। मानव की भाषा और विचार एक सिक्के के दो पहलू है। मानव जब भी अपने भाव को अभिव्यक्त करना चाहेगा उसे भाषा माध्यम की जरूरत महसूस होगी। दूसरी और मानव जब भी भाषा का प्रयोग करेगा उसके मनो भाव स्पष्ट होगे। इस तरह वे एक –दूसरे के पूरक है। भाषा परम्परा से सम्बन्धित होता है। एक पीढ़ी अपनी भाषा को आगे आने वाली पीढी को सौंपती है। इस प्रकार भाषा परम्परागत रूप आत्मसात कर लेती है। जिसके कारण भाषा के परिवर्तित रूप से भी उसके मूलरूप के दर्शन होते है। मातृभाषा वह शब्द होता है जो बालक अपनी माँ की गोद से सीखता है एवं उस शब्द को उस समय अपना साथी बनाता है। मातृभाषा के माध्यम से बालक को शिक्षा देना काफी सरल एंव आसान होता है। क्योंकि बालक उस भाषा को पूर्ण तरीके से जानता एवं समझता हैं । मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्रभावोत्पादक ओर स्थायी होती है। शिक्षक जितने सरल तथा प्रभावोत्पादक रूप से अपने विचारों को व्यक्त करता है। छात्र भी अपनी ही सुगमता और रूचि से उन्हें ग्रहण करता है।

शिक्षण सिद्धांत सभी विषयो के समान होते है। प्रत्येक विषय के शिक्षण में बच्ची की रूचि, रूझान एवं योग्यता को दयान में रखना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षण सूत्रों का अनुसरण लाभदायक होता हे। लेकिन मातृभाषा के शिक्षण में एक विशेष क्रम का भी काफी ज्यादा ध्यान रखना पड़ता है। बच्चे जिस क्रम में मातृभाषा सीखते है उसी क्रम में उसका शिक्षण भी लाभदायक होता है।

प्राथमिक विद्यालय के बच्चों को पढ़ाते समय अध्यापकों को विशेष ध्यान रखना होता है। प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को भाषा पढ़ाते समय उन्हें किस प्रकार पाठन सिखाए तथ किस प्रकार विचारों को व्यक्त करे यह सब बताना बहुत आवश्यक है। इसी प्रकार बच्चों को गठीत पढ़ातें समय बच्चों को उनके दैनिक जीवन के कार्यकलापों में सहायता लेनी होगी। प्राथमिक विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा ,

सामाजिक शिक्षा तथा कला की शिक्षा भी मनोवैज्ञानिक विधियों से देनी होती है। इसीलिए प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा को रूचिकर बनाना पड़ता है तथा बच्चों के व्यक्तिगत स्तर को देखकर शिक्षा देनी होती है।

3.1 उद्देश्य –

इस इकाई को पूरा पढ़ने के बाद आप सक्षम हो सकेगेः–

- भाषा एंव सामाजिक अंतः क्रिया को समझने में,
- भाषा विकास की प्रक्रिया को समझने में,
- भाषा मन एंव मस्तिष्क के बीच संबंध को समझने में,
- बायगोट्स्की एंव भाषा अर्जन को समझ सकेंगे।

भाषा और सामाजिक अंतः क्रिया–

समाज ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो आम तौर पर किसी खास उद्देश्यों के लिए साथ जुडे होते है। उद्देश्य चाहे जो भी हो, निःसंदेह भाषा का प्रयोग मनुष्य जाति का कए अभिन्न अंग है। वस्तुतः , भाषा का सही या समुचित प्रयोग न करने से समाज में व्यक्ति को स्थिति प्रभावित हो सकती है और यहां तक कि इसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व को भी बदल सकता है।

भाषा समाज के बाहर न तो विधमान रह सकती है और न ही विकसित हो सकती हे संगीत के लिए गीतों का जो महत्व है वहीं समाज के लिए भाषा का है। दोनों के बीच अंतः निर्भरता का संबंध है। यदि हम समाज पर भाषा के प्रभाव और भाषा पर समाज के प्रभाव की बात नही करते तो इन दोनों के बीच के संबंध की आधी अधूरी तस्वीर ही हमारे सामने आएगी। भाषा विज्ञान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शाखा समाज भाषा विज्ञान के भाषा वैज्ञानिक का मुख्य सरोकार , भाषा और समाज के बीच के जटिल संबंधों की विवेचना करना है।

समाज भाषा वैज्ञानिक भाषा के परिवर्तनशील स्वरूप की समीक्षा करते है। उनका यह मानना है कि भाषा स्थिर तत्व (वस्तु) नही है बल्कि यह गतिशील है और परिवर्तन के अधीन है अर्थात परिवर्तित होती रहती है । भाषा संबंधी परिवर्तनों की जांच पड़ताल किसी भी स्तर पर की जा सकती हे–जैसे, ध्वनि ग्राम, रूपात्मक, वाक्यरचनात्मक , अर्थसंबंधी अथवा वार्तालाप संबंधी । परिवर्तन कई कारणों से हो सकते है जैसे कि भौगोलिक अलगाव, लिंग , आयु, शिक्षा, सामाजिक वग, जाति इत्यादि अथवा शैली और सूचकों में अंतर के कारण।

समाज भाषा विज्ञान में सामाजिक संदर्भ को सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता हे। अमेरिका के सापेक्षिक रूप से सजातीय समाज का समाज भाषा वैज्ञानिक यथार्थ भारत की विजातीयता से काफी अलग है। यह तथ्य कि भारत में 1,652 भाषाएँ बोली जाती है यह मानने का अपने आप में ही एक पर्याप्त कारण है कि यहां पर विविधता बड़ी मात्रा में व्याप्त है। परंतु इस विविधता और भाषायी परिवर्तन के बावजूद यहां पर एक प्रकार की आधारभूत एकता दिखाई देती है, जिसके कारण संप्रेषण बहुत आसानी से हो जाता हे। भारत में किसी व्यक्ति के लिए अनेक भाषा पहचानना । कोई असामान्य बात नहीं है। उदाहरणार्थ हो सकता है कि दिल्ली में कोई गुजराती बोलने वाला व्यक्ति घर पर अपने परिवार के सदस्यों के साथ गुजराती में बात करता हो, अपने दफ्तर में अंग्रेजी में, दोस्तों के साथ हिंदी में और किसी अन्य परिवेश में किसी और दूसरी भाषा में बात करता हो।

यह याद रखना आवश्यक है कि प्रत्येक सामाजिक संदर्भ (परिवेश) की समीक्षा उसके अपने पूर्ण एंव वैयक्तिक अधिकार द्वारा की जानी चाहिएं इससे यह भी पता चलता है कि भारत मुख्यतः एक बहुभाषी देश है।

3.2.1 द्विभाषिता/बहुभाषिता

भारत में आधारभूत द्विभाषिकता की दीर्घ परंपरा रही है। एक भारतीय के यप में शायद आप सभी लोग इस तथ्य को बिना प्रमाण के मान लेते हे, परंतु यदि आप यह समझ ले कि द्विभाषिकता क्या है, तो इससे आपकों अपने समाज एंव अपने शिक्षार्थी दोनों को बेहतर ढ़ंग से समझने में मदद मिलेगी। द्विभाषिकता का अर्थ है एक से अधिक भाषा के प्रयोग में निपुणता । कुछ समय पहले तक यह माना जाता था । कि एकभाषिकता अथवा एक भाषा का प्रयोग विश्व के अधिकांश भागों में (विशेष रूप से विकासशील देशों में)सामान्य नियम था और द्विभाषिकता एक प्रकार का पथांतरण अथ्वा असामान्य तथ्य था। तथापि, हाल ही में, एकभाषी लोगो सहित अनिवार्य रूप से द्विभाषी है क्योंकि यहां भी जहां यह माना जा रहा हो कि कोई व्यक्ति केवल एक भाषा का प्रयोग कर रहा है वह उसी भाषा की अनेक शैलियों, सूचकों और बोलियों का प्रयोग और नियंत्रण कर रहा होता है।
द्विभाषिकता शब्द का प्रयोग उन स्थितियों का उल्लेख करने के लिए किया जाता है जहां दो या अधिक भिन्न भाषाएं सम्मिलित है। वस्तुतः कुछ लोग द्विभाषिकता शब्द का प्रयोग 'दो भाषा' वाली स्थिति के लिए करना पसंद करते है और जहां दो से अधिक भाषाएं शामिल हो उन स्थितियों के लिए वे बहुभाषिकता शब्द का प्रयोग करते है। तथापि 'द्विभाषिकता' शब्द अब उन सभी स्थितियों का उल्लेख करने के लिए एक मानक व्याख्या शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है जहां दो या अधिक भाषाएं सम्मिलित है।

3.3 भाषा, मन तथा मस्तिष्क–

भाषा दैनिक सांसारिक कार्यों से लेकर हमारे अत्याधिक जटिल भावों को प्रकट करने के लिए मानवीय कार्यकलापों का एक मूल अंश हैं यह बहुत पहले ही स्वीकार कर लिया गया था कि मस्तिष्क ही मनुष्य की भाषा व जानकारी का स्त्रोत है। इस अर्न्तसंबंधीय जानकारी के कारण मानसिक कार्यप्रणालियों के अन्वेषण का एक ढंग भाषा अन्वेषण द्वारा भी किया जाता है।
जिन धारणाओं का ज्ञान हमारे आस–पास से हमें मिलता है, उसे भाषा द्वारा ही प्रकट किया जाता है।

3.3. भाषा तथा मन

भाषा तथा मन के अध्ययन का उद्देश्य , भाषा के संदर्भ में मन की कार्यप्रणाली का खाका खींचना है। भाषा तथा मस्तिष्क का अध्ययन भिन्न–भिन्न है क्योंकि यह अपनी उपलब्धियेां को भौतिक वास्तविकता से संबंधित नही करता । चूँकि मानसिक संरचनाओं तथा संबंधों को निश्चय तौर पर जाना नहीं जा सकता इसीलिए अन्वेषक के परिकल्पनाएँ पेश करते है। जो खंडित आधारों पर टिकी है।

भाषा व मन का अध्ययन करते समय अन्वेषक जिन पर ध्यान देते हे। वे है–संग्रह, समझ /बोध , प्रस्तूति तथा भाषा अर्जनं मानव मन ाके हमारे जीवन का कार्यपालक माना गया है। जो

हमारी क्रियाओं का मार्गदर्शन करता है। यह हमारी स्मृति का भंडार है, जो ज्ञान को आगे प्रयोग करने के लिए पकड़ कर रखता है।

1.स्मृति किस प्रकार संगठित रहती है—स्मृति की संरचना सन् 1968 में रिचर्ड एटकिनसन तथा रिचर्ड शिफरिन ने मानवीय स्मृति के तीन पदो वाले मॉडल का सुझाव दिया था।

क. संवेदनात्मक स्मृति
ख. छोटी अवधि वाली स्मृति (एस.टी.एम)
ग. लंबी अवधि वाली ,स्मृति (एस.टी.एम)

हमारे सभी संवेदनीय भाव पहले संवेदात्मक स्मृति में रखे जाते है। स्मृति की इस प्रणाली में अत्यधिक सूचनाएँ रहती है, लेकिन यह कुछ ही क्षणों में समाप्त हो जाती है। संवेदनात्मक स्मृति से जो सूचनाएं खो जाती है वे हमेशा के लिए खो जाती है। लेकिन इन सूचनाओं का कुछ भाग छोटी अवधि वाली याददाश्त मे सीानांतरित हो जाता हैं छोटी अवधि वाली स्मृति में भंडारण के लिए सीमित क्षमता होती है। नई सूचनाएँ पुरानीसूचना के हटा देती है और जब ऐसा होता है, सोची हुई सूचना को भुला दिया जाता है लेकिन दोहराने से छोटी –अवधि वाली स्मृति में इन सूचनाओं को रोका जा सकता है। जब लंबे समय तक किसी सूचना को लंबी अवधि वाली स्मृति में रखा जाता है तो उसकी आम तौर पर लंबी अवधि की याददाश्त में तबदील होने की संभावन होती है। सुचनाएं हमेशा के लिए रहती है सूचनाओं के भंडारण गृह के अलावा भी एल.टी.एम. एक सूचना प्रसारण का क्रियाशील साधन हैं

सभी व्यवहारिक प्रयोजनों के लिए लंबी अवधि की स्मृति का सूचना भंडारण क्षेत्र असीमित है। यह बड़ी मात्रा में विभिन्न सूचनाओं ,विचारों, उनके बीच संबंधों के घटनाओं विशेष घटनाओं शब्दो तथा व्यवहारिक नियमों को सुरक्षित रखता है। चूँकि हमारील दिलचस्पी स्मृति में ज्ञान को पुनः प्रस्तुत करने में है इसलिए वह लंबी अवधि वाली स्मृति ही है, जो हमें यह सुविधा देती है।ळ यह वह स्थान जहाँ सूचना भंडारित होती है। यद्यपि इनका निरंतर उपयोग नही किया जाता , लेकिन जब चाहे इस सूचना तक पहूँचा जा सकता है। सबसे लंबी अवधि वाली स्मृति के बारे में यह है कि इसके अंदर सूचनाएं बहुत ही योजनाबद्ध ढंग से नियोजित होती है। इस ज्ञान के बढे हुए भंडार से ऐसा प्रतीत होता है कि विशेष सूचना एक बहुत ही अच्छे संरचना वाले अत्यधिक व्यवहारिक तंत्र में दर्ज होती हैं । यह धारणा बताती है कि नई सूचना जो छोटी अवधि वाली स्मृति में दाखिल होती है उसे नए तंत्र के सृजन की आवश्यकता नहीं होती है। बल्कि नई सूचना पहले से ही मौजूद संघटित संरचना में समायोजित हो जाती है।

2 प्रांसगिक तथा अर्थ संबंधी स्मृति

सन् 1972 में इन्डेल टुल्विंग ने सुझाया कि दो तरह के स्मृति प्रणालियां मौजूद है। प्रासंगिक स्मृति तथा संबंधी स्मृति। प्रांसगिक स्मृति, प्रसंगों तथा घटनाओं तथा उनके संबंधों के बारे में सूचनाएं एकत्रित करती है। प्रासंगिक स्मृति के बदलने तथा समाप्त होने की संभावना रहती है, लेकिन घटना, स्थान, लोग, बैठक जो पहले हो चुकी है आदि ज्ञान आधार का एक महत्वपूर्ण मूल तत्व है।

अर्थ संबंधी स्मृति –

शब्दों, धारणाओं, नियमों तथा अमूर्त चित्रण का भंडार गृह है। यह भाषा के प्रयोग के लिए आवश्यक है। इसमें संसार के बारे में आम जानकारी रहती है। जिसमें कोई सांसारिक तथा आत्म कथात्मक सूचनाएं नही होती। प्रासंगिक स्मृति के मुकाबले जहाँ पर सूचनाओं के खोने और भूलने की

संभावनाए ज्यादा है और जहाँ पर सूचनाएँ लगातार दाखिल होती रहती है, वही अर्थ संबंधी स्मृति आम तौर पर कम क्रियाशील होती हैं इसलिए उसके मुकाबले इस स्मृति में सूचनाएँ अधिक स्थायी होती है। अर्थ संबंधी स्मृति में से विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ तेजी से तथा प्रभावी ढंग से प्रचालित करने की हमारी योग्यता ही इस ओर इंगिम करती है। कि इस स्मृति प्रणाली में सूचनाएँ कितने अच्छे ढंग से व्यवस्थित होती है।

अर्थ संबंधी स्मृति व्यवस्था में जो धारणाए अर्थों की दृष्टि से नजदीक होती है। उनके आन्तरिक संयोजनों का समूहीकरण होता है। लेकिन संसार जो बहुत से पदार्थों से भरा हुआ है और वे पदार्थ संबंधों की एक जटिल प्रणाली द्वारा एक –दूसरे से जुडे है। उनको व्यवस्थित करने संबंधी कार्य को मानव स्मृति में उनके आन्तरिक निरूपण को निशचित नही किया जा सकता। परिणामस्वरूप इसको वर्णित करने के लिए बहुत सी कोशिश की गई है कि यह कैसे होता है लेकिन आज तक भी इस बारे में कोई एकमत नहीं है।

भाषा अर्जन

बच्चे भाषा कैसे सीखते है? बच्चे बात न करेन की अवस्था के बाद साधारण उच्चारण करने की अवस्था तक के कठिन कार्य को कैसे पूरा करते है। ? इसके अलावा बच्चों के विकास मे समानता होती है, भले ही वे दुनिया के किसी उठता है कि ऐसा क्यों होता है।

ऐसा विश्वास किया जाता है भाषा विकास तथा सामान्य ज्ञानात्मक विकास साधारण बच्चों में एक ही तरह से होता है। बच्चे जब एक या दो वर्ष के होते है, बच्चों में संसार तथा उसकी व्यवस्था को ठोस जानकारी नहीं होती। उनके विकास की यह प्रक्रिया वर्षों तक चलती है। इन विचारों की जटिलता उस क्रम को प्रभावित करती हुई प्रतीत होती है, जिसमें बच्चे विभिन्न संरचनाएँ ग्रहण करते है। कोई विचार जितना आसान होता है, उतनी शीघ्रता से बच्चे उसका मानचित्र अपनी भाषा में बनाकर उसके बारे में बात करते है। अधिक जटिल विचार बच्चों की भाषा तक पहुँचने में अधिक समय लेते है।

कुछ हद तक संज्ञान जटिलता ही अर्जन की गति को तय करती हुई प्रतीत होती है। बच्चे उन शब्दों तथा शब्दान्तों का प्रयोग नहीं करते है जिन शब्दों का उनकी स्वयं की दुनिया में कोई अर्थ नही है। तथापि बच्चे विभिन्न भाषाएँ अर्जित करते हुए उसी समय के आस–पास के विचारों के बारे में ही बात करते है। उदाहरण के लिए बच्चा 'एक या अधिक ' की बात तभी करता है जब बच्चों मे मन में एक या अधिक का विचार हो।

3.3.2 भाषा तथा मस्तिष्क

मस्तिष्क की संरचना – मस्तिष्क (दिमाग) में सेरीब्रम को दो भागों में बाँटा गया है, जिन्हें प्रमस्तिष्क शौलार्थ कहते है जो दोनों तरफ एक –एक होता है। यह दोनों गोलार्ध कारपस कोलारस द्वारा जुडे होते है जिसमें लगभग दो लाख तंत्रिका तंतु होते है जो मध्यरेखा के आस–पास चुन हुए वल्कल (Cortical Regione) स्थानों का आपस कारटिकल (Cortical) में जोड़तें है जिसमें दोनों गोलार्ध एक –दूसरे को सूचना देने में समर्थ हो सके।

अनुमस्तिष्क भी दो गोलार्ध में बटाँ हुआ होता है तथा यह प्रमस्तिष्क गोलार्धो के नीचे स्थित होता हैं । यह भी गतिप्रेरक कार्य गतिप्रेरण अधिगम, छोटे से छोटे क्रियाकलापों का मार्गदर्शन तथा संतुलन

पर नियंत्रण करता है। मस्तिष्क के आधार पर एक मस्तिष्क दंड रहता है जो मस्तिष्क को मेस्दंड (रीढ़ की हड्डी) से जोड़ता है। इसमें बहुत सी अंतःशारीरिक (Visceral) क्रियाओं (जैसे–हृदय ,श्वसन आदि) के निम्न स्तर के विविध नियंत्रक तथा साथ ही वाक् ध्वनि की गतियों से संबंधित कपाल तंत्रिका केन्द्रक भी होते है।

3.4 भाषा विकास की प्रक्रिया

भाषा अर्जन जन्म के समय नही होता है, वरन् बच्चे के बाह्य जगत और आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं के बीच अन्तः क्रिया से विकास के माध्यम से होता है।

पहले सीखने वाले के मन में संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं चल रही होती है। मनोविज्ञानी पियाजे,, ने विकासात्मक अवस्थाओं को उसी तरह स्पष्ट किया जिसमें बच्चे की तर्कसंगत विवेचन और अन्य संकल्पनात्मक क्षमताएं अंतनिर्हित होती है। ये बच्चे में भाषा प्रयोग में दिखाई देते हैं और वे बच्चे को भाषा में संरचना खोजने योग्य बनाते हैं, जिसे वह परिवेश से प्राप्त करता है। इसके अतिरिक्त एक अन्य मनोविज्ञानी, व्यगोत्सकी ने विवेचन किया है कि ये क्षमताएं लगातार विस्तरित होती रहती हैं और जानकारियों को रूपांतरित करती हैं तथा पहले से अर्जित भाषा द्वारा विस्तारित होती हैं। इस प्रकार संज्ञानात्मक, सामाजिक और भाषा अर्जन कौशल साथ–साथ विकसित होते हैं।

पियाजे ने बच्चे और उसके परिवेश के बीच अंतःक्रिया में निम्नलिखित अवस्थाओं पर विचार किया। **आत्मसात्करण अवस्था,** जब बच्चा परिवेश से उद्दीपन ग्रहण करता है और पहले ही अर्जित अनुक्रियाओं के रूप में अनुक्रिया करता है, तब अनुक्रियाओं की नई अभिरचनाएं विकसित करने के लिए वह अपने स्वयं के विचारों को पुर्नगठित करता है। पियाजे ने जिसे बच्चे के संज्ञान में पुरानी और नई रूपरेखा कहा है यह उनके बीच एक अंतःक्रिया है। इसके बाद पियाजे अगली अवस्था का वर्णन करते हैं, जो समायोजन की है। जिसमें रूपरेखा अधिक पूरी तरह से पुर्नगठित हो जाती है। उनके अनुसार, जिस अवस्था से बच्चा जन्म से लगभग 24 महीने तक अपने संज्ञानात्मक विकास में गुजरता है, वह संवेदी प्रेरक है, जब बच्चा अपने परिवेश से क्रिया करता है, स्पर्श कर और देखकर, अपने परिवेश से भिन्न–भिन्न वस्तुएँ आत्मसात् करके समझता है। वे इस अवस्था में अर्मूत संकल्पनाओं से व्यवहार करने की स्थिति में नही होते हैं। फिर, **पूर्व संक्रियात्मक** अवस्था में दो सात वर्ष की आयु तक बच्चा प्रतीकात्मकता विकसित करता है। और अवधारणाओं से परिचित होता है जैसे संख्या, समय श्रेणियाँ और दृष्टव्य जटिलताएं। इस अवस्था में वे प्रतिबिम्बों, चित्रकारी और रंग भरना तथा अक्षरों को समझ सकते हैं। अगली अवस्था, मूर्त संक्रियात्मक अवस्था (7–11 वर्ष) में बच्चा बहुत सी मानसिक प्रक्रियाएं कर सकता है और संकल्पना करने में सक्षम होता है। औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था (11 वर्ष और बाद में), वे परिणाम निकालना, निगमन और निरपेक्ष अवधारणाओं को समझ सकते हैं। यह विकास सामान्यतः भाषा अर्जन से संबंधित और उसमें लक्षित होते है, यद्यपि अवस्थाएं ठीक–ठीक समान्तर नहीं होती हैं। यह काफी हद तक व्यक्तिगत क्षमताओं पर और जानकारियों के प्रकार पर निर्भर करता है जो समाज और परिवेश द्वारा प्रदान की जाती है।

उपर्युक्त का अनुसरण करते हुए यह कहा जा सकता है कि एक अर्जनक्रम होता है पहले छोटी और सरलीकृत संरचनाएं समझी और अर्जित की जाती हैं और तब संकेतों (कूटभाषा) का विस्तार होता है। स्लोबिन द्वारा किये गये अनुसंधान का परिणाम "अर्जन सिद्धांतों" अथवा प्रचालन सिद्धांतों के निर्माण में निम्न प्रकार हैं–

1.अर्थः–बच्चा अंतनिर्हित अर्थ के लिए स्पष्ट संकेत ढूढ़ता है। लघुकृत या संपीडित रूप से पहले पूरा रूप यह दिखाने के लिए प्रयुक्त किया जाता है, कि बच्चे के लिए पूरा अर्थ महत्वपूर्ण है।

उदाहरणार्थ, बच्चा उसने जो पुस्तक पढ़ी के स्थान पर वह पुस्तक जो उसने पढ़ी 'Id' के स्थान पर 'I Would' कहने को प्राथमिकता देता है।

2. रूपान्तरणः– (मॉडिफिकेशन)– बच्चे शब्दों के रूप में परिवर्तन को खोजते हैंः बच्चे मानते हैं कि शब्दों को उसके अर्थो में परिवर्तन लाने के लिए प्रणाली बद्ध तरीके से रूपान्तरित किया जाता है। यह देखने के लिए एक परीक्षण किया गया था कि अंग्रेजी भाषा का अर्जन करने वाले बच्चे तब क्या करते हैं जब उन्हें दो शब्द 'Wug और Gutch' दिये गये जो पशुओं के चित्रों के संकेत दे रहे थे। जब पहला चित्र दिखाया गया, बच्चों ने कहा 'Wugs' जबकि उन्हें जब दूसरा दिखाया गया, उन्होनें कहा 'Gutches' । यह एक जागरूकता दर्शाता है कि वे इन सिद्धांतों को समझ सकते हैं जिन पर दो शब्दों को रूपान्तरित किया जा रहा था। यद्यपि वे सामान्यीकरण कर सकते हैं, जब उनके नियम का अपवादों से सामना होता है। इसलिए वे सभी एक समान दिखाई देने वाले शब्दों House, Mouse, Louse आदि पर 'es' जोड़ सकते हैं।

3 क्रमः– (आर्डर) बच्चे शब्दों, प्रत्ययों, उपसर्गो का क्रम ढूढ़तें हैं, बच्चे सुसंगति का अनुसरण करते हैं कि शब्दों में, शब्दों के भागों का क्रम और वाक्यों में, शब्दों का क्रम है। बच्चे अंग्रेजी सीखने की विकास अवस्था में तत्वों जैसे 'ed,talk,toy,the को गलत जगह रखते हैं। वास्तव में वे Articles बाद की अवस्था में अर्जित कर सकते हैं, इसलिए पिछली अवस्था में वे Toy के बदले the toy कह सकते हैं परन्तु वे toy the के रूप में इसे अर्जित नहीं करेंगे।

3.4.1 भाषा सीखने की प्रक्रियाः–प्रत्येक मनुष्य अपनी बाल्यावस्था में कम से कम एक भाषा तो सीख ही लेता है जिसका वह जीवन भर प्रयोग करता है। वह उस भाषा की नवीन सामग्री, प्रयोगों और विकासशील रूपों से भी निरंतर परिचित होता चलता है और इस कारण उसकी भाषा की क्षमता भी विकसित होती चलती है। भाषा सीखने की यह प्रक्रिया चाहें शैशवावस्था हो या बाद की अवस्था हो, मूलतः एक ही है और वह है भाषा सुनने और बोलने का अवसर। बालक को यदि अपने परिवेश की भाषा सुनने तथा सुने हुए ध्वनि संकेतों को उच्चारित करने का पर्याप्त अवसर मिलता है तो वह भाषा सीख लेता है। वस्तुतः भाषा सीखने का सर्वप्रमुख साधन है सीखी जाने वाली भाषा के बोलने वालों के बीच रहना, उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा को सुनना, उस भाषा का अनुकरण करना अर्थात फार दी प्रैक्टिकल स्टडी ऑफ फोरेंन लैग्वेजेज में भाषा सीखने की इस प्रक्रिया पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

भाषा सीखने की कोई विशिष्ट प्रतिभा जैसी बात नही है जो किसी में विद्यमान होती है और किसी में नही होती। भाषा सीखने के लिए सामान्य बुद्धि की आवश्यकता होती है जो सभी बालकों को प्रायः प्रकृतिप्रदत्त रूप से सुलभ होती है। भाषा सीखने का सर्वप्रमुख स्त्रोत है उस भाषा के नेटिव स्पीकर्स के बीच रहना, उस भाषा को सुनना और बोलना। प्रत्येक व्यक्ति जो गूंगा, बहरा और जड़बुद्धि का नही है, पाँच वर्ष का होते–होते अपनी मातृभाषा सीख लेता है चाहे वह भाषा अन्य भाषा–भाषियों के लिए कितनी भी जटिल क्यों न हो। सभी को अपनी मातृभाषा बड़ी सरल और सहज लगती है और इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि उसके सीखने की प्रक्रिया बड़ी सहज होती है। इस साहज प्रक्रिया द्वारा यदि हम अन्य भाषा सीखें तो उसका अर्जन भी सरल हो जाये अर्थात उस भाषा के मूल प्रयोक्ताओं से भाषा सुनने और बोलने का अवसर मिले।

भाषा एक आदत है और भाषा सीखना आदत निर्माण की प्रक्रिया है आदत डालने की प्रक्रिया में निम्नलिखित चरण होते हैं–

1. **ध्वनि संकेतों को सुनना और पहचानना–**बालक घर में तथा आस–पड़ोस में लोगों के मुख से निस्तृत ध्वनि संकेतों को सुनता है और उनकी पहचान करने लगता है। पहले वह ध्वनियों को

पहचानता है और फिर तत्संबंधी अर्थो (वस्तु, कार्य, विचार आदि) भी जानने का प्रयत्न करता है। भाषा सीखने का यह प्रथम चरण है। इस स्तर पर बालक को यदि शुद्ध मानक भाषा सुनने का अवसर मिलता है तो भाषा संबंधी अच्छी आदत की नींव पड़ती है।

2. **अनुकरण करनाः**—बालक सुनी हुई भाषा का अनुकरण करता है वह ध्वनि संकेतों को पहचानता ही ही अपितु विभिन्न ध्वनियों का अंतर ही समझने लगता है और तद्नुसार उनका उच्चारण करने लगता है। प्रारंभ में वह उन ध्वनि संकेतों का अर्थ भली भांति नही जानता, पर उन्हें बोलने का प्रयास करता है और धीरे—धीरे अर्थ भी जानने लगता है।
3. **आवृत्तिः**— बालक को पुनः बोलने का अभ्यास कराना चाहिये। वस्तुतः बालक प्रयत्न और त्रुटि के सिद्धांत द्वारा भाषा सीखता है। उसका प्रारंभिक उच्चारण अशुद्ध होता है पर वह बार—बार प्रयत्न करके उसे शुद्ध करता है। वाक्य रचना संबंधी त्रुटियाँ भी होती रहती हैं वह शुद्धता का प्रयास करता रहता है। अतः कथन, पुर्नकथन, भाषा प्रयोग की आवृत्ति आदि भाषा सीखने के लिए आवश्यक साधन है।
4. **विविधताः**—आवृत्ति के साथ—साथ भाषा संबंधी प्रयोगों एवं अभ्यासों में विभिन्नता भी लानी चाहिये जिससे बालक विभिन्न ध्वनि संकेतों एवं तद्निहित अर्थो तथा प्रयोग संबंधी विभिन्नताओं की पहचान कर सके। इसके द्वारा ही उसकी भाषा की शक्ति का क्रमोत्तर विकास होता है।
5. **चयनः**—भाषा की कुछ क्षमता हो जाने पर बालक में यह योग्यता भी विकसित होनी चाहिये कि वह यथाप्रसंग एवं यथा अवसर उपयुक्त भाषा सामग्री का चयन और प्रयोग कर सके। विविध प्रकार की भाषा संबंधी अभ्यास इस दृष्टि से आवश्यक है।

भाषा की आदत बनने की प्रक्रिया में यह अवस्थाएं महत्व रखती हैं पर यह स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिये कि यह अवस्थाएं एक दूसरे से पृथक और उत्तरोत्तर विकास की अवस्थाएं न होकर परस्पर संबद्ध एवं पूरक अवस्थाएं हैं। भाषा शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह इन अवस्थाओं का महत्व समझते हुए इनका यथोचित प्रयोग करें।

3.4.2 भाषा और विकासः—मानव जीवन के विकास में सबसे अधिक योगदान भाषा का ही रहता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है उसे समाज में रह कर ही सारे काम पूरे करने पड़ते हैं वैसे ही उसे अपने मन के भावों, विचारों, अनुभवों आदि को दूसरों तक पहुँचाने के लिए तथा उनके विचारों आदि ग्रहण करने के लिए भाषा को ही माध्यम बनाना पड़ता है। प्रकृति ने मानव को वाणी देकर ही उसे शेष सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बना दिया है। सभी की अपनी भाषा होती है चाहे वह मानव हो या पशु—पक्षी । भाषा को वैचारिक आदान—प्रदान का माध्यम कहा जाता है भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन है।

भाषा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन में बहुत पहले आरंभ हो जाती है। नवजात बिना किसी भाषा के जन्म लेता है किन्तु मात्र 10 मास में ही बोली गयी बातों को अन्य ध्वनियों से अलग करने में सक्षम हो जाता है। विकास एक प्रक्रिया है जिसे मानवीय जीवन की शुरूआत में शुरू किया जाता है। शिशुओं का विकास भाषा के बिना शुरू होता है, फिर भी 10 महीने तक, बच्चे भाषण की आवाज को अलग कर सकते हैं और वे अपनी माँ की आवाज और भाषण पैटर्न पहचानने लगते हैं और जन्म के बाद अन्य ध्वनियों से उन्हें अलग करने लगते हैं। भाषा के विकास को सीखने की साधारण प्रक्रियाओं के द्वारा आगे बढ़ना माना जाता है जिसमें बच्चों को भाषाई इनपुट से शब्दों, अर्थो और शब्दों के प्रयोग और बोलने का उपयोग होता है।

भाषा और विकासः—भाषा की उत्पत्ति का संबंध इस बात से है कि मानव ने सर्वप्रथम किस काल में अपने मुख से निसृत होने वाली ध्वनियों को वस्तुओं पदार्थो, भावों से जोड़ा। इतिहास के किस काल में मानव ने सामूहिक स्तर पर यह निश्चय किया कि किस शब्द का क्या अर्थ होगा।

भाषा विकास बौद्धिक विकास की सर्वाधिक उत्तम कसौटी मानी जाती है। बालकों को सर्वप्रथम भाषा ज्ञान परिवार से होता है कार्ल सी गैरिसन के अनुसार स्कूल जाने से पूर्व बालकों में भाषा ज्ञान का विकास बौद्धिक विकास की सबसे अच्छी कसौटी है। भाषा का विकास भी विकास के अन्य पहलुओं के लाक्षणिक सिद्धांतों के अनुसार होता है। यह विकास परिपक्वता तथा अधिगम दोनों के फलस्वरूप होता है और इसमें नई अनुक्रियाएं सीखनी होती हैं और पहले की सीखी हुई अनुक्रियाओं का परिष्कार करना होता है।

3.4.3 भाषा विकास का क्रमः—भाषा विकास निम्न बिन्दुओं पर आधारित है—

1. **शैशवास्था**—इस अवस्था में मस्तिष्क की सर्तकता, ज्ञानेन्द्रियों की तेजी, सीखने और समझने की अधिकता अपने चरमोत्कर्ष पर होती है। फ्रायड के अनुसार मनुष्य शिशु जो कुछ बनता है जीवन के प्रांरभिक चार—पाँच वर्षो में ही बन जाता है। भाषा को क्रमोनुसार निम्न रूप में प्रस्तुत किया गया है।

(i) रूदन—बोलना एक लम्बी और जटिल प्रक्रिया के बाद सीखा जाता है, अतएव उसका प्रारूप हमें रूदन अथवा चीखने चिल्लानें में मिलता है रिविल के अनुसार रूदन प्रारंभ में संकटकालीन होता है। यह अनियमित तथा अनियंत्रित होता है। अतः रूदन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जो शिशु अकारण ही करता है। स्टीवर्ट के अनुसार जीवन के प्रांरभिक दिनों में शिशु रूदन भिन्न मात्रा में पाया जाता है और वह दूसरे सप्ताह में प्रकट होता है। तीसरे सप्ताह में स्वार्थवश रूदन कम हो जाता है। रूदन तीव्रता तथा शिशु के विचारों तथा भावों को अभिव्यक्त करता है। यह रूदन पीड़ा, तेज रोशनी तीक्ष्ण आवाज, थकान, भूख आदि के कारण हो सकता है।

(ii) बलबलाना—इरविन महोदय के अनुसार रूदन में सुस्पष्ट आवाजें पायी जाती हैं। यह ध्वनि चौथे—पाँचवें मास के पश्चात् स्पष्ट होना प्रारंभ हो जाती है। बलबलाने में जीवन के प्रथम वर्ष में स्वर ध्वनि सुनाई देती है।

(iii) इंगित करना—भाषाविदों ने इंगित करने को भाषा विकास का सोपान कहा है। जरसील्ड मैकाथ्री ने अपने अध्ययन के आधार पर बताया है कि इसके द्वारा शिशु दूसरे को अपने भाव—विचार समझता है। इसे लेरिक ने सम्पूर्ण शरीर की भाषा भी माना है। शिशु हाँ या न की मुद्रा में गर्दन हिलाकर भी उत्तर देता है।

(iv) बोलना—भाषा प्रयोग की यह अंतिम अवस्था है। इसका आरंभ एक—डेढ़ वर्ष के करीब होता है। भाषा बोलना भी एक कौशल है अतः इसे अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह शारीरिक अवयवों की पुष्टता पर निर्भर करता है। शुरू में निरर्थक शब्द बोले जाते हैं जैसे वा, ला, मा इत्यादि। परंतु क्रमशः साहचर्य के नियमों के कारण निरर्थक शब्दों में सार्थकता आ जाती है और वे साउद्देश्य ।

iz;qDr gksrs gSA 'kCn cksyus esa ,d leL;k mPpkj.k dh gksrh gSA 'kq: esa ckyd vuqdj.k ls gh mPpkj.k lh[krk gSA 'kS'okoLFkk esa mPpkj.k ;ksX;rk yphyh ekuh tkrh gS

v) **Hkk"kk esa /ofu dh igpku** & 'kCnksa dks lh[kus ls igys f'k'kq Hkk"kk dh /ofu esa varj djuk lh[k tkrk gSA tSls jk ;k yk esa varj Li"V dj ysrs gSA

vi) **izFke 'kCn &** 8 & 12 ekg dh vk;q esa cPpk izFke 'kCn cksyrk gSA blls iwoZ og cycykuk] baxu vkfn vU; Hkko Hkaafxekvksa ds }kjk vius HkkokfHkO;fDr djrk gSA czsdksa ds vuqlkj cksyuk f'k'kq ds lEizs"k.k dh fofHké voLFkkvksa dk vxyk iM+ko gSA f'k'kq loZizFke vius ifjokj ls tqMs O;fDr;ksa ftlesa mldk HkkoukRed yxko gksrk gS midksa iqdkjuk izkjaHk djrk gS tSls cM+ks dks nknk bR;knhA

vii) **'kCn ;qXe dk mPPkkj.k&** 18&24 ekg dh vk;q rd f'k'kq izk;% 'kCnksa ;qXeksa dks cksyuk izkjaHk dj nsrk gS ;g 'kCn ;qXe os gS tks viuh baxu] dq'kyrk] 'kkjhfjd baXku rFkk flj ds fofHké eqnzkvksa ds lkFk cksyrs gSA

f'k'kqvksa dh 'kCnkoyh dk v/;;u fofHké euksoSKkfudksa ¼fLeFk ,oa lh'kksj½ }kjk gqvk gS rFkk dqN bl izdkj ds fu"d"kZ izkIr gq, gSA

ckY;koLFkk esa Hkk"kk fodkl&

ckY;kOkLFkk tUeksijkar ekuo fodkl dh nwljh voLFkk gS tks 'kS'okoLFkk dh lekflr ds mijkar izkjaHk gksrh gSA ckY;koLFkk esa izos'k djrs le; ckyd vius okrkoj.k ls dkQh lhek rd ifjfpr gks tkrk gSA bl voLFkk esa og O;fDrxr rFkk lkekftd O;ogkj djuk lh[kuk izkjaHk djrk gS rFkk mldh vkSipkfjd f'k{kk dk izkjaHk Hkh blh voLFkk esa gksrk gSA ckY;koLFkk esa Hkk"kk fodkl rhoz xfr ls gksrk gSA 'kCn Hk.Mkj esa o`f) gksrh gSA ckydksa dh vis{kk ckfydkvksa esa Hkk"kk dk fodkl rsth ls gksrk gSA okD; jpuk ,oa okd&iVqrk esa Hkh ckfydk,¡ Js"B gksrh gSA ^lh'kksj* us ckyd&ckfydkvksa ds 'kCn HkaMkj dk v/;;u djds crk;k fd muds 'kCnksa dh la[;k 10&12 lky rd 35]000 ds yxHkx igq¡p tkrh gSA

fd'kksjkoLFkk esa Hkk"kk fodkl&

fd'kksjkOkLFkk tUeksijkar ekuo fodkl dh r`rh; voLFkk gS tks ckY;koLFkk dh lekflr ds mijkar izkjaHk gksrh gS rFkk izkS<+koLFkk ds izkjaHk gksus rd pyrh gSsA ;|fi O;fDrxr Hksnks] tyok;q vkfn ds dkj.k fd'kksjkoLFkk dh vof/k esa dqN varj ik;k tkrk gS fQj Hkh izk;% 12 ls 18 o"kZ dh vk;q ds chp dh vof/k dks fd'kksjkoLFkk dgk tkrk gSA bl voLFkk dks ckY;koLFkk rFkk izkS<+koLFkk ds chp dk laf?kdky ekuk tkrk gSA Hkk"kk dk fodkl bl voLFkk esa lEizR;kRed Lrj ij fuHkZj gksrk gS] vr% fd'kksj fd'kksfj;ksa esa dYiuk'khy lkfgR; ds v/;;u dh :fp gksrh gSA izrhdkREkd 'kCnksa dk iz;ksx Hkh fd'kksjoxZ vf/kd djrk gSA vr% buds 'kCn HkaMkj dh fofo/krk rFkk izpqjrk LoHkkor% ik;h tkrh gSA

fd’kksjkoLFkk esa Hkk"kk ds fodkl esa vknr ,oa cqf) dk izHkko Li"V yf{kr gkskr gS] vknr ,d izdkj psru ltxrk ,oa varn`"V dh vksj ladsr djrh gSA bl {kerk ds dkj.k fd’kksj leL;kvksa dh ij[k djrk gS vkSj mi;qDr Hkk"kk dk iz;ksx djrk gSA ;fn mi;qDr Hkk"kk ugha feyrh rks og mUgsa rksM+ ejksM ds u;s 'kCn i<+rk gSA ;gh ij mldh cqf)] mldh dYiuk vkSj mldh vknr ;k vH;kl Hkk"kk ds fodkl ls viuk ;ksxnku nsrs gSA

3-4-4 Hkk"kk fodkl dks izHkkfor djus okys dkjd&

i) **cqf)&** Hkk"kk dh {kerk ,oa ;ksX;rk dk laca/k gekjh cqf) ls vVwV gksrk gSA Hkk"kk dh dq’kyrk Hkh mu ckydksa esa vf/kd gksrh gS] tks cqf) esa vf/kd gksrs gSA cVZ us vius ßoSdokMZ pkbYMÞ esa ladsr fd;k gS ftu ckydksa dh cqf) {kh.k gksrh gS os Hkk"kk dh ;ksX;rk Hkh de j[krs gS vkSj fiNMs Hkh gksrs gSA rh{.k cqf) ckyd Hkk"kk dk iz;ksx mi;qDr <ax ls djrs gSA

ii) **tSfodh; dkj.k&** efLr"d dh cukoV Hkh Hkk"kk fodkl dks izHkkfor djrs gSA Hkk"kk cksyus rFkk le>us dh fy, Luk;q ra=] rFkk okd ;a= dh vko’;drk gksrh gSA cgqr gn rd budh cukoV rFkk dk;Z 'kSyh rFkk Luk;q fu;a=.k Hkk"kk dk iz;ksx mi;qDr <ax ls djrs gSA

iii) **okrkoj.kh; dkjd&** Hkk"kk laca/kh fodkl ij O;fDr ftl LFkku vkSj ifjfLFkfr esa jgrk gS] vkpj.k djrk gS] fopkjksa dk vknku&iznku djrk gS mlesa Hkk"kk dk fodkl gksrk gSA mnkgj.k Lo:Ik fuEu Js.kh ds ifjokj o lekt ds yksxksa esa Hkk"kk dk fodkl de gksrk gS D;ksafd mUgsa nwljksa ds laidZ esa vkus dk volj d e feyrk gSA blh izdkj ifjokj esa de O;fDr;ksa ds gksus ij Hkh “k"kk ladqfpr gks tkrh gSA

iv) **fo|ky; vkSj f’k{kd&** fo|ky; vkSj f’k{kd Hkk"kk fodkl esa egRoiw.kZ Hkwfedk dk fuokZgu djrs gSA fo|ky; esa fofHké fo"k;ksa ,oa fØ;kvksa dk lh[kuk rFkk fl[kkuk Hkk"kk ds ek/;e ls gksrk gSA bl izfØ;k esa Hkk"kk laca/kh fodkl vPNs ls gksrk gSA

v) **O;olk; ,oa dk;Z&** ,sls cgqr ls O;olk; gS ftuesa Hkk"kk dk iz;ksx vR;f/kd gksrk gS] mnkgj.k Lo:Ik v/;kiu] odkyr] O;kikj dqN ,sls

O;olk; gS ftuesa Hkk"kk ds fcuk dksbZ dk;Z ugha py ldrkA vr,o okrkoj.k ds varxZr budks Hkh lfEefyr fd;k x;k gSA

vi) **vfHkizsj.kk] vuqca/ku rFkk vuqdj.k&** euksoSKkfud ds fopkjkuqlkj Hkk"kk laca/kh fodkl vfHkizsj.kk] vuqca/ku ,oa vuqdj.k ij fuHkZj djrk gSA ,d fujh{k.k ls Kkr gqvk fd cksyus okys f'k'kq dks izyksHku nsdj Li"V Hkk"kh cuk;k x;kA ,d nwljs fujh{k.k esa f'k'kqvksa dks fp= fn[kkdj muds uke ;kn djk;s x;sA ;s vfHkizsj.k ds egRo dks izdV djrs gSA Hkk"k.k izfr;ksfxrk esa iqjL—r gksus ij Nk= dks vf/kd izHkko'kkyh Hkk"kk dk iz;ksx djus dk vfHkizsj.kk feyrh gSA

vuqca/ku dh izfØ;k esa izyksHku iqjLdkj ;k vfHkizsj.kk ds lkFk iz;Rub l izdkj tksM+k tkrk gS fd izfØ;k iwjh gks tkrh gSA vuqdj.k okLro esa ,d iz—fr gS tks lHkh dks vfHkizsfjr djrh gSA d{kk esa v/;kid dh lqLi"V lkfgfR;d rFkk 'kq) Hkk"kk dk vuqdj.k lpsru ,oa vpsru :Ik esa Nk= djrs gS rFkk Hkk"kk laca/kh fodkl djus esa lQy gksrs gSA

Hkk"kk dk ewY;kadu djuk gh Hkk"kk ds fodkl dh vksj vxzlj gksrk gSA bldh {kerk vkSj dq'kyrk gh bldh vVqVrk dk ifjiDo mnkgj.k gSA teZu fo}ku MkW eDLeqysj ds vuqlkj ßHkk"kk vkSj dqN ugha dsoy ekuo ds eu dh prqj cqf) }kjk vfo"—r ,d ,slk mik; gS ftldh enn ls ge vius fopkj ljyrk vkSj rRijrk ls nwljksa ij izdV dj ldrs gS vkSj bldh O;k[;k iz—fr dh mit ds :i esa ugha cfYd ekuo —r inkFkZ ds :i esa djuk mfpr gSA

3-5 O;xksRldh vkSj Hkk"kk vtZu&

tgk¡ pkWeLdh vkSj fi;kts us eq[;r% laKkukRed i{k ij /;ku dsfUnzr fd;k] ogh vU; vk;ke O;xksRldh }kjk tksM+k x;kA

O;xksRldh ds vuqlkj] Hkk"kk lfgr lHkh vk/kkjHkwr laKkukRed fØ;kdyki lkekftd bfrgkl dh lajpuk ¼eSfVªDl½ esa gksrs gSA mudk fo'okl gS fd laKkukRed izoh.krk vkSj lkspus ds izfreku LokHkkfod dkjdksa }kjk fu/kkZfjr ugha fd, tkrs gS] cfYd mu oS;fDrd vkSj lkekftd lkaL—frd laLFkkvksa ds chp var% fØ;k dk izfrQy gS] tgk¡ O;fDr fodkl djrk gSA

ifj.kker% ml lekt dk bfrgkl] ftlesa cPps dk ikyu iks"k.k gqvk gS vkSj cPps dk O;fDrxr bfrgkl] mlds rjhds egRoiw.kZ fu/kkZjd rRo gS ftuesa O;fDr lksp ldrk gSA

O;xksRldh ds fl)kar esa egRoiw.kZ rRo ßlehiLFk fodkl {ks=Þ gSA leL;k,¡ Lo;a gy djus dh ,d cPps dk {kerk vkSj nwljs dh lgk;rk ls mUgsa gy djus dh {kerk ds chp varj gh lehiLFk fodkl {ks= gSA okLrfod fodkl Lrj dk laca/k mu lHkh izdk;ksZ rFkk dk;Zdykiksa ls gS] ftUgsa cPpk fdlh vU; dh lgk;rk ds fcuk Lora= :Ik ls Lo;a dj ldrk gSA ijarq lehiLFk fodkl ds {ks= esa os lHkh izdk;Z vkSj dk;Zdyki 'kkfey gS ftUgsa cPpk dsoy fdlh vU; dh lgk;rk ls gh dj ldrk gSA og O;fDr tks cPps dh lgk;rk djrk gS] dksbZ Hkh o;Ld gks ldrk gS] ;k led{k cPpk Hkh gks ldrk gSA O;xksRldh ds lehiLFk fodkl ds {ks= ds fl)kar ds Hkk"kk v/;kidksa ds fy, dbZ fufgrkFkZ gSA muesa ls ,d ;g gS fd fo|kFkhZ dk lkekftd ifjos’k ;g fu/kkZfjr djus esa Hkwfedk fuHkkrk gS fd cPpk lkspuk dSls lh[ksxk\ D;ksafd mlds vuqlkj fopkj vkSj Hkk"kk var% lacaf/kr gSA

O;xksRldh dk er gSS fd vf/kxe dh ,d egRoiw.kZ fo’ks"krk ;g gS fd ;g fofHké izdkj dh vkarfjd izfØ;kvksa dks tkx`r djrk gS] tks dsoy rHkh dj ldrs gS tc cPpk vius ifjos’k esa yksxksa ls vUr% fØ;k djrk gS vkSj vius ledf{k;ska ls lg;ksx djrk gSA

blfy,] tc ;g Hkk"kk vf/kxe ds fy, iz;qDr gksrh gS] rc ifjos’k dh izekf.kdrk vkSj mlds lgHkkfx;ksa ds chp ?kfu"Brk vfuok;Z rRo gSA ftlesa fd fo|kFkhZ dks bl ifjos’k dk vax vuqHko djsaA

cks/kxE; tkudkjh;k¡ (Comprehensible Input)

;|fi O;xksRldh vkSj Øs"ksu iw.kZr% fHké&fHké i`"BHkwfe;ksa ls vkrs gS] fQj Hkh f}rh; Hkk"kk f'k{k.k ds fy, muds fl)karksa ds vuqiz;ksx esa lekurk,¡s gSA

vc ;g eku fy;k x;k gS fd Hkk"kk vtZu v/kksZUeq[kh vkSj lEizs"k.keq[kh gSA Hkk"kk rc vftZr ugha dh tkrh gS tc vanj vkus okyh tkudkfj;k¡ nksgjk;h tkrh gS] oju~ t cog tkudkfj;k¡ le>h tkrh gS vkSj tc fo|kFkhZ le>rk gS] fd bldk vFkZ D;k gS\ vkSj og bldk iz;ksx dj ldrk gSA

Hkk"kk vtZu ds vuqla/kkudÙkkZvksa esa ls ,d LVhQu Øs"ksu us bls cks/kxE; tkudkfj;k¡ dgk¡ gSA fo|kFkhZ ckg~; txr ls izpqj tkudkfj;k¡ izkIr djrk gS] ijarq dsoy og tkudkfj;k¡ vftZr dh tkrh gS] tks fo|kfFkZ;ksa ds fy, cks/kxE; gksA Øs"ksu ds vuqlkj] fo|kFkhZ ds efLr"d esa fujh{kd dk Hkko ¼ekWuhVj½ gksrk gS tks tkudkfj;ksa ds fujh{k.k esa lgk;rk djrk gS] vkSj bldk rFkk ml Kku dk lkFk&lkFk iz;ksx djrk gS ftls igys gh vftZr fd;k x;k gS vkSj rc ifj.kke mRié djrk gSA ckn esa fujh{kd] vftZr Kku dk iz;ksx djus okys f'k{kkFkhZ dks Lo&lq/kkj djus dh vuqefr nsrk gSA bl izdkj fujh{kd] csgrj 'kq)rk ds fy, :ikarj.k djus dh vftZr iz.kkyh dks lq/kkjus ;k lgh djus esa lgk;rk djrk gSA fujh{kd ds dk;Z djus ds fy, tks Hkh vko';d gS og mldk izHkkoh fu"iUnd gSA rc bldks tkx`r fd;k tkrk gS rks ;g lwpuk dks le>us dh vuqefr nsrk gSA ;fn bls lqIr fd;k tkrk gS rks blls tkudkfj;k¡ le> esa vkus esa ck/kk vkrh gSA nokc vkSj fpark tSls dkjd izHkkodkjh fu"iUnd dks de dj ldrs gSA blfy, nckoeqDr okrkoj.k] Hkk"kk vtZu ds fy, vko';d gSA

vU; v/;;uksa us fn[kk;k gS fd cks/kxE; tkudkfj;k¡] ftudk iz;ksx cPpk dj ldrk gS] lajpukRed izdkj dh gksrh gSA o;Ld] cPpksa ls o;Ldksa dh

rqyuk esa vf/kd ljy Hkk"kk esa ckr djrs gSA ek¡ cPps ls ljyh—r rjhds ls fo'ks"k Hkk"kk esa ckrsa djrh gS ftls dqN yksxksa }kjk ^cky lqyHk Hkk"kk* dgk tkrk gSA fM fofy;lZ us izkS<+ Hkk"kk vkSj cPpksa }kjk cksyh tkus okyh Hkk"kk ds varjksa dks lkjka'kh—r fd;k tks fuEufyf[kr gS&

Ø	fofHkérk dk Lrj	xq.k
1	/ofu laca/kh (Phonological)	ifjofrZr rku (tone)] nh?kZrj ¼mPp½ Lojk?kkr] vfrjaftr] Li"V mPpkj.k] eanrj okd~] fojke
2	okD; foU;kl (Syntactic)	y?kqrj mfDr] de tfVy] U;wu var% LFkkiu] de [kafMr okD;] iqujko`fÙk] vf/kd] fo"k;xr 'kCn] de dk;kZRed 'kCn] vf/kd iz'u] vf/kd vkKklwpd
3	'kCnkFkZ fo"k;d (Semantic)	lhfer 'kCnksa dk iz;ksx] ewrZ izlaxkFkZ] vYi vewrZ in] 'kCnxr laca/kksa dk lhfer foLrkj {ks=A

;s varj Li"V ifjyf{kr gksrs gS] tc o;Ld vkSj cPps var% fØ;k djrs gS D;ksafd o;Ld ¼fo'ks"kdj ekrk,¡½ cPps ds lhfer Kku rFkk ijkl ds izfr vf/kdka'kr% ltx jgrs gS vkSj cPps ds le>us ds fy, os Hkk"kk dks vf/kd ljy cukus dk iz;kl djrs gSA ;g egRoiw.kZ gS fd izkS<+&cky Hkk"kk esa vkns'kkRed 'kCn Hkjiwj gksrs gS] D;ksafd vf/kdka'k fu;eksa dk ikyu djus ds fy;s dgk tkrk gSA ijarq cPps o;Ldksa dh lkekU; Hkk"kk dks la;ksx ls ;k fNidj lqurs gS vkSj 'kk;n os mls vPNh rjg le> ysrs gS D;ksafd os dHkh&dHkh var%fØ;kvksa esa ,slh Hkk"kk dk izek.k fn[kkrs gSA blfy, fHké&fHké izdkj dh tkudkfj;ksa ds chp varj djuk lnSo ljy ;k vklku ugha gksrk gSA Hkk"kk esa dqN in ljy izrhr gksrs gS ijarq ckn esa vftZr fd, tkrs gS tcfd vU; igys gh vftZr dj fy, tkrs gS mnkgj.k ds fy,] vaxzsth esa Hkwrdky vkSj dÙkkZ&fØ;kin vUo; O;kdj.k ds Hkkx gS tks ckn esa vftZr fd, tkrs gSA

3-6 bdkbZ lkjka’k&

bl bdkbZ esa geus Hkk"kk vf/kxe] Hkk"kk ,oa lkekftd var%fØ;k] Hkk"kk] eu ,oa efLr"d] Hkk"kk fodkl dh izfØ;k ,oa O;xksRldh ,oa Hkk"kk vtZu ij fofHké n`f"Vdks.k izLrqr fd, gSA ;s lHkh ges mu rjhdksa dks le>us esa lgk;rk djrs gS ftuesa ge Hkk"kk tku ldrs gS rFkk iz;ksx dj ldrs gS] vkSj izfØ;k ftlds ek/;e ls ;g {kerk izkIr dh tkrh gSA

3-7 fu;r dk;Z&

- Hkk"kk fodkl dh izfØ;k ,oa mlds Øe dks le>kb,A
- Hkk"kk] eu ,oa efLr"d ds chp laca/k dks Li"V dhft,A

3-8 ppkZ ,oa Li"Vhdj.k ds fcanq&

3-8-1 ppkZ ds fcanq&

3-8-2 Li"Vhdj.k ds fcanq&

3-9 lanHkZ xzaFk&

¼1½ f=osnh] jkds'k ¼2013½ izkFkkfed fo|ky;ksa esa ikBu fof/k;k¡] vksesxk ifCyds'kUl]

ubZ fnYyhA

¼2½ 'kf'kckyk¼2010½ fgUnh f'k{k.k fof/k;k¡] fMLdojh ifCyf'kax gkml] ubZ fnYyhA

¼3½ Hkxoku nkl ¼2013½ lQy fgUnh f'k{k.k] vksesxk ifCyds'kUl] ubZ fnYyhA

¼4½ flag] fujatudqekj flag ¼1994½ ek/;fed fo|ky;ksa esa fgUnh f'k{k.k] jktLFkku

fgUnh xzaFk vdkneh] t;iqj

¼5½ ,u-lh-bZ-vkj-Vh- ¼2005½ jk"Vªh; ikB~;p;kZ dh :ijs[kk] ubZ fnYyhA

¼6½ ,u-lh-bZ-vkj-Vh- ¼2006½ iksfL'ku isij vkWu Vhfpax vkWQ bafM;u ySXost] ubZ

fnYyhA

¼7½ larks"k flag ¼2018½ Hkk"kk vkSj fodkl] baVjus’kuy tuZy vkWQ ,Mokal

,tqds’kuy fjlpZ] ---------

¼8½ pkWeLdh] ,u- ¼1959½] ßfjO;w vkWQ ch-,Q- fLdujÞ] ßccZy fcgsfo;jÞ] ySXost]

35] 26&58

¼9½ DykdZ] ,p ,oa DykdZ bZ- ¼1977½ lk;dksykWth ,aM ySXost% ,u baVªksMD’ku Vw

lkbdksfyX;qafLVdl ßU;w;kdZ % gkjdksVZ cszl tksosuksfopÞ

¼10½ fi;kts] ts ¼1926½ n ySXost ,aM FkkWV vkWQ n pkbYM] bafXy’k laLdj.k] yanu

% :Fkyst ,oa dhxy ikWyA

¼11½ fLduj] ch- ,Q-] ¼1957½] ccZy fcgsfo;j] U;w;kdZ] dkWiys ifCyf’kax xzqi

¼12½ pkWELdh] ukvkse ¼1965½] izkstsDV lk{kjrk ij O;k[;ku] dkWusZy fo’ofo|ky;]

twu 18

¼13½ www.ncert.nic.in

¼14½ xkyVu] ,e ,oa fofy;elu] ts ¼1992½ izkFkfed d{kk esa lkewfgd fØ;k]

yanu@U;w;kdZ % jkmVyst

DELED 03
[k.M&2
bdkbZ&1%&Hkk"kk vtZu vkSj vf/kxe

2-1 ifjp;%&

Hkk"kk dk lacaèk laL—fr ls gksrk gS ftls ,d laL—fr çiap dgk tkrk gS fHkUu&fHkUu laL—fr;ksa ds yksx ,d gh Hkko ;k fopkj dks fofHkUu 'kCnks esa O;ä dj ldrs gSa Hkk"kk laçs"k.k ,d yksdfç; ekè;e gS Hkk"kk ds ekè;e ls ckyd vius fopkjksa bPNkvksa vkSj Hkkoukvksa dks nwljksa ds lkFk O;ä dj ldrk gS vkSj nwljksa ds fopkjksa dks le> ldrk gS ckydksa dks ;fn Hkk"kk dk fodkl uk gks rks fuf'pr gh mudh ekufld ;ksX;rkvksa dk fodkl ftl lkekU; <ax ls gksrk gS ml rjhds ls ugha gksxk Hkk"kk ds ekè;e ls ftu fopkjksa dks O;ä fd;k tkrk gS muesa Li"V dk lokZfèkd gksrh gS fopkjksa dks O;ä djus ds vU; ekè;e Hkk"kk ds lkeus gYds gks tkrs gSa ckyd dk lkekftd fodkl dh Hkk"kk ij vkèkkfjr gS ckydksa dk çR;sd çdkj dk lh[kuk Hkk"kk ls fdlh u fdlh :i ls lacafèkr gS Hkk"kk ckydksa dh Kku o`f) vusd fodklkRed fØ;kvksa ds fy, vko';d gS blds }kjk cPps viuh bPNkvksa vkSj vko';drkvksa dks O;ä dj ldrs gSaA

2-2 mís';%&

1- Hkk"kk fodkl dh fofHkUu voLFkkvksa dks tku ldsxsA
2- ckydksa ds laKkukRed fodkl dh çfØ;k le> ldsaxsA
3- Hkk"kk fodkl dh çfØ;k vkSj pj.k dk o.kZu dj ldsaxsA

4- Hkk"kk vtZu vkSj vfèkxe dh çfØ;k le> ldsaxsA

5- izFke Hkk"kk ds vtZu dks le>uk A

6- f}rh; Hkk"kk dk vf/kxeA

,d lrr pyus okyh çfØ;k gS bl çfØ;k dk Lo:i ckyd dh ifjiDork dks fuèkkZfjr djrk gS Hkk"kk fodkl dk vFkZ o ;ksX;rk gS tks ckyd dh ifjiDork ds vuqikr esa mls vius Hkkoksa rFkk fopkjksa dks nwljksa rd igqapkus vFkok nwljksa ds Hkkoksa rFkk fopkjksa dks xzg.k djus esa lgk;rk gksrh gSA

2-3Hkk"kk vtZu vkSj vf/kxe%&

Fdlh tkfr ds Hkk"kk fodkl dk bfrgkl ml dh cqf) fodkl dk bfrgkl gS nwljs çkf.k;ksa dh vis{kk euq"; Hkk"kk ds dkj.k gh Js"B gS Hkk"kk dk fodkl vkSj lH;rk dk fodkl lkFk lkFk pyrk gS çkjaHk esa f'k'kq ewrZ oLrqvksa dk gh ç;ksx djrk gS ckn esa og Hkk"kk dk O;ogkj djus yxrk gS f'k{kk dk ,d çèkku mís'; ckyd dks Hkk"kk dk leqfpr Kku djkuk gS fdlh O;fä dh ckSf)d ;ksX;rk dk loZJs"B eki mldk 'kCn HkaMkj gh gSA

Mefoy

Hkk"kk] /ofu;ksa }kjk ekuo ds Hkkoksa dh vfHkO;fDr gSA

LohV

O;ogkjoknh euksfoKkuh ;g ekurs gSa fd ckyd ds Hkk"kk vfèkxe esa dksbZ fof'k"Vrk ugha gksrhA Hkk"kk Hkh dsoy vuqHko }kjk ;k vH;kl }kjk lh[kh tkrh gS] vuqHko] çf'k{k.k ds }kjk ml ds eu dk fd;k tk ldrk gSA Hkk"kk ekuo dh viuh laifUÙk gSA

ekuo f'k'kq Hkk"kk vtZu dh lgtkr çfØ;k ds lkFk tUe ysrk gSA ckyd ds efLr"d esa igys ls gh ,d çnÙk lalkèkd O;oLFkk gksrh gSA ckyd Hkk"kk dh nÙkd lkexzh dks lqurk gS vkSj mlds ckjs esa dYiuk,¡ djrk gS vkSj efLr"d ds MkVk çkslsflax dh lgk;rk ls fu;eksa dh [kkst djrk gSA vkSj mu fu;eksa dk vkRehdj.k djrk gSA çnÙk lalkèku ds ckn mu fu;eksa dh lgk;rk ls u,&u, okD;ksa dh jpuk djrk gSA bu fu;eksa dh [kkst esa dHkh&dHkh ckyd xyfr;k¡ djrk gS] ysfdu ;s xyfr;k¡ Hkk"kk lh[kus dh çfØ;k esa ckyd dh dYiukvksa dk çfrfufèkRo djrh gSaA Hkk"kk vtZu esa ckyd vius vanj Lor% fufgr ,d fuf'pr dk;Zfofèk }kjk Hkk"kk lh[krk gSA Hkk"kk ckyd dh ,d l`tukRed çfØ;k gS] ;g ,d vfuok;Z çfØ;k gSA ean&ls&ean cqf) okyk ckyd ,d Hkk"kk vo'; lh[k ysrk gSA Hkk"kk lh[kus ds fy, lkekU; çfrHkk dh Hkh t:jr ugh gksrhA

2-3-1 f’k’kqvksa dk Hkk"kk vtZu vkSj vf/kxe%&

f'k'kq ds tUe ls gh Øanu çkjaHk gks tkrk gS tks mldh Hkk"kk dk çkjafHkd :i gksrk gS yxHkx 2 lIrkg ds ckntcckydjksukçkjaHkdjrsgSarksfcuk#ds dkQhnsjrdjksrsjgrsgSadbZckj buds jksus ds dqNdkj.kgksldrsgSavkSjdHkhdqNdkj.kughaHkhgksldrsgSa bl voLFkkesacPpslksrslksrsHkhjksusyxrsgSayxHkx 2 ekgrd ds cPpksaesajksus dk eq[; dkj.kHkw[k gSisV dk nnZ]lksrs le; O;oèkku]Fkdku]Hkw[k]Hk; vpkudckyddksxyrrjhds ls mBkuk ;k fyVknsukvkfndqNHkhgksldrkgSblfy, ogjksrsgSa 3 ekg dk cPpk le>us yxtkrkgSvkSjjksus ls viukè;kuvkdf"kZrdjusyxrkgSdqNcPpsvU; cPpksa dh vis{kk

vfèkdjksrsgSavkSjdqNcPps dh vk;qtSls&tSls c<+rh tkrhgSoSlsoSlsmUgsaHkk"kk dk fodklgksrktkrkgSvkSjmldkjksukHkh de gksrktkrkgS 10 ekg dh vk;qesatcmlsdqN 'kCncksyusvktkrsgSavkSj 'kkjhfjdgkoHkko ds lkFkogviuhvko';drkvksa dh iwfrZdjus dh dksf'k'kdjrkgS Ms<+ ls 2 o"kZ dh vofèkesacPpksa dk jksukFkksM+k de gkstkrkgSD;ksafd bl vofèkesamUgsaHkk"kk dk fodklvkSjvfèkdgkstkrkgS

tUe ds le; ls ghckydØUnudjrkgSA ;gmldhigyhHkk"kkgksrhgSA bl le; u rksmlsLojksa dk KkugksrkgSvkSj u O;atuksadkA 25 llrkgrdf'k'kqftlçdkj dh èofu;kafudkyrkgS] muesaLojksa dh la[;k vfèkdgksrhgSA

10 ekl dh voLFkkesaf'k'kqigyk 'kCncksyrkgS] ftlsogckj&ckjnksgjkrkgSA

'kS'kokoLFkkesaHkk"kkfodklftl<ax ls gksrkgSA ml ijmldhlaL—fr o lH;rk dk çHkkoiM+rkgSAf'k'kq dh Hkk"kkijmldhcqf)] ifjokj o fo|ky; dk okrkj.kçHkkoMkyrkgSAftucPpksaesarqrykuk ,oagdykukvkfnnks"kgksrsgSa] muesaHkk"kkfodkl dh xfrèkhehgksrhgSA

2-3-2?kqVus ds cy pyusokyscPpksaesaHkk"kkvtZuvkSjvf/kxe%&

tccPps ?kqVuksa ds cy pyrsgSarks ,d çdkj ls muds 'kjhj dk O;k;kegksrkgS- muds iSjksaesarkdrvkrhgSvkSj [kM+sgksdjpyus dh {kerkfodflrgksrhgS- ?kqVuksa ds cy pyus ls f'k'kqdksLokLF; ykHkiSjksaijpyus ls igyscPpksa dk ?kqVuksa ds cy pyuk] çk—frd dk ,d fu;egS-

iSjksa ds cy pyus ls igys] ?kqVuksa ds cy pyus ls f'k'kqdksvusdçdkj ds LokLF; ykHkfeyrsgSa- f'k'kq dk ?kqVuksa ds cy pyukmlds 'kkjhfjd] ekufldvkSjlaosxkRedfodkl ds fy, cgqr t:jh gS-tccPps ?kqVuksa ds cy pyrsgSarksiSjksa ds lkFk&lkFk muds gkFkksa dk HkhbLrsekygksrkgS- bl rjgf'k'kq ds gkFkvkSjiSjnksuksa dh gfì;ksavkSjekalisf'k;ksadksetcwrhfeyrhgSlkFkghmudk 'kjhjyphykcurkgS

tcf'k'kqvius ?kqVuksa ds cy pyrsgSarksmudkiSj 'kjhjdkseksM+uk] ?kqekuklkFkghpyusvkSjnkSM+ustSlh t:jh çfØ;kdks le>rkgSvkSjlh[krkgS- mlds 'kjhjdksçksVhuvkSjdSfY'k;e ;qävkgkj dh vko';drkiM+rhgS- vPNsekufldfodkl ds fy, ;g t:jh gSfdog [kqnphtksadksdjdslh[ksa- blh ds varxZrçk—frd us f'k'kq ds fy, ?kqVuksa ds cy pyus dk fu;efuèkkZfjrfd;kgS-

tcf'k'kqiSjksa ds cy pyrkgSrksmlesaxfrvkSjfLFkfr ds fu;eksadks le>us dh {kerk c<+rh gS- bldslekt ls f'k'kqviuklarqyucukuklh[kukgS-f'k'kq bl çfØ;k ls viuhvka[kksavkSjgkFkksa dh xfresalkeatL; LFkkfirdjukHkhlh[krkgS- ?kqVuksa ds cy pyus ds nkSjkumlsviusvklikl dh phtksa ls lacafèkr le> c<+rh gS-

?kqVuksa ds cy pyrsoätcf'k'kq ,d LFkku ls nwljsLFkkutkrkgSrksmlesavka[kksavkSj –f"V ds fu;eksa dh le> c<+rh gS- bldslkFkghmldh –f"V dh {kerk dk fodklgksrkgS-

bllsigysuotkrvoLFkkesatcf'k'kqdsoyxksnesajgrkFkkrksogds oyviusvklikl dh oLrqvksadksnwj ls ns[k ldrkFkkysfdu ?kqVuksa ds cy pyus ds nkSjkumlesaiklvkSjnwjh dh le> dk fodkliM+rkgS-

bl le> ds vkèkkjijog ;g fu.kZ; djuklh[krkgSfdmlsfdlxfr ls dgkaijigqapukgSfd 'kjhjdksuqdlkuukigqapsrFkknwjh ds vkèkkjij ,d LFkku ls nwljsLFkkuigqapusijfdruk le; yxsxk-A;gf'k'kq dh ftanxh dk ogegRoiw.kZiM+kogStcf'k'kq dk nk;kvkSjck;kefLr"dvkilesalkeatL; LFkkfirdjuklh[krkgS- ,slkblfy, D;ksafd bl le; f'k'kq ,d lkFkdbZdkedjjgkgksrkgSftllsmldsfnekx ds vyx&vyxfgLlksa dk bLrsekygksjgkgksrkgS-

Hkk"k.kijT;knkè;kunsuk] ughadks le>uk] ljyifjfLFkfrlacaèkhvkns'kksa dk mÙkjnukmnkgjj.k ds fy,ck;&ck;djuk] eka ns nks] ugha ds fy, fljfgykuk]rtZuh ;k ;gkardfd 'kCnksa ds lkFkb'kkjkdjrsgq, viuhbPNkvksadkstrkuk] yachrqrykgV ¼v{kjksa ds yacs rkj½ ;k xi'ki ¼Hkk"k.k dh rjg mPpkj.k½

'kCnksa dh udydjus dh dksf'k'kdjuk] ek&ek ;knk&nktSlsvFkZiw.kZrjhds ls 1 ls 2 'kCnksadkslgtrk ls cksyukA

2-3-3 izhLdwyesaHkk"kkvtZuvkSjvf/kxe%&Hkkjrh; ijEijkvksa ds vuqlkjifjokjiwoZ&çkFkfedf'k{kk ds dsUægksrsgSaAekrkckyd dh loZçFkexq: ekuhtkrhgSatksckyddks 'kqHklaLdkjksa dh çsj.kknsdjmldsO;ogkjdkslkekftdrkçnkudjrhgSaAfirkHkhekrk ds

i'pkr~ xq: dk dk;ZdjrkgSatksmls 'kqHkdk;Z dh çsj.kknsdjlnkpkj ds fy, çsfjrdjrkgSaAijUrqvkèkqfudO;Lr thou esaHkkSfrdoknhfopkjèkkjkvksa ds dj.kekrk&firkdksvoljghughafeyrkfdosviusckydksadksLo;af'k{kk nsaldsavkSjmudh ns[k&js[k HkyhçdkjdjldsaA ;g leL;krc ls vkSjvfèkdmriuzgqbZtcekrkऍaHkhO;kolkf;d thou ;kiuesalayXugksxbZaAteZuh ds f'k{kk'kkL=h ÝkscsyiwoZ&çkFkfedf'k{kk ds vkèkqfudtUenkrkekustkldrsgSaAbUgksaus 1837 bZ- esaCysduoxZukeduxjesa

fd.MjxkVZuLdwy dh LFkkiuk dh FkhAèkhjs&èkhjsfd.MjxkVZufo|ky; dh ç.kkyhiwoZ&çkFkfedLrjijlHkhns'kksaesaQSyx;hAHkkjresaiwoZ& çkFkfedf'k{kk ds fy, dksbZlkfofèkdfo|ky; ughaFksoju~ bl mÙkjnkf;RodksekrkvkSjfirkvfofèkd :iesafuHkkrsFksAijUrq ;g ijEijkrHkhrdykHknk;dFkhtcekrk&firklqf'kf{kr] lqlaL—r ,oadÙkZO;ijk;.k FksAijUrqtSls&tSls L=h&f'k{kk vkSjçkS<+ksa dh f'k{kk dh voufrgksrhx;h] ekrk&firkiwoZ&çkFkfedf'k{kk ds fy, v;ksX; gksx,A bl fLFkfresalkfofèkdfo|ky;ksadhavko';drkvuqHkogqbZAHkkjr us teZuh ls gh bl iwoZçkFkfedf'k{kk dh O;oLFkkdksxzg.kfd;kA

2-3-4 Ldwy ds izkajfHkdoषkZ %&çkFkfedf'k{kk dk O;fä ds thou esaoghLFkkugStkseka dk gSA ;g O;fä ds thou dh ogvoLFkkgStcfdlaiw.kZ thou fodklØedksxfrfeyrhgSA bl mez dh f'k{kk thou dh egRoiw.kZf'k{kk gksrhgSAlaHkkoukvksa ls Hkjh

bl voLFkkdkslghfn'kk ml le; fey ik,xhtcmldhfn'kklghgksAlghfn'kk ls rkRi;ZgScPpksa dk 'kkjhfjd] ekalis'kh;] laKkukRed] ckSfènd] l`tukRed] vfHkO;fävkSjlkSan;Zcksèk dk fodklAf'k{kk ds bu y{;ksadksrHkhçkIrfd;ktkldsxktccPpksa ls mudhHkk"kkesackr dh tk,Apwafdf'k{kk ckyddsafærgksrhgSvkSjf'k{kd dh HkwfedkiFkçn'kZd dh gksrhgSA ,slsesa t:jh gksrkgSfdcPpksa ls mudhviuhghHkk"kkesackr dh tk, D;ksafdbllscPpksa ds LokHkkfodfodklesalgk;rkfeyrhgSA

2-4Hkk"kkvf/kxe ds ifj.kke %&

2-4-1 tSfoddkjd

2-4-2lkekftddkjd

2-4-3O;fDrxedkj.k

2-5 izFkeHkk"kk dk vtZu %&tUeysus ds cknckydtksçFkeHkk"kklh[krkgSmlsmldhekr`Hkk"kkdgrsgSaAekr `Hkk"kk] fdlhHkhO;fä dh lkekftd ,oaHkk"kkbZigpkugksrhgSAekr`Hkk"kk ;kuhftlHkk"kk es ek¡ lius ns[krhgS ;k fopkjdjrhgSoghHkk"kk ml cPps dh ekr`Hkk"kkgksxhAblfy, bls ekr`Hkk"kkdgrsgS] izFkeHkk"kk dh 'kq:vkrghifjokjesagksrhgSAtgkackydHkk"kk ds ek/;e ls lclstqM+us dk iz;kldjrkgSaAekr`Hkk"kkesaf'k{kk dk ,d vksjtgkaeuksoSKkfudvkèkkjgSAogha ,d gnrd ;g ns'k dh laL—fr ls HkhtqM+kelykgSAf'k{kk ds fy, xfBratkfdjgqlSudfeVh dh flQkfj'kgSfdlaiw.kZf'k{kk dk vkèkkjekr`Hkk"kkghgksuhpkfg,AmldkdgukgSfdtksljyrk ls

fy[k&i<+ IdrkgSmlh ds ikIlqy>s vkSjLi"VfopkjgksrsgSaAekr`Hkk"kk ds ekè;e Is ghtkfr dh ijaijk] IaL—fr ,oaHkkoukvksadks Ie>k tkIdrkgSAvr% ;g Ikekftdf'k{kk dk vewY; IkèkugksIdrhgSArFkkbIds }kjkIHkhuSfrdvkSjèkkfeZdxq.kçkIrfd, tkIdrsgSaAcPpksa ds Hkkoçdk'ku dk ekr`Hkk"kk ,d IoZJs"BIkèkugSAoghaekr`Hkk"kk Is f'k{kk dh odkyrdjrsgq, xkaèkhthdgrsgSafdf'k{kk ekr`Hkk"kk }kjkghnhtkuhpkfg, D;ksafdvaxzsthHkk"kk ds ekè;e Is f'k{kk nsus Is ckydesaifjfprHkk"kk dh nq:grk ds dkj.kfopkjksa dh Li"VrkughagksrhAekr`Hkk"kkdkscPpktUe Is ghokrkoj.k Is Ih[k ysrkgSA mI Hkk"kkesaviusfopkjksadksLi"Vrk Is O;ädjIdrkgSA

**vtZu,oavf/kxen`f"Vdks.k%&**Hkk"kkvtZuesaKkudksvop srueuxzg.kdjdsIEizs"k.k ds ek/;e Is efLr"desa ,d= djrkgSA ;s izfØ;kekr`Hkk"kk ds vtZuesaiz;ksxgksrhgSfdUrqHkk"kkvf/kxe ,d psruizfØ;kgSbIeasckydHkk"kk ds fo"k; dksKku= O;kdj.k ;k Iajpuk dh 'kDyesaLohdkjdjrkgSvkSjviuh bI izfØ;k Is ckydHkk’kk Is ifjfprgksrkjgrkgSA

**pkWELdh dk cg qHkkf"kdn`f"Vdks.k%&**cgqHkkf"kdn`f"Vdks.k ds Iacaa/k esapkWELdh dk dgukgSfdekuoviustUe Is gh bI ;ksX; gksrkgSfdogdksbZ u dkbsHkk"kkIh[k IdsA muds vuqIkjeuq"; ds cpiu Is ghmIdsefLr"dijigys Is ghHkk"kkdhIajpukcuhjgrhgSAtc ’kq:vkr ds nkSjesadksbZckydfdIhHkk"kkdksIh[krkgSrksogHkk"kkvtZufof/k dk ghiz;ksxdjrkgSAog mI oDrdsoy u, ’kCnIaxzgdksghIh[kukpkgrkgSAnwljhrjQpkWELdh dk

ekuukgSfdckyddsoyvuqdj.k ds ek/;e ls ghfy[ks] ;g laHkoughagksrkgSD;ksafdckydftlokrkoj.kesajgjgkgksrkgSogges ’kkifjrd`r ,oaifjEkkftZrughagksrkA ckyd dh izkjafHkdvk;qesa ¼5&6½ ogekr`Hkkrkkdkscksyusyxrkg SAvxjdksbZHkhO;fDrO;kdj.kh; :i ls xyrokD; cksyrkgSrksckydle>tkrk dh ogxyrcksyjgkgSA bl izdkjpkWELdh us Hkkrkklh[kus&fl[kkus ds fy, cgqHfrkdn`frVdks.kfn;kgSA

**okW;xksRldh dk cgqHkkf"kdn`f"Vdks.k %&**OkkW;xksRldh ,d :lheuksoSKkfudFksAmUgksausekuo ds lkaLd`frdrFkktSo&lkekftdfodkl dk fl)karfn;klkFkghlkFkmUgksausHkkrkklh[kus&fl[kkus ds cgqHkkf’kdn`frVdks.k ds laca/k esacrk;kfdHkkrkk ds fodkleaslaizsrk.k dh ,d cgqrghegRoiw.kZHkwfedkgksrhgSA bl laizsrk.k ds ek/;e ls lkekftdvar%fØ;k }kjktksHkkrkk dk fodklgksrkgSvkSjftlesaeuqr; ,d nwljs ls viusHkko ,oafopkjkas dk lEizsrk.kdjrkgSA bl rjgtc ml lekt ds yksxksa dk ,d nwljs ds lkFkvar%fØ;kgksrhgSrksHkk’kk dk Hkhlairks.kgksrkgSAftllseuqrk; ds fy, laca/kksa dh Hkkrkk dk fodklgksrkgSAcgqHkkfrkd dk vFkZ ,slsO;fDr ls gStksnks ;k nks ls vf/kdHkkrkkvksa dk iz;ksxdjrkAokW;xksRldh ds vuqlkjlEizs"k.k ds mís'; ls lkekftdvarZfØ;ks }kjkHkk"kk dk fodklgksrkgSA okW;xksRldh us n'kZu'kkL= Hkk"kkfoKku] ,oalkfgR; ,oaeukfsoKkuesadk;Zfd;kAHkk"kk ds laca/k

easmudkfopkjFkkfdfopkjksa dk fodkl ,oaHkk"kk ds fodklesaxgjklaca/k gSA

2-6 f}rh; Hkk"kk dk vf/kxe %&

cPps ds O;fDrRofuekZ.kesaekr`Hkk"kk dk egRoiw.kZ ;ksxnkugSAekr`Hkk"kkcPpkviusekrk&firk ,oavU; ifjtuksa ls lqudjghvuqdj.k }kjklh[k ysrkgSvkSjmllsmldkljylaca/k LFkkfirgkstkrkgSAizR;sdcPps ds n`f"Vdks.k] mldh #fp;ksa] {kerkvksamldsewY;ksavkSjeukso`fRr;ksadksHkhvkdkjnsrkgSA Hkk"kklkspus] eglwldjusvkSjphtksa ls tqM+us dk ,d lk/kugSAHkk"kkghcPpsdks le>nkj] fopkjoku] lH; vkSjf'kf{krcukrhgSAekr`Hkk"kkesaghcPps dk efLr"dlclsigysfØ;k'khygksrkgSAvr% ekr`Hkk"kkcPps dh igyhmiyfC/k vkSjlgkf;dkgSAlHkhf'k{kk'kkL=h bl ckrij,der gSafdizkFkfedLrj dh f'k{kk esalaizs"k.k dk ek/;e ekr`Hkk"kkghgksukpkfg,AbldsykHk 'kks/k fd, tkpqdsgSaAfo|ky; cPpksa ds fy, ,slkLFkkugStksdbZn`f"V;ksa ls ?kj ls fHkUugSAfo|ky; ds viusfu;e&dk;nsgSaAcPpsdqN ?kaVksa ds fy, viusifjokj ls nwjgkstkrsgSaAijarqcPpsviuslkFkcgqr 13 izkjafHkd d{kkvksaosQfy, ikB~;ØedqNysdjfo|ky; vkrsgSa&viuhHkk"kk] viusvuqHko ,oanqfu;kdks ns[kus dk viukn`f"Vdks.kvkfnAbUghalcdkmi;ksxdjrsgq, f'k{kddkscPpksa ls vkReh; laca/k cukukiM+rsgSrkfdfo|ky; ds u;sifjos'kesacPpsviukiuvuqHkodjsaAcPpksa ds ?kj dh Hkk"kkvkSjfo|ky; dh Hkk"kk ds chp ds laca/k dksmldhfofo/krk ,oayphysiu ds lkFk ns[kukvR;arvko';d gSAizR;sdcPps dh

Hkk"kkviusvkiesaiw.kZgksrhgSblfy, mlsfdlhHkhrjg lsvk¡dukmfprughagSAcPps ?kj&ifjokj ,oaifjos'k ls izklrcksypky dh Hkk"kk ds vuqHkoksadksysdjghfo|ky; vkrsgSaAigyhckjLdwyesavkusokykcPpk 'kCnksa ds vFkZvkSj muds izHkko ls ifjfprgksrkgSAfyfic) fpg~uvkSjmulstqM+h /ofu;k¡ cPpksa ds fy, vewrZgSa] blfy, tkuus dh ftKklkmRiUugksrhgSAHkk"kkf'k{k.k dh bl izfØ;k ds ewyesacPpksa ds ckjsesa ;g dgkx;kgSfdcPpsnqfu;k ds ckjsesaviuh le>vkSjKku dk fuekZ.kLo;adjrsgSaA ;g fuekZ.kfdlh ds fl[kk, tkus ;k nokc ls ughacfYdcPpksa ds Lo;a dsvuqHkoksavkSjvko';drkvksa ls gksrkgSAblfy, cPpksadks ,slkokrkoj.kfeyuk t:jh gStgk¡ osfcukfdlhjksd&Vksd ds viuhmRlqdrk ds vuqlkjviusifjos'k dh [kkst&chudjldsaA

lanHkZ

- vks>k]ih-ds-] fganahf’k{k.k] vueksyifCyds’ku] ubZfnYyhA
- e/kq] u:yk] fganhf’k{k.k] VoUVh QLV lSUpqjhizdk’ku] ifV;kykA
- “kek]f’koewfrZ] fganhHkk"kkf’k{k.k] uhydeyizdk’ku] gSnjkcknA

- “kek] jktdqekjhjkekdy] fganhf’k{k.k] jk/kk izdk’ku] vkxjkA
- JhokLro] vkj-,l- fganhf’k{k.k] dSyk’kiqLrdlnu] Xokfy;jA
- flga]fujatudqekj] ek/;fed fo|ky;ksaesafganhf’k{k.k] jktLFkkufganhxzaFkvdkneh] t;iqjA
- dqekj] ;ksxs’k] vk/kqfudfgnahf’k{k.k] ,-ih-,p-ifCyf’kaxdkWjiksjs’ku] ubZfnYyhA
- flga]lkfo=h] fganhf’k{k.k] x;kizlkn ,.M lal] vkxjkA

DELED – 03

Hkk"kk;h le> ,oa Hkk"kk dk fodkl
[k.M & 2 Hkk"kk fodkl
bdkbZ & 2 lk{kjrk vkSj Hkk"kk vf/kxe

2-0 ifjp;

2-1 mís';

2-2 fMdksfMax vkSj ,UdksfMax dh rqyuk esa lk{kjrk

2-3 ,d xfr'khy vkSj fodflr izfØ;k ds :I esa i<+uk vkSj fy[kuk lh[kuk

2-4 orZeku Ldwyh f'k{kk ds lanHkZ esa izkjafHkd lk{kjrk dk egRo

2-5 bdkbZ lkjka'k

2-6 viuh izxfr dh tk¡p djsa

2-7 fu;r dk;Z

2-8 ppkZ ,oa Li"Vhdj.k ds fcanq

2-9 lanHkZ xzaFk

2-0 ifjp;&

'kq:vkrh o"kksZ esa i<+uk fy[kuk lh[kuk vR;ar egRoiw.kZ vkSj tfVy gSA lkekU;r% i<+us fy[kus dks dsoy o.kksZ] v{kjksa ;k 'kCnksa dks igpkudj mUgsa cksyus rd gh lhfer ekuk tkrk gS tcfd okLro esa 'kks/k ;g crkrs gS fd i<+uk vkSj fy[kuk Lo;a esa vFkZiw.kZ jpukRed izfØ;k gSA os dsoy ;kaf=d dkS'ky ugha gSA izkjafHkd lk{kjrk ds {ks= esa fd, x, 'kks/k ;g Hkh crkrs gS fd cPpksa dks 'kkyk ls ckgj vkSj 'kkyk ds Hkhrj Hkk"kk vkSj lk{kjrk dk iz;ksx djus ds oSfo/;iw.kZ ,oa lkFkZd voljksa ls ykHk gksrk gSA cPpksa dh lk{kjrk dk fodkl djus ds fy, ;g t:jh gS fd mUgsa mi;qDr ifjos'k rFkk lg;ksx miyC/k djk;k tk,A

Tkc cPpk vkSipkfjd f'k{kk dh 'kq:vkrh o"kksZ esa izos'k djrs gS rks mUgsa fofo/k mís';ksa ds fy, i<+us] ckrphr djus vkSj fy[kus ds oSfo/;iw.kZ volj miyC/k djkrk gSA

fiNys dbZ o"kksZ esa fo'ks"k :I ls 'kq:vkrh o"kksZa esa i<+us &fy[kus ij laokn dks xgurk vkSj foLrkj feyk gSA ekuo lalk/ku fodkl ea=ky; }kjk bl {ks= dks fujarj ,d eq[; ljksdkj ds :I esa egRo izkIr gqvk gSA 2014 esa ea=ky; }kjk le> ds lkFk i<+uk&fy[kuk ij ^i<s+ Hkkjr c<+s Hkkjr* nLrkost izdkf'kr fd;k gS ftlesa 'kq:vkrh o"kksZa esa i<+us&fy[kus dh le> dh egÙkk ij cy fn;k x;k gSA

2-1 mís';&

bl bdkbZ dks iwjk i<+us ds ckn vki l{ke gks ldsaxs&

- fMdksfMax vkSj ,udksfMax dh rqyuk esa lk{kjrk ds egRo dks le>us esasA
  - ,d xfr'khy vkSj fodflr izfØ;k ds :Ik esa i<+uk vkSj fy[kuk lh[kus ds ckjs esaA
  - orZeku Ldwyh f'k{kk ds lanHkZ esa izkjafHkd lk{kjrk ds egRo dks le>us esaA

2-2 fMdksfMax vkSj ,UdksfMax dh rqyuk esa lk{kjrk&

LokHkkfod gS fd ikBd ds ikl ges'kk vius laiw.kZ vuqHko] viuh Hkk"kk vkSj fodkl'khy fopkj rks gksrs gh gS vkSj ftudk iz;ksx og fdlh

Hkh le; i<+rs gq, djrk jgrk gSA ;gk¡ Li"V :Ik ls bl ckr ij /;ku fnykuk bl Loizekf.kr rF; dks crkus dh t:jr blfy, gS] D;ksafd fdlh Hkh izdkj dk vuqeku yxkrs gq, tks LokHkkfod fn[krk gS og okLro esa bruh vPNh rjg lh[ks x, Kku dk ifj.kke gksrk gS fd blds mi;ksx dh izfØ;k esa FkksM+s gh lpsr iz;Ru dh t:jr iM+rh gSA

cgqr ls Hkk"kk&iz;ksx bl LOkpfyr o LokHkkfod Lrj rd igq¡p pqds gSA ge esa ls cgqr ls yksx ;g ugha le> ikrs fd Hkk"kk dh ^,udksfMax* (encoding) o ^fMdksfMax* (decoding) esa O;kdj.k dk iz;ksx ge fdl izdkj djrs gSA fQj Hkh Hkk"kk dk iz;ksx djus okys lHkh viuh jkstejkZ dh cksypky esa okD;&foU;kl esa mPp Js.kh dh dq'kyrk o izoh.krk n'kkZrs gSA

pkWELdh ¼1965½ us Hkk"kk cksyus okyksa }kjk okD;&izLrqrh (Sentence Production Model) dk ,d ekWMy crk;k gS&

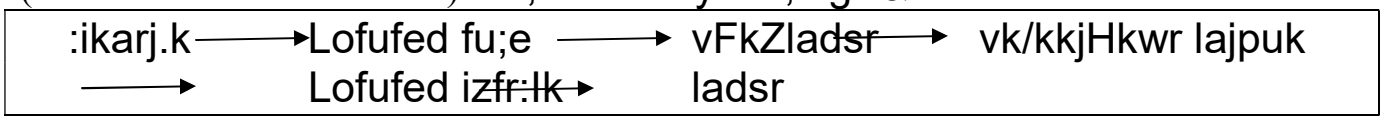

vk—fr & 1

pkWELdh ds vuqlkj Jksrk dk okD;&foopZu ekWMy (Interpretafron Model) ekWMy lajpuk bl izdkj gS&

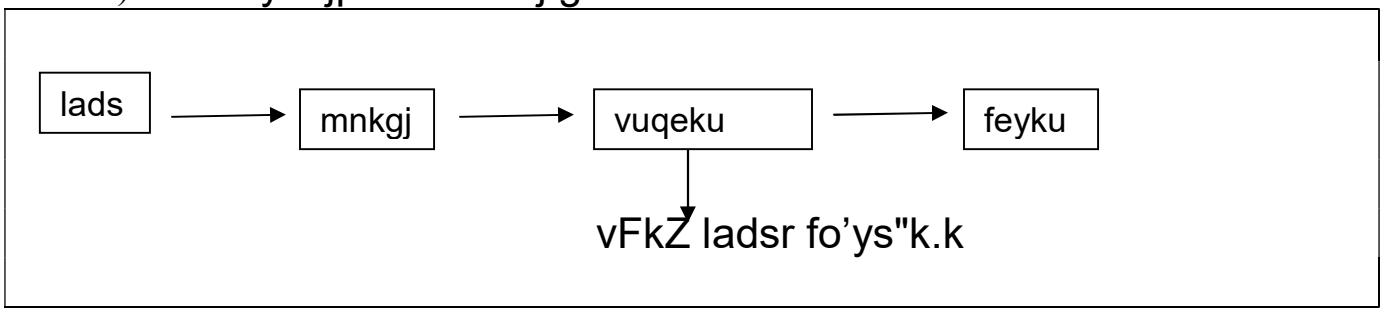

vk—fr & 2

vr% pkWELdh ds fopkj esa] Hkk"kk esa ^,udksfMax* (encoding) dekscs'k ,.M lqfuf'pr Lrj rd igq¡p tkrh gS vkSj blds ifj.kkeLo:Ik tks ladsr feyrk gs og vius vki esa iwjk gksrk gS] ysfdu ^fMdksfMax* (decoding) esa fun'kZu dh izfØ;k dk y{; lans'k ds yxHkx lehi igq¡puk gkskr gSA ftlds ifj.kkeLo:Ik feyus okyk dksbZ Hkh ^dksMsM* ;k feyrk tqyrk ladsr ,d izdkj dk izfrmRikn gksrk gSA

eq[kj okpu ds le; ikBd dks ,d gh le; ij nks dk;Z djus gksrs gSA ml ikB dks bl izdkj ekSf[kd :I ls i<+uk gksrk gS f dog ikB ds Nis gq, laLdj.k

ds lerqY; gksA ftls ^i<us* ds lanHkZ esa ^ladsr* dgsaxs vkSj lkFk gh og tks dwN Hkh i<+ jgk gS mlds vFkZ dk iqufuekZ.k Hkh djsA eksVs rkSj ij pkWELdh ds fuoZpu ekWMy dks esa feyku dh izfØ;k dks ^jhdksfMax* lafØ;k dgk tkrk gSA

ikBd ^dksMsM* xzkQh; fuos'k dks ,d Lofufed ;k ekSf[kd vkmViqV ds :i esa ^jhdksM* (recode) djrk gSA bl izfØ;k esa izk;% vFkZ fdlh lhek rd 'kkfey ugh gksrkA ^;g jhdksfMax* fdlh ,sls O;fDr }kjk Hkh lh[kk tk ldrk gS tks ml Hkk"kk fo'ks"k dks fcYdqy Hkh ugha tkurk gksA mnkgj.k ds fy,] ,d ckj&feVt+okg fd'kksj ;g le>us dh {kerk ds cxSj fd og D;k mPpfjr dj jgk gS] fgcwz fyfi dk ekSf[kd mPpkj.k rks dj ldrk gS ysfdu fgcwz fyfi dks lh[kus ds fy, euk dj ldrk gSA ysfdu tc ikBd] ys[kd dh jpuk ds vFkZ ds iqufuekZ.k ds fy, vFkZ&laxr fo'ys"k.k essa twV tkrk gS] rHkh og ^fMdksM* dj jgk gksrk gSA

eq[kj okpu esa bu nks lafØ;kvksa ds fy, rhu rkfdZd O;oLFkk,¡ (Logical Arrangements) gksrh gSA ikBd ekSf[kd Hkk"kk ds :Ik esa xzkfQd fuos'k ¼lwpukvksa½ dks esa ^fjdksM* dj ldrk gS vkSj fQj ^fMdksM* HkhA og lkFk&lkFk ^fjdksM* vkSj ^fMdksM* dj ldrk gS ;k fQj og igys ^fMdksM* dj ekSf[kd ^vkmViqV* ds :Ik esa vFkZ dks ^,udksM* dj ldrk gSA

'kks/k ds vk/kkj ij ,slk izrhr gksrk gS fd ,sls ikBd tks i<+us esa dqN lhek rd fuiq.krk gkfly dj pqds gS] os pkWEldh ds izfrn'kZ ekWMy ¼vk—fr 2½ ds leku gh lh/ks xzkfQd m~nhikdsa dks ¼fMdksM½ djrs gS vkSj fQj mls vk/kkjHkwr lajpuk dh enn ls ^,udksM* djrs gS vkSj fQj mls vk/kkjHkwr lajpuk dh enn ls ^,udksM* djrs gS] tSlk fd pkWELdh ds okD;&izLrqfr ds ekWMy ¼vk—fr 1½ esa n'kkZ;k x;k gSA mudh ekSf[kd Hkk"kk dk :Ik xzkfQd mn~nhiuksa ls lh/ks lacaf/kr ugha gskrk rFkk blesa 'kCnkoyh vkSj okD; foU;kl ls :ikarj.k 'kkfey gks ldrs gS pkgs vFkZ ogh jgsA ;fn mUgksaus vFkZ dks Bhd ls ugha le>k rks os bl cnys gq, Fkk v/kwjs vFkZ dks gh ekSf[kd] vkmViqV* ds :Ik esa le>dj ^fMdksM* dj ysaxsA

,d lkekU; Hkzkafr ;g gs fd fn, x, xzkfQ+d fuos'k (Graphic Input) dks Lofue fuos'k ds :Ik esa lVhd vkSj Øfed <ax ls ^,udksM* fd;k tkrk gS vkSj fQj FkksM+k&FkksM+k djds ^fMdksM* fd;k tkrk gSA bl /kkj.kk ds vuqlkj vFkZ dh ewy iz—fr lap;h gS tks VqdM+k VqdM+k tqMdj vkdkj

xzg.k djrh gSA n`'; izR;{k.k (Visual Perception) v/;;u Hkh blh fopkj dk leFkZu djrs izrhr gksrk gS fd i<+rs le; gekjk /;ku ,d fuf'pr fcanq ij dsfUnzr gksrk gS ftldk foLrkj nskuksa rjQ cgqr ladh.kZ gksrk gSA pw¡dh bl /kkj.kk dk ekuuk gS fd i<+rs le; ge tks vFkZxzg.k djrs gS og ogh gksrk gS] ftl ij uke dh lh/k esa gekjh n`f"V dsfUnzr gksrh gS] ftls ge ^ukd dh lh/k* (end of the nose) n`f"Vdks.k dg ldrs gSA ekuk tkrk gS fd ;fn ge ukd dh lh/k esa viuh utj dk Nksj c<+k ns rks gekjs i<+us dh xfr o dq'kyrk c<+ tkrh gSA ;fn ge tYnh tYnh ukd dks vkxs ihNs djsaxs ;k ukd vkSj vk¡[k dks ckj&ckj ihNs i<+s gq, ikB ij ys tk,¡xs rks mlls gekjh i<+us dh dq'kyrk de gks tk,xhA

i<+us ds lanHkZ esa ^ukd dh lh/k* okyk n`f"Vdks.k fcYdqy ekU; ugha gksxkA ikBd vk/ks bap esa Nis v{kj ij gh dsfUnzr gksdj izkIr gksus okyh tkudkjh rd gh lhfer ugha jgrkA oLrqr% dbZ 'kks/k dk;kZs }kjk ;g n'kkZ;k x;k gS fd xgu :I ls n`f"V ckf/kr cPps Hkh nwljs lkekU; cPpksa dh rjg i<+uk lh[kus esa l{ke gksrs gSA i<+us dh izfØ;k esa ikBd ,d ugha] cfYd ,d lkFk rhu rjg dh tkudkfj;ksa dk bLrseky djrs gSA fuf'pr gh xzkfQd fuos'k (Graphic Input) ds fcuk iBu ugha gks ldrkA ysfdu ikBd okD; + foU;kl (Syntactic) vkSj vFkZ&foKku (Semantic) dh tkudkjh dk iz;ksx Hkh djrk gSA bl tkudkjh ds vk/kkj ij ikBd fyf[kr fizaV esa D;k vkus okyk gS& bldk vuqeku rFkk iwokZuqeku yxkrk gSA fQj yxk, x, vius vuqeku dh iqf"V og vFkZ foKku vkSj O;kdj.k laca/kh tkudkjh ds vk/kkj ij djrk gSA Hkk"kk esa 'kaCnkMacj rFkk Øfed :dkoVs] ftls ysdj ikBd tks izfrfØ;k djrk gS] og bl iwokZuweku dks laHko cukrs gSA ;gk¡ rd fd ikBd ds n`f"V {ks= ds nk;js esa vkus okyh /kq¡/kyh ,oa vLi"V Nfo;k¡ Hkh vuqeku dks c<+kok nsus ;k mudh iqf"V djus esa lgk;rk dj ldrh gSA

tSls&tSls cPps ds i<+us dk dkS'ky vkSj i<+us dh xfr c<+rh gS] oSls oSls og de ls derj xzkfQd ladsrksa (graphic cues) dk iz;ksx djus yxrk gSA ,sls es ekSu iBu eq[kj iBu dh rqyuk esa nks dkj.kksa ls vf/kd rhoz vkSj dq'ky izfØ;k cu tkrh gS&

1½ ikBd dk /;ku ekSf[kd :Ik ls ^fMdksfMax (decoding) vkSj jhdksfMax (recoding) ;k ß,udksMÞ (encode) djus esa ugh cVrkA

2½ mldh i<+us dh xfr mPpkj.k dh xfr ls ckf/kr ugha gksrhA rc] okLro esa lquus dh rqyuk esa ^iBu* ,d vf/kd dq'ky vkSj rst izfØ;k cu tkrh gS D;ksfd lquuk lkekU;r% Jksrk ds cksyus dh xfr rd gh lhfer jgrk gSA

gky esa fd, x, v/;;uksa ls] ftuesa rku (Pitch) dh fo—fr eqDr rhoz bysDVªkWfud fjdkWfMZxksa dk iz;ksx fd;k x;k] ls ;g Li"V gqvk fd le> dks ckf/kr fd, fcuk lquus dh izfØ;k dks vf/kd rhoz cuk;k tk ldrk gSA

'kq:vkr ikBd dks LokHkkfod :i ls ^fMdksM* (decode) djus ds fy, vf/kd xzkfQd (graphic) tkudkjh dh vko';drk gksrh gS vkSj blfy, mUgsa dq'ky ikBdksa dh rqyuk esa vf/kd ltx gksus dh t:jr gSA xqMeSu ¼1967½ }kjk d{kk ,d ds ikBdksa ij fd, x, ijh{k.kksa ds lk{; n'kkZrs gS fd ;fn muds }kjk i<+h tkus okyh iBu&lkexzh] ftldh Hkk"kk iw.kZ :Ik ls xfBr gS rks os 'kq:vkr ls gh iBu lkexzh ls okD; foU;kl vkSj vFkZ ladsrksa dh tkudkjh fudkyus yxrs gSA

2-3 ,d xfr'khy vkSj fodflr izfØ;k ds :Ik esa i<+uk vkSj fy[kuk lh[kuk&

cPpksa dks i<+dj le>uk fl[kkus dh ckr vDlj dh tkrh gS vkSj blds fy, 'kq:vkrh d{kkvksa esa f'k{kdksa ls fofHké rjg dh xfrfof/k;ksa dh vis{kk¡ Hkh jgrh gS ftlesa dgkuh&dfork lqukuk o mu ij ckr djuk egRoiw.kZ xfrfof/k gSA vkxs tc cPps pkSFkh&ik¡poha esa igq¡prs gS rks foLrkfjr lk{kjrk dh ckr vkrh gSA blesa cPpksa dk fofo/k rjg ds ikBksa ¼VsDLV½ ls okLrk iM+rk gSA bl mís'; dh iwfrZ ds fy, f'k{kd dks vFkZ fuekZ.k ds fofHké rjhdksa dks dke esa ykuk iM+rk gS vkSj lk{kjrk ds mPpLrjhj dkS'kyksa ds fodkl ij Hkh /;ku nsuk gksrk gS] ftuds vUrxZr i<+dj] le>uk] vFkZ fuekZ.k] Hkk"kkbZ lkSUn;Z] lekykspukRed n`f"Vdks.k i;kZoj.k cks/k] laosnu'khyrk] vfHkO;fDr vkfn igyw Hkh 'kkfey gSA d{kk esa dke djrs gq, bu ij /;ku j[kk tkuk pkfg,A blds lkFk gh lk{kjrk dk mís'; cPpksa dks ,d mRlkgh ikBd cukuk] cPpksa esa i<+us dh vknr dk fodkl djuk] lkfgfR;d vfHk:fp txkuk rFkk VsDLV dks lekykspukREkd <ax ls ns[kus dk utfj;k fodflr djuk Hkh gSA okLro esa i<+uk&fy[kuk lkFk lkFk pyus okyh izfØ;k,¡ gS vkSj bl ij lexzrk esa gh dke gksuk pkfg,A

bu mís';ksa dks /;ku esa j[kdj dke djus ds fy, t:jh gS d{kk dh izfØ;kvksa esa cPpksa ds lkFk ikB~; lkexzh ij ppkZ vkSj mUgsa ikB ds lkFk iwoZ Kku o vuqHkoksa dks tksM+us ds ekSds nsukA vDlj ge ikb ds eeZ dks ugha idM+ ikrs vkSj u gh Bhd ls lskp ikrs gS fd ikB vkf[kj D;k dg jgk gSA ikB ds fdu fgLlksa ij ckr djus dh t:jr gS] D;k ckr djuh pkfg, ftlls cPpksa ds vuqHko] dYiuk,¡ 'kkfey gks ik,¡ vkfnA blds ckn

gekjh vf/kdka’k ckrphr rF;kRed igyqvksa rd gh lhfer gks tkrh gS tcfd cPPkksa dks vglkl gksuk pkfg, fd tks ikB i<+ jgs gS og gels Hkh dgh tqM+k gks ldrk gS vkSj bl ikB esa eSa Hkh dgh 'kkfey gw¡A

,d foLrkfjr lk{kjrk ds utfj, ls cPpksa ds i<+uk lh[kus dks d{kk dh ppkZvksa ds }kjk le>us dk iz;kl djsaxs vkSj ;g Hkh tkuus dh dksf’k’k djsxs fd lk{kjrk ds mPp Lrjh; dkS’kyksa ds fodkl dks /;ku esa j[krs gq, d{kk ds fdl rjg ds fØ;kdyki vk;ksftr fd, tk ldrs gSA d{kk esa i<+us o fy[kus dh izfØ;k,¡ lkFk lkFk dSls py ldrh gS vkSj ;s cPpksa ds i<+dj le>us ls dSls tqMh gqbZ gSA

¼1½ ikB ls vius vuqHkoksa dks tksM+uk & ikB ls lacaf/kr cPpksa us vius&vius vuqHko crk, vkSj mUgsa fy[kdj vfHkO;Dr Hkh fd;kA cPpksa ds ys[ku ls Li"V gksrk gS fd ikB vius thou ls tksM ik jgs gS vkSj ekSdk nsus ij os vius vuqHkoksa dks tksM+us dh dksf’k’k dj jgs gSA bu ij cPpksa ls ckr dh tk, rks os vius vuqHkoksa dks lq/kkjdj mls fQj ls Hkh fy[k ldrs gSA

¼2½ ifjos’k ltxrk ,oa laosnu’khyrk& cPps dgkuh;ksa dks visu thou ls tksM+rs gq, vius vuqHkoksa dks crkrs gS vkSj mUgsa fy[krs Hkh gSA dgkuh dk lanHkZ mUgsa bl rjg ds ekSds ns jgk gSA ftlesa cPps i<+us&fy[kus ij ,d lkFk dke djrs gq, Hkk"kk f’k{k.k ds mís’;ksa dh iwfrZ djrs gS ogh cPps vius vkl iM+ksl ds izfr ,d laosnu’khyrk dk ,glkl Hkh lh[krs gSA

¼3½ ikB ds fofHké vFkZ& cPpksa ds lkFk ,sls dk;Z djs ftlls os bl ikjaifjd le> dks ppkZ ds ?ksjs esa yk lds fd D;k gj ikB dk ,d gh vFkZ gS vkSj mldh gh gesa O;k[;k djuh pkfg,A blds lkFk gh ge ;g Hkh ns[k ldrs gS fd cPpksa }kjk vius vuqHkoksa dks fy[kuk mudh vfHkO;fDr dh n`f"V ls rks egRoiw.kZ gS gh ij lkFk gh ;g izfØ;k cPpksa dh i<+us fy[kus dh le> dks le`) djrh gSA

¼4½ dgkuh dk lkj cukuk& dgkuh dk lkj cukuk] mls vius 'kCnksa esa fy[kuk] i<+dj] le>us ds mPp Lrjh; dkS’kyksa esa ls ,d gS bls ge ok;xksRldh ds ^tksu vkWQ izksfDley MsoyiesaV* ls tksM+dj ns[k ldrs gS ftlesa cPps ds laKkukREkd Lrj ij ,d pqukSrh izLrqr djus dh ckr dh

tkrh gS vkSj mlls cPps tw>us dk iz;kl djrs gSA gekjs Ldwyksa esa bl rjg ds dke djus esa ekSds de gh feyrs gSA

¼5½ vfHkO;fDr& cPps fy[kus ds nkSjku viuh iwoZ esa i<+h jpukvksa dh /kjukvksa] okD;ksa] 'kCnksa dks Hkh vius ys[ku esa mi;ksx djrs gSA blls ;g Hkh le> esa vkrk gS fd i<+uk&fy[kuk ,d lkFk tqMs+ gq, gS vkSj ;s lkFk lkFk pyus okyh izfØ;k,¡ gSA

cPps dgkfu;ska dh lajpuk dks cgqr tYnh idM+rs gS vkSj mldk mi;ksx djrs gq, viuh vfHkO;fDr izdV djrs gS c'krZs ge blds fy, mUgsa fu;fer ekSdk iznku djsaA

¼6½ lekykspukRed lk{kjrk& cPps ys[ku d{kk esa gqbZ ppkZ dks vius 'kCnksa esa fy[kus dk iz;kl djrs gSA muds ys[ku esa ikB dks lekykspukRed n`f"V ls ns[kus dk iz;kl Hkh fn[kkbZ iM+rk gSA ;gk¡ ;g Hkh lksp ldrs gS fd ,d ikB ij cPpksa ls D;k&D;k ckr dj ldrs gS vkSj ;g ckr D;ksa djuk pkfg,A blds fy, gesa Hkk"kk f'k{k.k ds O;kid lanHkZ dks /;ku esa j[kuk iMsxkA

bl izfØ;k ls ge ;g Hkh le> ldrs gS fd lk{kjrk vius vki esa lk/; ugha gS cfYd i<+dj le>uk] vFkZfuekZ.k] Hkk"kkbZ lkSan;Z lekykspukRed n`f"Vdks.k] I;kZoj.k cks/k] laosnu'khyrk] vfHkO;fDr vkfn dkS'kyksa dk lewg vkSj l'kfDrdj.k dk lk/ku gSA bldh 'kq:vkr cPpksa ds lk{kjrk f'k{k.k esa fn[kuh pkfg,A cPpksa dks flQZ fpUg dks igpkuuk ;k vFkZ fufeZr djuk gh ugha fl[kk;k tkuk pkfg,] cfYd mUgsa vius thou esa ikBksa dk mi;ksx djus vkSj mu ikBksa dh leh{kk djus ds fy, Hkh izksRlkfgr djuk pkfg,A

;g Hkh Li"V gS fd vxj cPps dks ekSdk feys rks os ikB esa vius vuqHkoksa dks tksM+rs gq, mlds vFkZ cukrs gSA ;s vuqHko fdlh nwljs ds vuqHko ls derj ugha ekus tk ldrsA bu lcdk egRo gSA geus ;g Hkh ns[kk fd i<+h gqbZ lkexzh cPpksa dks fy[kus dk vk/kkj nsrh gSA fy[kus dh izfØ;k esa os iBu lkexzh dh lajpuk dks idM+rs gq, [kqn lkspdj fy[kus dk iz;kl djrs gSA cPpksa d sys[ku dks ,d ^izfØ;k* ds :Ik esa ns[kus dh t:jr gS u fd vkf[kjh mRikn ds :Ik esaA ys[ku ij cPpksa ls ckrphr djuh pkfg, vkSj mls csgrj djus ds fy, lq>ko nsus pkfg,A bl izfØ;k esa f'k{kd vPNs ys[kus ds uewus cPpksa dks fn[kk ldrk gS vkSj mu ij ckrphr dj ldrk gS ftlls cPpksa dks vPNs ys[ku ds fofHké igyw le> esa vk,¡A i<+us

fy[kus dh izfØ;k esa vDlj f’k{kdksa ls ;g ckr Hkh mHkjdj vkrh gS fd cPps orZuh] O;kdj.k dh xyrh djrs gSA gesa ;g yxrk gS fd cPpksa dh vfHkO;fDr ij vf/kd /;ku nsus dh t:jr gSA orZuh] O;kdj.k ij cPpksa ls ckr dh tk ldrh gS] mUgsa lq>ko fn, tk ldrs gs ysfdu fdlh ,d 'kCn dks ckj ckj fy[kus dk vH;kl djkuk mldk lgh gy ugha gSA ge ;g Hkh le> lers gS fd cPps ftruk i<+saxs o fy[ksaxs mudh Hkk"kk mruh gh le`) gksxhA

bu fØ;kdykiksa ls ;g ckr Li"V gksrh gS fd gem Pp izkFkfed d{kkvksa esa izkjafHkd lk{kjrk dks O;kid lanHkksZa esa ns[kus dk iz;kl djsa vkSj mlds vuqlkj dke djsa] u fd dsoy cPpksa dks ikB ls tkudkjh iznku djsaA

blds varXkZr ;g Hkh lkspuk pkfg, fd cPpksa dk i<+uk fy[kuk dsoy ikB~; iqLrdksa esa gh dSn u gks tk,A cPpksa dks cky lkfgR; o vU; :fpdj lkexzh i<+us ds fy, nsuh pkfg,A

bls i<+uk fy[kuk fl[kkus ds mís’;ksa esa lekfgr :i ls ns[kuk pkfg, vkSj bu lcdksa tksMrs gq, gh cPpksa ds ,d ikBd cuus dh izfØ;k dk vkdyu djuk pkfg,A i<+us fy[kus dh izfØ;k,¡ lkFk&lkFk pyrh gS vkSj ,d nwljs dks le`) djrh gSA

2-4 orZeku Ldwyh f’k{kk ds lanHkZ esa izkjafHkd lk{kjrk dk egRo&

vkt+knh ds igys ds fnuksa ls gh Hkkjr esa T;knk ls T;knk yksxksa dks lk{kj cukus ds y{; dh vkdka{kk jgh gSA oSls] y{;ksa vkSj okLrfodrk ds chp cM+h [kkbZ gSA gkyk¡fd ;gk¡ lk{kjrk dk izfr’kr c<+k gS] ysfdu tula[;k esa fuj{kjska dh dqy la[;k esa deh ugha vkbZ gSA okLro esa] vkt ;g igys ls dgh T;knk gks pqdh gSA lk{kj le>s tkus okys vf/kdka’k yksx ¼tux.kuk ds mnkj ekudks ds dkj.k½ tks Hkh i<+rs gS] mldk vFkZ le>us esa l{ke ugha gksrsA bl fLFkfr dks ysdj fd, x, v/;;u vkerkSj ij ?kj ls lacaf/kr dkjdksa dh Hkwfedk dks mtkxj rks djrs gS] ysfdu lk{kjrk dh fujk’kktu fLFkfr dks le>us ds fygkt+ ls gesa Ldwy ls lacaf/kr dkjdksa ij Hkh leku :Ik ls /;ku nsus dh t:jr gSA ¼dqekj] 1992½

gekjs ns’k esa lk{kj cukus ds fy, lqfo/kk,¡ miyC/k djkus dh izkFkfed ftEesnkjh Ldwyksa ij gS] tks vf/kdka’k cPpksa ds fy, lh[kus

dk ,dek= LFkku gSA gkyk¡fd Hkk"kk f'k{kk ij ppkZ djrs le; Hkh lk{kj cuuk lh[kus ij de /;ku fn;k tkrk gSA

izkFkfed vkSj ek/;fed f'k{kk dh jk"Vªh; ikB~;p;kZ% :ijs[kk ¼u-lh-bZ-vkj-Vh] 1998½ tks fd pfpZr Ldwyh f'k{kk dh jk"Vªh; ikB~;p;kZ ¼u-lh-bZ-vkj-Vh] 2000½ dk iwoZorhZ nLrkost gS eSa Hkh lk{kj cukuk lh[kus dks cgqr de LFkku fn;k x;k gSA ;g nLrkost cl bruk gh dgrs gS fd] ßizkFkfed Lrj ds vkjafHkd nks lkyksa esa cPps dks viuh ekr`Hkk"kk@izknsf'kd Hkk"kk esa i<+uk fy[kuk lh[kus ds cqfu;knh dkS'ky gkfly djus esa enn djuh pkfg,A ;g nLrkost mPpkj.k] Loj ds mrkj p<+ko] lqys[k vkSj orZuh ds lkFk&lkFk cgqr la{ksi esa le> dk mYys[k djrk gSA lk{kj cuuk lh[kus dks brus Hkh gYds rjhds ls ugha ysuk pkfg,] D;ksafd lk{kj cuus esa vlQyrk gj rjg ds 'kSf{kd foLrkj esa lh[kus dh izfØ;k ij vlj MkysxhA

Hkkjr dh izkFkfed Ldwyksa esa i<+uk&fy[kuk lh[kus ls lacaf/kr lexzh vkSj mlds funsZ'kksa dh xq.koÙkk dks ns[kuk t:jh gSA Ldwyksa esa v/;kiu dk dsUnz fcanq ikB~;iqLrds gS] QyLo:I ikB~;iqLrdksa ds fo'ys"k.k ls irk pysxk fd Ldwyh lanHkZ esa cPps lk{kj cuuk lh[kus ds fy, fdl rjg ds funsZ'k xzg.k djrs gSA

gekjk dsUnz fcanq vkjafHkd d{kkvksa esa bLrseky gksus okyh ikB~;iqLrdksa fgUnh izosf'kdkvksa (Primers) ij vk/kkfjr gSA

vf/kdka'k Hkkjrh; d{kkvksa esa lk{kj cukus ds fy, izosf'kdkvksa dk bLrseky fd;k tkrk gS] ftUgsa [kklrkSj ij i<+uk fl[kkus ds edln ls rS;kj fd;k tkrk gSA cky lkfgR; tSlh nwljh iBu lkexzh ds vHkko esa i<+uk fl[kkus esa ;s izosf'kdk,¡ egRoiw.kZ Hkwfedk fuHkkrh gSA izosf'kdk,¡ lk{kjrk dh ikB~;p;kZ dk vk/kkj cukrh gS vkSj ;g fu/kkZfjr djrh gS fd muds }kjk dSls i<+k;k tk,A ,slh fLFkfr esa bldh vf/kd laHkkouk gS fd xSj&lk{kj i`"BHkwfe ls vkus okys cPpksa dks dsoy blh rjg ds ikB ns[kus vkSj lquus dks feys vkSj bUgha ikBksa ds vk/kkj ij i<+uk&fy[kuk lh[kus dh dq'kyrk gkfly dj os i<+uk fy[kus ds fo"k; esa viuh jk; cuk ysaA ,d ,sls ns'k esa] tgk¡ Ldwyh thou ds vkjafHkd o"kksZa esa gh Ldwy NksM+ nsus okyksa (dropouts) dh nj cgqr vf/kd gS vkSj lk{kjrk nj cgqr de gS] bu ikBksa dh Hkwfedk

dgha T;knk egRoiw.kZ gks tkrh gSA blfy, budk ewY;kadu cgqr lko/kkuh ls fd, tkus dh t:jr gSA

ikjaifjd :I ls] i<+us dh ladh.kZ vo/kkj.kkREkd le> ;g Fkh fd i<+uk ßfMdksfMaxÞ dh izfØ;k gSA ;kuh fyf[kr Hkk"kk dk ekSf[kd ¼oU;kRed½ lekukFkhZ [kkstuk gh ßi<+ukÞ gSA lk{kj cuuk lh[kus ds lanHkZ esa tks iz/kku n`f"Vdks.k Fkk ¼i<+uk lh[kus ds fy, rS;kj gksuk½ mlds vuqlkj ßi<+uk lh[kusÞ dks ^fMdksM djuk* lh[kus ds :i esa ns[kk x;kA tkfg+j rkSj ij] rc i<+uk lh[kus ds fy, fn, tkus okys funsZ’kksa dk fufgrkFkZ Fkk& ^fMdksfMax* esa fuiq.krk gkfly djukA i<+us ls tqMs gq, midkS’kyksa esa ,d&,d djds fuiq.krk gkfly djus ij ^fMdksfMax* esa fuiq.krk fey tkrh FkhA blds vykok] i<+uk lh[krs le; Hkk"kk ds iz;ksxkRed i{k dh ctk; mlds vkSipkfjd i{k ij tksj nsus dh izo`fÙk Fkh ¼Vhy (Teale) vkSj lYt+ch (Sulzby, 1986))

izosf’kdkvksa ds ikBksa dk v{kj rFkk /ofu;ksa ds bnZ&fxnZ jpk x;k Fkk vkSj cPpksa ls ;g vis{kk dh xbZ Fkh fd os v{kj o /ofu ds chp rkyesy cSBkus esa egkjr gkfly djs rFkk 'kCnksa dks ^fMdksM* djus ¼mudk vFkZ le>us½ ds fy, v{kjksa vkSj /ofu dks feykuk lh[ksaA bl rjg ds lkexzh&fuekZ.k ds ihNs ;g ekU;rk Fkh fd ßi<+uk lh[kukÞ uhps ls Åij tkus dh izfØ;k (Bottom up Approach) ftlesa NksVs&NksVs VqdM+ksa ls ,d lexz curk gS vkSj dksbZ Hkh vyx&vyx VqdM+ksa dks Øe’k% lh[kdj lexz dks lh[k ldrk gSA

gky ds o"kksZa esa i<+us ds bl utfj, dks pqukSrh nh xbZ gSA ,d oSdfYid ut+fj, ^uoksUes"kh lk{kjrk (emergent literary) us iz/kkurk gkfly dh gSA tks fd i<+us vkSj fodkl dh ,d fHké vkSj O;kid vo/kkj.kk ij vk/kkfjr gSA lk{kjrk vc dsoy ^fMdksfMax* ds :Ik esa gh ugha cfYd i<+us dh iwjh fØ;k ds :i esa ns[kh tkrh gS] ftlesa le>uk Hkh 'kkfey gSA uoksUes"kh lk{kjrk dk ut+fj;k ,sls vFkZiw.kZ ikBksa ls laokn djus dh odkyr djrk gS] i<+uk fy[kuk lh[kus] ftuesa vly mís’;ksa ds lkFk lkFk vkuan Hkh feys& ;g utfj;k Hkk"kk ds dsoy /ofu i{k ij /;ku ugha nsrk] cfYd Hkk"kk ds lHkh i{kksa ¼vFkZ laca/kh] okD; foU;kl laca/kh vkSj vk—fr&/ofu laca/kh½ ij cy nsrk gSA

ghcVZ (Hiebert) (1994) ds vuqlkj izkekf.kd fØ;kdyki cPpksa dks vkuan vkSj vkilh ckrphr ds fy, lk{kjrk dk rRdky iz;ksx djus esa enn djrs gSA ;s Ldwyksa esa lk{kj cukus okys funsZ'kksa ds <jsZ ij pyus okys fØ;kdyki ugha gS] ftlesa fd lk{kjrk dk Hkfo"; ds fdlh ,sls mi;ksx ds edln ls VqdM+ksa esa vH;kl djk;k tk,] ftls ifjHkkf"kr ugha fd;k x;k gksA blds vykok i<+uk fy[kuk vklku gks tkrk gS tc og lw>cw> ;qDr gks] fnypLi gks vkSj izklafxd gksA

lk{kjrk ,d egRoiw.kZ eqn~nk gS] fQj Hkh ;g vk'p;Z dh ckr gS fd lk{kjrk dks dkjxj cukus okyh izfØ;kvksa dks bruh dBksjrk ls ut+jvankt fd;k x;kA blfy,] lk{kj cuuk lh[kus dh izfØ;k ij ppkZ djus ds fy, vkSj Ldwy esa bls fdlh rdZlaxr fcanq ij 'kq: djus ds fy, ;g cgqr vko';d gS fd uoksUes"kh lk{kjrk ds tufj, ds vk/kkj ij Bksl ifjorZu fd, tk,A

2-5 bdkbZ lkjka'k&

bl bdkbZ esa geus Hkk"kk vf/kxe vkSj lk{kjrk ds ckjs esa tkukA pkWELdh ds okD; izLrqfr ,oa okD; fuopZu ekWMy ds }kjk fMdksfMax ,oa ,udksfMax dks le>kA ,d xfr'khy vkSj fodflr izfØ;k ds :i esa i<+us vkSj fy[kus ds ckjs esa tkudkjh yh ,oa orZeku Ldwyh f'k{kk ds lanHkZ esa izkjafHkd lk{kjrk ds egRo dks le>kA

2-6 viuh izxfr dh tk¡p djsa&

- Hkk"kk dh ^,ukdsfMax* o ^fMdksfMax* esa O;kdj.k dk iz;ksx fdl izdkj gksrk gSA
- Hkk"kk esa okD;&foU;kl ,oa vFkZ&foU;kl dks le>kb,\

2-7 fu;r dk;Z

iz'u& cPpksa ds lk<+us&fy[kus ij ifjos'k ltxru ,oa laosnu'khyrk dk D;k egRo gS\

2-8 ppkZ ,oa Li"Vhdj.k ds fcanq&

2-8-1 ppkZ ds fcanq&

2-8-2 Li"Vhdj.k ds fcanq&

2-9 lanHkZ xzaFk&

¼1½ ,u-lh-bZ-vkj-Vh ¼2005½ jk"Vªh; ikB~;p;kZ dh :ijs[kk] ubZ fnYyhA

¼2½ pkWELdh] ukvkse ¼1965½] izkstsDV lk{kjrk ij O;k[;ku] dkWusZy fo’ofo|ky;]

twu 2018

¼3½ xkyVu] ,e ,oa fofy;elu] ts ¼1992½ izkFkfed d{kk esa lkewfgd fØ;k]

yanu@U;w;kWdZ% jkmVyst

¼4½ pkWELdh] ,u] ¼1959½ ßfjO;w vkWQ ch- ,Q fLduj % ocZy fcgsfo;j] ySaxost

D.El.Ed. - 03
Understanding language and early language development
Block- 2 Language development
खण्ड 2 भाषा विकास
इकाई –3 भाषा एवं पाठ्यचर्चा संचालन (आदान–प्रदान)

इकाई संरचना

3.1 परिचय
3.2 उद्देश्य
3.3 भाषा के कार्य
    3.3.1 कक्षा में भाषा के कार्य
    3.3.2 कक्षा के बाहर भाषा के कार्य
3.4 भाषा अधिगम तथा भाषा के माध्यम से अधिगम
    3.4.1 भाषा के माध्यम से अधिगम
    3.4.2 विषय के रूप में भाषा और माध्यम भाषा में अंतर
3.5 द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे
    3.5.1 शिक्षकों के लिए निहितार्थ
3.6 बहुभाषी कक्षाएँ
    3.6.1 विविधता में आवश्यकता पूर्ति हेतु चुनौतियाँ
    3.6.2 विविधता में आवश्यकता पूर्ति हेतु रणनीतियाँ
3.7 बहुभाषावाद
    3.7.1 एक संसाधन के रूप में
    3.7.2 एक रणनीति के रूप में
3.8 इकाई सारांश
3.9 निहित कार्य
3.10 चर्चा तथा स्पष्टीकरण के बिंदु
3.11 संदर्भ

3. 1 प्रस्तावना (Introduction)

भाषा अभिव्यक्ति का उत्तम साधन है, मनुष्य भाषा के द्वारा सहजता एंव सरलता से एक –दूसरे के क्रियाकलापों व आचार –विचारों को समझ सकता है। मनुष्य सारा भाषा का निर्माण एक देन है तथा यह अतिविकासशील रूप में है, मनुष्य द्वारा जो भी ज्ञान संजोया गया है। वह भाषा के द्वारा ही संभव ही पाया है। भारत हर रूप में एक विविध्ता लिए हुए देश है, अतः भाषा में भी यह बहुभाषा लिए हुए है। बहुभाषावाद एक व्यक्ति ,वक्ता या समुदाय के द्वारा कई

भाषाओं के उपयोग को बढ़ाता देने का कार्य करता है साथ ही सामजिक एक व्यक्तिगत विकास के लिए बड़ी चुनौती भी है। वही द्विभाषी व्यक्ति दो या दो से अधिक भाषाओं क उपयोग करने की क्षमता रखते है।

3.2 उद्देश्य (Objectives)

- भाषा का अर्थ एंव परिभाषा को समझ पायेगे।
- भाषा के कार्यों को कक्षा के अंदर एवं बाहर समझ सकेंगे।
- भाषा अधिगम के प्रक्रिया को तथा उसके उपयोग को बता सकेगे।
- द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे तथा शिक्षकों के लाभों पर चर्चा कर सकेंगे।
- भारत में बहुभाषा की विविधता की आवश्यकता पूर्ति के लिए चुनौतियों एंव रणनीतियों को व्याख्या कर पायेगे।
- बहुभाषावाद को एक संसाधन तथा रणनीति के रूप में समझ विकसित कर सकेंगे।

3. 3 भाषा के कार्य :– (Functions of language)

भाषा के कार्य दो भागों में विभाजित है, पहला, प्राथमिक कार्य तथा द्वितीय कार्य, इसका वर्गीकरण निम्न प्रकार से है। चित्र 1.1 देखें

1. अभिव्यक्ति कार्य– भाषा हमें अपने विचारों, अनुभवों को साझा करने में , दूसरों को समझने में मदद करती है । ऐसे शब्द भावनाओं एवं छापों को व्यक्त करने के लिए किया जाता है ।

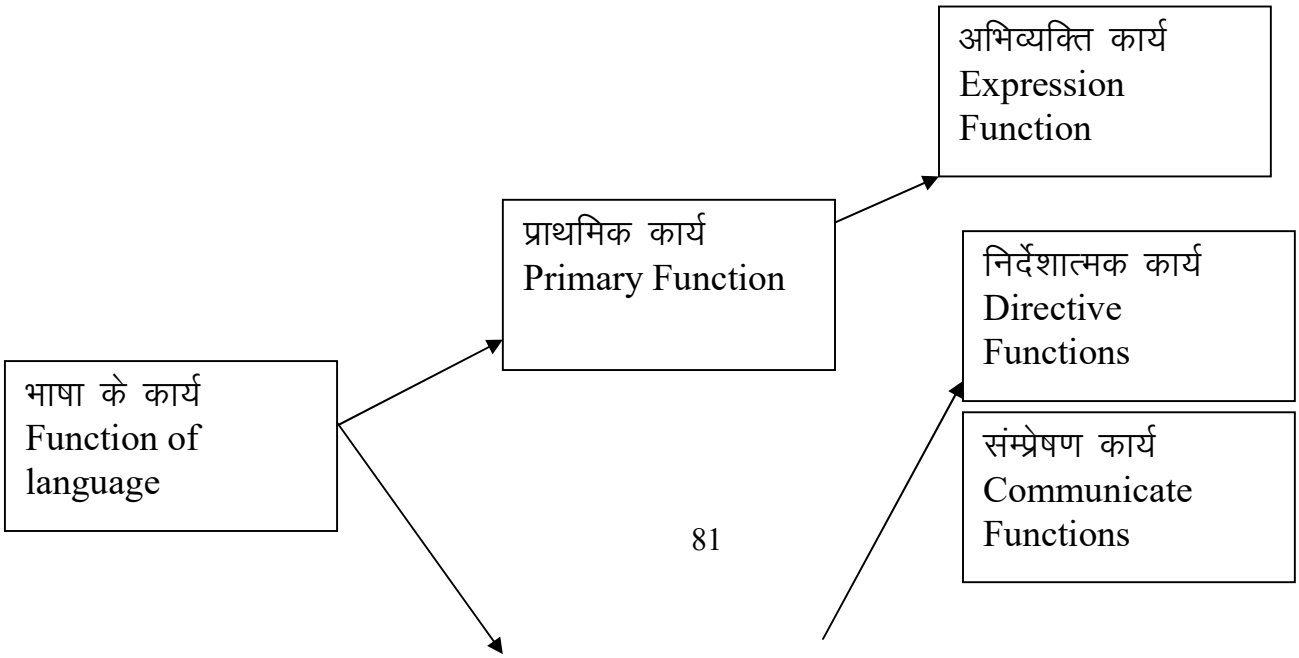

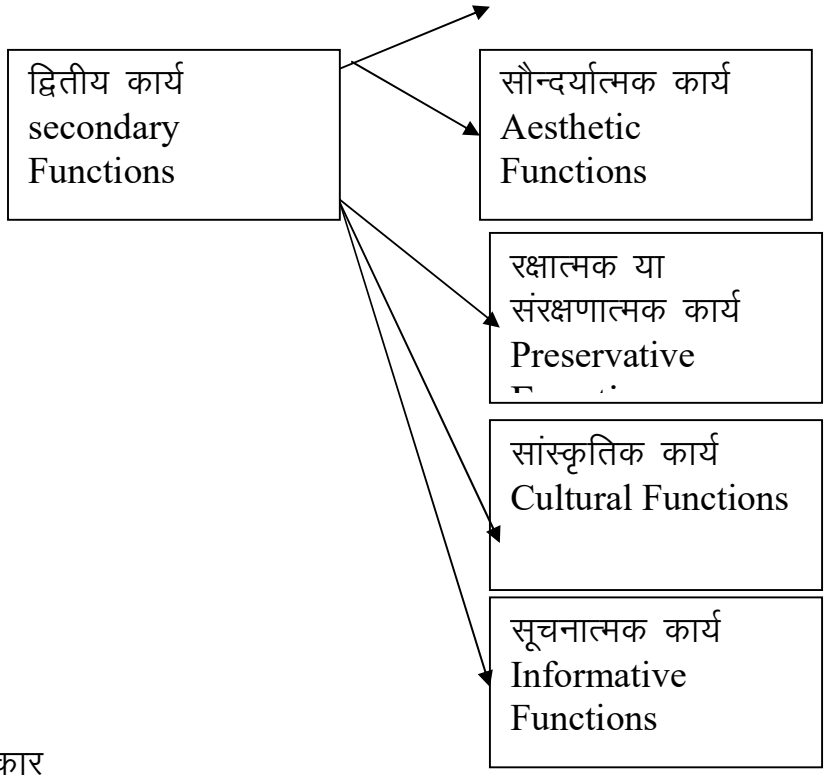

चित्र 1.1 भाषा के कार्यों के प्रकार

2. निर्देशात्मक कार्य – भाषा का निर्देशन कार्य कुछ क्रियाओं या प्रतिक्रियाओं को प्रेरित करने के लिए किया जाता है। इसका उदाहरण है–कमांड/आदेश देना, अनुरोध करना आदि। इससे सामाजिक नियंत्रण एंव पारस्परिक संपर्क के कार्य है।

3. संम्प्रेषणात्मक कार्य– हम हर स्थिति में भाषा का प्रयोग करते हे। यह संम्प्रेषण का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है, हमारी आवश्यकताएँ हमारी भाषा निर्धारित करती है, क्योंकि हम जिस प्रकार की भाषा चुनते है, जो हमारी जरूरतों के लिए सबसे प्रभावी है।

4. सैन्र्यात्मक कार्य– यहाँ शब्दों और वाक्यों को भाषाई कलाकृतियों के रूप में माना जाता है। यह काव्य कला के उपकरण के यप में मदद करता है। उदाहरण 'भव्य' 'सुरूचिपूर्ण' आदि कवि व लेखक।

5. परिरक्षात्मक कार्य– मनुष्य अपने ज्ञान, अनुभवों एवं भावों को परिस्थित करता है , अधिगम के द्वारा वह उनको अपने मासिक में संग्रहित /रक्षीत कर, दैनिक जीवन में यथास्थिति पर उनका प्रयोग करता है।

6. सांस्कृतिक कार्य– सामाजिक पृष्ठीाूमि ,दृष्टिकोण एवं लोगों की उत्पति यह सब किसी भी भाषा को निर्धारित करता है। भाषा सामाजिक संगठन के प्रकार से संबंधित है।

7. सूचनात्मक कार्य – यह हम संदेश देने, चीजों का वर्णन करने तथा श्रोताओं को नई जानकारी देने में मदद करता है। यह सत्य और मूल्य के रूप में भी ऐसे शब्दों से संबंधित है। यह शब्द ज्यादातर वर्णनात्मक होते है।

3.3.1 कक्षा में भाषा के कार्य (Functions of language in Classroom) :– भाषा एक औजार है जिसका इस्तेमाल हम कक्षा में होने वाले शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के लिए करते है, कक्षा में जुड़ने के लिए और जीवन जगत को प्रस्तुत करने के लिए भाषा का प्रयोग आवश्यक है। यह सब के लिए जाँच , तर्क तथा संप्रेषण की सहायता से संभव होता है। कक्षा में भाषा के कार्य निम्न प्रकार से है–

1. भाषा शिक्षा व ज्ञान का मुख्य साधन – कक्षा में भाषा के माध्यम से ही समस्त संज्ञानात्मक ज्ञान दिया जाता है। भाषा से ही प्राचीन और नवीन ज्ञान, तथा सभी विषय– वस्तु की जानकारियां एंव विश्व को जानने एंव पहचानने का सामर्थ प्राप्त होता है। भाषा के माध्य से ही बच्चों के व्यक्तित्व का विकास होता है।
2. भाषा विचार –विनिमय का सरलतम एंव सर्वोत्कृष्ठ साधान है– कक्षा में बच्चे भाषा को स्वाभाविक एंव अनुकरण के द्वारा सीखते है। बच्चों का शिक्षक एवं अपने सहपाठीयों के साथ विचार–विनिमय , तथा ज्ञान के आदान–प्रदान का सर्वोत्तम साधन है।
3. व्यक्तित्व निर्माण में सहायक – बच्चे अपनी अभिव्यक्ति हेतु भाषा का प्रयोग करते है, अपने विचारों और भावों को सफलतापूर्वक व्यक्त करना तथा अनेक भाषाएं बोलना अच्छे व्यक्तित्व के लक्षण है। अतएव प्रभावशील व्यक्ति के लिए स्पष्ट अभिव्यक्ति अति–आवश्यक है।
4. संप्रेषण का आधार– कक्षा में समझ संप्रेषण एंव संचालन प्रमूख रूप से भाषा के माध्यम से ही होता है। भाषा संप्रेषण का मूल आधार है। कक्षा में ज्ञान संचार, विचार विनिमय , एवं सामाजिक सांस्कृतिक भाषा द्वारा ही आदान –प्रदान का साधन बनती है।
5. चिन्तन एवं मनन का स्त्रोत – हम भाषा द्वारा ही विचारों की ऊँचाईयों के कारण ही सभी प्राणियों में शिरोमणि समद्धा जाता है, इन्हीं कारणों से मनुष्य विभिन्न क्षेत्रों की नवीनतम जानकारी एंव ज्ञान के भण्डार में सक्षम हो पाया है। विश्वशांति एंव मानव एकता के प्रयास निरतंर प्रयत्नशील है।
6. शिक्षा की प्रगति की आधारशिला– समस्त ज्ञान–विज्ञान के ग्रन्थ भाषा में ही लिपिबद्ध होते है। यदि भाषा न होती तो भाषा के स्वरूप का भी निर्माण नही होता । इसी प्रकार यदि शिक्षा की व्यवस्था न होती तो मनुष्य सभ्यता व संस्कार प्राप्त नहीं कर पाता, अतः ज्ञान की अपलब्धता प्राप्ति के लिए भाषा जरूरी है । भाषा ही सभ्यता के निरन्तर विकास की कहानी की रूपरेखा निर्धारित करती है।
7. कौशल विकास भाषा के दो रूप है– कथित एंव लिखित, कक्षा में अधिगम –प्रक्रिया इन्हीं भाषा रूपों से होती है, अतः बोलकर एवं लिखकर ही बच्चे सीखते है, भाषा बच्चों में चार कौशली का विकास करती है लिखना, बोलना, पढ़ना एवं सूनना ।

3.3.2 कक्षा के बाहर भाषा के कार्य (Functions of language outside classroom)–

भाषा के मुख्य रूप से यह चार कार्य है–

1. निर्देशों के आदान–प्रदान के लिए
2. सूचनाओं , समाचार तथा जानकारी के आदान–प्रदान के लिए
3. भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति तथा सम्प्रेषण के लिए
4. शिष्टाचार के निर्वहन के लिए

1. निर्देशों के आदान–प्रदान के लिए – बच्चों को कक्षा के बाहर, दैनिक जीवन में विभिन्न निर्देशों ,आदेशो एंव दिशानिर्देशों को प्रभावित रूप से पालन करना पडता है , यह मौखिक अथवा लिखित दोनों रूप से ही सकता है। विद्यालय में होने वाली सभी गतिविधियों , के आदेश एव निर्देश ंपड़ , वह उनका सही ढ़ग से पालन कर सकता हे, इसी से बच्चों में समुदाय में कार्य करने की क्षमता भी बढ़ती है। भाषा से ही समाज के विभिन्न वर्गो तथा व्यक्तियों के कार्यों में समन्वय स्थापित होता है। प्रशासन तंत्र से लेकर कारखानों तथा हर कार्य निर्देशों के कारण ही व्यवस्थित तथा सुचारू ढ़ेग से संचालित होते है।

2.सूचना समाचारों एंव जानकारील का आदान–प्रदान भाषा समुदाय को साझा जानकारी के एक तंत्र से जोड़कर उन्हें प्रबल सामूहिक शक्ति प्रदान करती है।, समुदाय के सदस्यों को एक जुड रखने में, उन्हें समुदाय के हित में कार्य करने के लिए प्रेरित करने का काम सूचना समाचारों एंव जानकारी के सामयिक आदान–प्रदान पर निर्भर करताह` और इसमें भाषा अहम! भूमिका निभाती है। सामाजिक परिवेश में होने वाली घटनाओं तथा दैनिक जीवन में होने वाले विभिन्न कार्यकलापों की सूचना एवं जानकारी बच्चों को जागरूकता हेतु अनिवार्य है, यह सभी कार्य भाषा द्वारा ही सम्पन्न किये जा सकते है रही प्रगति की सूचना एवं जानकारी मिल पाती है।

3. विचारों एंव भावनाओं की अभिव्यक्ति –भाषा मुख्यतः दो प्रकार से कार्य करती है, अनुक्रिया के साथ विचारों का आदान–प्रदान करते है। इसे सम्प्रेषण कहा जाता है, यह बच्चों को स्वयं से सोचने, एवं कार्य करने को सुगम बनाता है, भाषा से ही मानव जगत के पास वह शक्ति है, जिसके द्वारा वह अपने समुदाय तथा दूसरे सदस्यों के मस्तिष्क की घटनाओं को अत्यंत सुस्पष्टता से ही वह अपने नये विचारों एंव भावनाओं को व्यक्त करने में सक्षम हो सकता है।

4. शिष्टाचार का निर्वहन– प्रत्येक समाज में शिष्टाचार के अपने नियम होते है, जिनके पालन में न केवल समाज का कार्य सुव्यवस्थित ढ़ंग से चलता है , अपितु के समाज को अपनी पहचान देते है, इसमें से अधिकतर का निर्वहन भाषा के माध्यम से ही होता है, व्यक्तियों का अभिवादन करने, उन्हें संबोधन से ही होता है। व्यक्तियों का अभिवादन करने, उन्हें संबोधन करने के हर समाज के अपने तरीके होते हैं, उनका पालन भाषा के कार्यो का अभिन्न अंग है।

3.4 भाषा अधिगम तथा भाषा के माध्यम से अधिगम – भाषा अधिगम एक पारस्परिक क्रिया है जो कक्षा में संचार /संवाद के रूप में शिक्षक एवं विद्यार्थियों में लगातार चलता रहता है,भाषा अधिगम की प्रक्रिया मानव भाषा को ग्रहण करने और समझने की क्षमता अर्जित करता है। तथा बातचीत करने के लिए शब्दों एंव वाक्यों का प्रयोग करता है। अतः हम भाषा को पूर्णतः समझ कर लिख , बोल ,पढ एवं सम्प्रेषण कर सकते है। इसमें हर भाषा को भाषा संरचना होती है, भाषा की मूल इकाईयों की बुनियादी ध्वनि को उच्चारण (Phonemes) कहते है, भाषा की सहायता से वाक्य का स्वरूप दो तत्व निहित होते है। सहायता से वाक्य का स्वरूप विकसित किया जाता है जिसे वाक्य संरचना कहते है।

विभिन्न प्रकार के शब्दों को मिलाने के ढ़ग से भाषा के व्याकरण की उत्पत्ति होती है परन्तु प्रत्येक भाषा के वाक्यों की संरचना का गठन अलग–अलग होता है। वाक्य में शब्दों का क्रम सभी भाषाओं में समान नहीं होता है।

भाषा अधिगम के लिए विभिन्न स्त्रोत का प्रयोग किया जाता है, अधिगम स्त्रोत का तात्पर्य शिक्षा के उन उपकरणों से है, जिनका कक्षा में प्रयोग करने से छात्रों को देखने व सुनने वाली इन्द्रियों से ज्ञान प्रापत करने का अवसर प्राप्त होता है, दृश्य –श्रव्य सामग्री का मनौवैज्ञानिक आधार है– एक इन्द्रिय के बजाय अनेक इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करना है, जिससे छात्र ज्ञान को अपेक्षाकृत स्थायी रूप से अपने मस्तिष्क में धारण कर सकते है। अतः अधिगम भाषा एक सतत् प्रक्रिया है जो बच्चों की परिपक्वता को सुनिश्चित तथा निर्धारित करता है।

3.4.1 भाषा के माध्यम से अधिगम – विद्यालयों व शैक्षिक संस्थानों में जिस भाषा में हम शिक्षा पाते हे वह भाषा का माध्यम कहलाता है। महात्मा गांधी और गुरूदेव रविंद्रनाथ टैगोर का मत था कि बच्चे को मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाता हे , इस तरह प्रारंभिक शिक्षा का माध्यम व आधारशिलाा मातृभाषा ही होती है वही भारत में आज भी अंग्रेजी माध्यम में अधिकतर जिनी विद्यालयों में पढ़ाई होती है, भारत में अंग्रेजी भाषा को शिक्षा के माध्यम के तौर पर स्वीकारा जाता हे, जिसे समाज की भी अनौपचारिक मान्यता है। लेकिन मातृभाषा में ही चिन्तन तथा विचार होता है इसीलिए विद्यालयी शिक्षा के किसी भी विषय का ज्ञान भी मातृभाषा के माध्यम से ही किया जाना चाहिए ।

3.4.2 विषय के रूप में भाषा और माध्यम भाषा में अंतर– विद्यालयी शिक्षा की पाठ्यचर्चा के विभिन्न विषयों को पढ़ाया जाता हे, जैसे गणित, विज्ञान ,सामाजिक अध्ययन आदि, भाषा के विष्यों के रूप में जैसे हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत ,उर्दू , तमिल, मलयालम इत्यादि भाषाओं का अध्ययन कराया जाता है। जब सभी विषयों को पढ़ने के लिए किसी एक भाषा को माध्यम बनाया जाए तो वह हमारी शिक्षा प्राप्त करने की भाषा हो जाती है, भारत में त्रिभाषा सूत्र के संदर्भ में बच्चा माध्यमिक स्तर तक तीन भाषाओं का अध्ययन कर लेता है। माध्यम की भाषा को भी विद्यार्थी एक विषय के रूप में पढ़ सकता हे–जैसे हिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी को शिक्षा का माध्यम भी बनाया गया है। और उसे विद्यालयों की पाठ्यक्रम में एक विषय के तौर पर भी पढ़ाया जाता है, भाषा वैज्ञानिकों का मत है कि विद्यालयों की पाठ्यचर्चा में मातृभाषा को केंद्रीय स्थान दिया जाए। मातृभाषा को स्कूलों में केवल एक विषय के तौर पर ही न पढ़ाया जाए अपितु अन्य विषयों की शिक्षा भी उसी भाषा के माध्यम में दी जाए।

3.5 द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे – शैश्वास्था में बच्चों को दो भाषाएं सीखनी पडती हे, जिसमे एक है मातृभाषा या घर की भाषा , अतः बच्चें दो भाषाओं को बोलते एवं समझतें है तो वह द्विभाषी कहलाते है तथा जब तीन भाषाओं को समझने और बोलने की क्षमता होती है। तो उसे त्रिभाषी कहते है। मातृभाषा या घर की भाषा , के अंतर्गत घर की भाषा ,बडे कनअे की भाषा , आस –पडोस की भाषा आदि आती हे ,जो बच्चे स्वाभाविक रूप से अपने घर तथा समाज के वातावरण से यह भाषा ग्रहण कर लेता है। बच्चों में भाषा की जन्मजात क्षमता होती है,अधिकतर बच्चे स्कूल की शिक्षा शुरूआत से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात कर पूर्ण भाषिक क्षमता रखते है, वे न केवल उन भाषाओं को सही–सही बोल लेते है, बल्कि उनका उचित प्रयोग भी कर रहे होते है।

द्विभाषिकत/त्रिभाषिकता किन्हीं दो/तीन भाषाओं में वार्तालाप करने में दक्षता अर्जित करना हे। मात्भाषा को व्यक्ति जन्मजात भाषा, व्यक्ति द्वारा बचपन से बोले जोन वाली भाषा आदि रूपों से परिभाषित किया गया है भारतीय सामाजिक संदर्भ की यह विशेषता है कि यहाँ

जनसामान्य द्विभाषिकता / त्रिभाषिकता को व्यक्ति एंव समाज के स्तर पर एक महत्वपूर्ण विशेषता बना देती है। दिन प्रतिदिन के जीवन की गतिविधियों में भारतीय बच्चे संप्रेषण के लिए एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग करते है। भारत में त्रिभाषा सूत्र की संकल्पना के माध्यम से शिक्षा के माध्यम को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है,
प्रभावी समझ और भाषाओं के प्रयोग के माध्यम से बच्चे विचारों व्यक्तियों और वस्तुओं तथा अपने आसपास के संसार से अपने आपको जोड पाते हे। विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता की पहचान से उनका स्वंय के और अपनी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति विश्वास भी बढ़ेगा, द्विभाषी, क्षमता संज्ञानात्मक वृद्धि , सामाजिक सहिष्णुता , विस्तृत चिंतन तथा बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को भी बढ़ा देती है।

3.5.1 शिक्षकों के लिए निहितार्थ –द्विभाषा/त्रिभाषा के सन्दर्भ में वह बच्चे आते है, जिनकी घर तथा विद्यालय में एक से अधिक भाषा पर पहुँच है,NCF(2000) के अनुसार यह तीन मजबूत सिद्धांतों के आधार पर दिया गया है।

1. उपयुक्त अधिगम की चुनौतियाँ रखना।
2. विद्यार्थियों की विविध अधिगम आवश्यकताओं की प्रतिक्रया।
3. अधिगम में सक्षम अवरोधों पर काबू पाना, विद्यार्थियों का समूह एंव एकल मुल्यांकन ।

प्राथमिक राष्ट्रीय रणनीति मोडल के तीन वृत्तों का समावेश इन तीन सिद्धांतों की कार्यप्रणाली को दर्शाता है , चित्र 3.5.1.1 देखें।

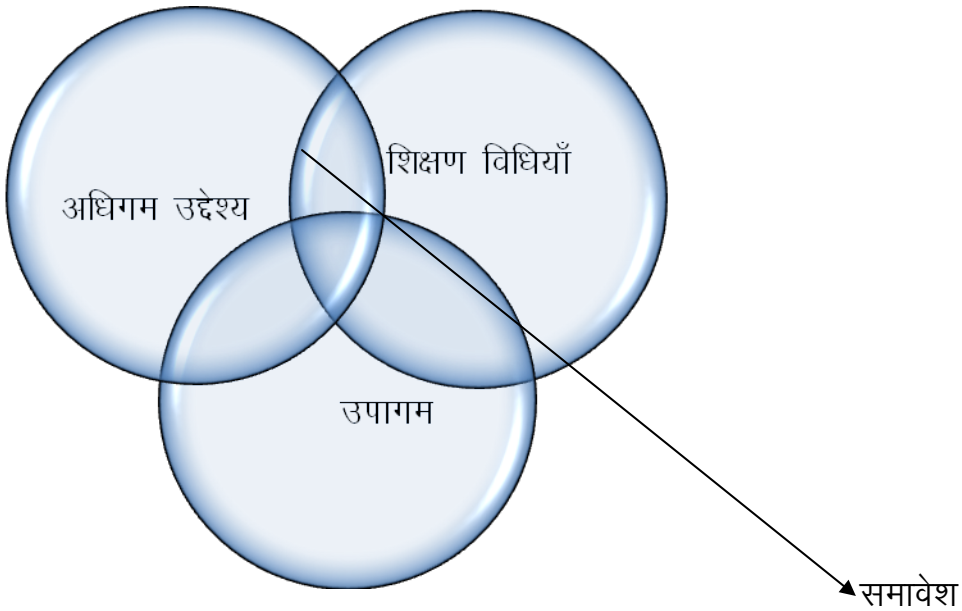

चित्र 3.5.1.1 अधिगम के सक्षम अवरोधों पर काबू

चित्र 3.5.1.1 अधिगम के सक्षम अवरोधों पर काबू एकल विद्यार्थियों के लिए शिक्षकों को शिक्षण सामग्री को अनुकूल पडेगा। विशेष चुनाव हेतु उपयुक्त अधिगम उद्देश्य ,शिक्षण शैली एवं अधिगम रणनीतियां शिक्षकों के सूचित व्यावसायिकता में ही निहित है।

हमारी शिक्षण प्रणाली को अधिगम के लिए सही स्थितियाँ प्रदान करनी चाहिए, यह समानता के अवसर प्रदान करने में भी सहायक होती है।
शिक्षकों में भी सहायक होती है।

- द्विभाषिकता से शिक्षकों में भी दो भाषाओं की क्षमता स्वयं ही आ जाती है, ये संज्ञानात्मक विकास में भी सहायक होता है, द्विभाषी क्षमता शिक्षकों को नये और अलग विचारों के लिए समृद्ध संसाधनों की आपूर्ति करता है, द्विभाषी स्वभाव से संज्ञानात्मक रूप से शिक्षक रचनात्मक और सक्रिय होते है, अतः यह संज्ञानात्मक वृद्धि एंव उच्च स्तर अभिव्यक्ति –क्षमता में भी वृद्धि करता है, उदाहरण किसी अमूर्त विषय पर निबंध लिखना।
- सक्षम शिक्षक एक सकारात्मक आत्म–अवधारणा तथा एक ही संस्कृति के साथ सकारात्मक पहचान रखता है, यह सामाजिक सहिष्णुता को अभिप्रेरित करना है तथा यही शैक्षणिक सफलता का आधार है।
- द्विभाषी शिक्षक अच्छे वक्ता के साथ–साथ अच्छे श्रोता भी होते है। यह बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ा देती है। विस्तृत ,चिंतन,मनन में भी शिक्षण निपुर्ण होने लगते है।
- ये क्षमताएं शिक्षकों को बेहतर समस्या हल करने वाले होते है, क्योंकि उन्हें महत्वपूर्ण सोच तथा अपसारी सोच वाली क्षमताओं पर कई दृष्टिकोण प्रदान करता है।
- द्विभाषी शिक्षकों की मजबूत सजगता रहती हे, तथा वह ज्ञान को सीानांतरित करने में भी सक्षम होते है।
- कई नयी भाषाएँ सीखने के मार्ग भी प्रशस्त होते है, यह राष्ट्रीय सद्भाव का प्रसार है कई स्तरों पर शास्त्रीय एवं विदेशी भाषाओं का भी परिचय करवाया जा सकता है।

3.6 बहुभाषी कक्षाएँ –चुनौतियाँ एवं रणनीतियाँ बहुभाषिक कक्षाओं से अभिप्राय है, कि जब एक कक्षा में विभिन्न भाषाओं को बोलने बच्चे पढ़ते है ता वह बहुभाषिक कक्षा कहा जाता है, भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएँ शामिल है, जो कि निम्नलिखित है, तालिका क्र. 3.6.1 देखे,

तालिका क्र.3.6.1 भारतीय संविधान अनुसार भाषा सूची

क्र	भाषाएं
1	असमिया
2	उड़िया
3	उर्दू
4	कन्नड़
5	कश्मीरी
6	कोंकणी
7	गुजराती
8	डोंगरी
9	तमिल
10	तेलगू
11	पंजाबी
12	बांग्ला
13	बोडो
14	मणिपुरी
15	मराठी
16	मलयालम
17	मैथिली
18	संथाली
19	संस्कृत
20	सिंधी
21	हिन्दी
22	नेपाली

भाषाएँ एक माध्यम है जिससे अधिकार ज्ञान का निर्माण होता है, इसलिए इनका मनुष्य के विचार और उसकी अस्मिता से गहरा संबंध होता है। प्रभावी समझ और भाषाओं के प्रयोग के माध्यम से बच्चे विचारों, व्यकितयों और वस्तुओं तथा अपनं आसपास के संसार से अपने आपको जोड़ पाते है।

3.6.2 विविधता में आवश्यकता पूर्ति हेतु चुनौतियाँ – भारत की भाषिक विविधता या बहुभाषिकत एक जटिल चुनौती के साथ–साथ कई अवसर भी प्रदान करती है, भारत में

अनेक भाषा –परिवारों का प्रतिनिधित्व भी है, दुनिया के और किसी भी देश में पाँच–भाषा परिवारों की भाषाएँ नहीं पाई जाती है, संरचना के स्तर पर वे इतनी भिन्न है कि उन्हें विभिन्न भाषा परिवारों में वर्गीकृत किया जा सकता है– इनके नाम है– इंडा–आर्येन ,द्रविड़, ऑस्ट्रो –एशियाटिक, तिब्बतों –बर्मन ओर अंडमानी ये भाषाएं आपस में सतत् संपर्क –संवार भी करती रहती है। अनेक भाषिक और सामाजिक –भाषिक विशेषताएँ ऐसी है। जो सभी भाषाओं में समान रूप से पायी जाती हैं यह इस बात का प्रमाण है कि भारत में विभिन्न भाषाओं और संस्कृतियों सदियों से एक दूसरे को समृद्ध करता रहा है। शास्त्रीय भाषाएं : जेसे –लैटिन, अरबी, फारसी, तमिल और संस्कृत विभक्ति प्रधान व्याकरण के मामले में और सौंदर्य बोध की दृष्टि से काफी समृद्ध रही हैं और हमारे जीवन को प्रदीप्त करती रही है, क्योंकि अनेक भाषाएँ उनसे शब्द लेती रहती है। अतः हम पाते है कि बहुभाषिकता एक जीवन शैली है।

3.6.3 विविधता में आवश्यकता पूर्ति हेतू रणनीतियाँ –बहुभाषिकता से निश्चित संज्ञानात्मक लाभ होते है, निम्नलिखित दिशा–निर्देश या रणनीतियाँ बहुभाषिकता के लक्ष्यों की प्राप्ति सहायक हो सकते है–

1. त्रिभाषा–फॉर्मूलाः– भारत की भाषा–स्थिति की चुनौतियों और अवसरों को संबोधित करने का प्रयास है। यह एक रणनीति है जिससे कई भाषाएँ सीखने का मार्ग प्रशस्त करता है। इसमें बच्चों को विद्यालय स्तर पर भाषाओं का ज्ञान प्राप्त करना है। त्रिभाषा –सूत्र के अनुसार–माध्यमिक स्तर पर बच्चे को कम से कम तीन भाषाए पढ़नी होगी।

   क. मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा की शिक्षा

   ख. केन्द्र की राजभाषा हिन्दी या सहराज भाषा अंग्रेजी

   ग. एक भारतीय भाषा या विदेशी भाषा जो शिक्षा के माध्यम से अलग हो

इसे कार्यरूप और भावरूप दोनों ही में अपनाने की आवश्यकता है। इसका प्राथमिक उद्देश्य भारत में बहुभाषिकता और राष्ट्रीय सद्भाव का प्रसार है।

2. भाषा शिक्षण बहुभाषिक होना चाहिए केवल कई भाषाओं के शिक्षण के ही अर्थ में नहीं, अपितु रणनीति तैयार करने के लिहाज से भी ताकि बहुभाषिक कक्षा को एक संसाधन के तौर पर प्रयोग में लाया जाए।

3.बच्चों को घरेलू भाषाएं/मातृभाषाएं भी स्कूल में शिक्षण का माध्यम होनी चाहिए।

4. उच्चतर स्तर पर बच्चों की घरेलू भाषाओं में शिक्षण की व्यवस्था न हो तो प्राथमिक स्तर की स्कूली शिक्षा अवश्य घरेलू भाषाओं के माध्यम से ही दी जानी चाहिए। यह आवश्यक है कि हम बच्चे की घरेलू भाषाओं को सम्मान दें हमारे संविधान की धारा 350 क, के प्रत्येक राज्य और राज्य के भीतर प्रत्येक स्थानीय प्राधिकारी भाषाई अल्पसंख्यक वर्गों के बालकों को शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की पर्याप्त सुविधाओं की व्यवस्था करने का प्रयास करेगा।'

5. बच्चे प्रारंभ से ही बहुभाषिक शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा मूल–भाव से इसे ग्रहण करे, क्योंकि यह व्यवस्था इस बहुभाषी देश में बहुभाषी संवाद का वातावरण को बढ़ावा दे सके।

6. गैर –हिन्दी भाषी राज्यों में, बच्चे हिन्दी सीखे तथा हिन्दी प्रदेशो में बच्चे वह भाषा सीखें जो उस इलाके में नहीं बोली जाती है। इसके अलावा आधुनिक भारतीय भाषा के रूप में संस्कृत का अध्ययन भी शुरू किया जा सकता है।

7. बाद के स्तरों पर शास्त्रीय एंव विदेशी भाषाओं से परिचर करवाया जा सकता है।

8.विभिन्न भाषों के साहित्य, कहानी, कविता , रचनाएँ आदि का पठन –पाठन बच्चों में रचनाशीलता को बढ़ा सकता है। इससे वह स्वयं भी लिखने की दिशा में अग्रसर होगे, उनको इसके लिए भी प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे अलग–अलग रचनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम को आपस में मिलाएँ।

9. अनेक भाषाओं में संवाद करने की क्षमता पूर्णतः विकसित करना भी भाषा की पकड़ को मजबुत करता है, भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाओं के नियम –जैसे –ध्वनि, शब्द, वाक्य और संवाद के स्तर पर भी उनका पूरा नियंत्रण होता है। इसी से वह भाषा को सही प्रयोग करता है। साथ ही सही ढ़ग से भाषा को समझता है और बोलता है।

10. भाषा शिक्षण को केवल भाषा की कक्षा तक सीमित न रखा जाए, अपितु विज्ञान , सामाजिक विज्ञान, गणित की कक्षाओं में भी भाषा शिक्षण समावेशित किया जाए। भाषा को लेकर पाठ्यचर्चा में ऐसी नीति अपनायें जो बहुभाषिकता को बढ़ावा दे।

3.7.1 बहुभाषावाद– एक संसाधन के रूप में – आज के परिदृश्य में बहुभाषावाद ऐसी स्वाभाविक घटना मानी जोन लगी है जिसका सकारात्मक संबंध विवेकपूर्ण आचरण ,सज्ञानाम्तक व्यवहार एवं विद्यालयों में प्राप्त सफलता से है। भाषा सभी प्राकर की शैक्षणिक क्रियाओं का केन्द्र –बिन्दु है अतः इसे एक संसाधन के यप में प्रयोग किया जा सकता है। हमारा अधिकतम ज्ञान, भाषा के माध्यम से ही अर्जित किया जाता है। बहुभाषावाद हमारे बीच मौजूद सामाजिक विविधताओ को समाहित किए रहती है तथा भाषा गहनता से हमारे विचारों की संरचना तथा उसकी अभिव्यक्ति की सीमाएँ तय करती है। बहुभाषी समाज में भाषाई विविधता एक संसाधन है। भाषाएँ , बहुभाषी समाज में विविध भूमिकाएँ अदा कर व्यकित को एकाधिक पहचान देती है। हमें इन छिपी सम्भावनाओं को पहचाने तथा स्वीकारने की जरूरत है। यह कार्य का प्रयास शिक्षकों को ही करना होगा । इसके लिए पाठ्यक्रम के संकलन, पाठ्यसूची तथा शिक्षण –संसाधनों के विषय में विचार–विर्मश , नयी पद्धतियों , शिक्षक –प्रशिक्षण कार्यक्रम करने होगे।

बच्चों को उपलब्ध संवाद तथा नए भाषा– रहित संवाद के साथ पारस्परिक व्यवहार इस नवीन भाषा भाषा प्रशिक्षण पद्धति का मुख्य केन्द्र बिन्दु होगा। कक्षाओं में मातृभाषा/घरेलू भाषाओं के प्रयोग में छूट होनी चाहिए। तथा सृजनात्मक रूप से इसका इस्तेमाल होना चाहिए। इस प्रक्रिया में शिक्षक स्वयं भी अधिगम का हिस्सा होगे, सज्ञानात्मक चुनौतियाँ प्रदान करती हुई विभिन्न गतिविधियाँ भी आसानी से आयोजित की जा सकती है। उदाहरण के लिए , बच्चों में बहुवचन शब्दों के बनाने के लिए विभिन्न भाषाओं को पढ़ते समय बहुवचन शब्द बनाने की प्रक्रिया हो।

अतः बहुभाषावाद का मूल्यांकन हमेशा ही उसके लाभों से होता है। यह भाषाई , सामाजिक एंव संज्ञानात्मक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है। दुआ (2008) के अनुसार –वास्तविकता में बहुभाषा को संसाधन के रूप में विकसीत किया जाना चाहिए तथा, भाषाओं के विकास के लिए यह अत्यन्त जरूरी है। भाषा ही ज्ञान का द्वार है तथा बहुभाषा हमेशा से

उच्च सामाजिक स्थिति एंव प्रतिष्ठा की छाप रहा है। बहुभाषिकता बच्चों में उनकी अस्मिता का निर्माण करती है। यह भारत में भाषा –परिदृश्य का विर्शिष्ट लक्षण भी है। अतः बहुभाषिकता का एक संसाधन के रूप में उपयोग , कक्षा की कार्यनीति का हिस्सा बनाया तथा उसे लक्ष्य के रूप में रखना, रचनात्मक भाषा शिक्षक का कार्य है। यह केवल उपलब्ध संसाधन का बेहतर इस्तेमाल नहीं है, बल्कि इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि हर बच्चा स्वीकार्य और संरक्षित महसूस करें।

3.7.2 बहुभाषावाद– एक रणनीति के रूप में– सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर बहुभाषिकता एक अतुलनीय साधन है। यह क्षमता निश्चित रूप से संज्ञानात्मक एंव बौद्धिक उपलब्धियों के स्तर को बढ़ा देता है, बहुभाषिय भाषा शिक्षण के लिए शिक्षक को स्वयं बहुभाषिय होना आवश्यक है। इसके लिए उसे रणनीति तैयार कर पढ़ाना चाहिए, शिक्षकों को प्राथमिक स्तर पर स्कूली शिक्षा भाषा के माध्यम से करानी चाहिए, इस स्तर पर बच्चों को भाषाओं को बिना सुधारे उसी रूप में स्वीकार करना चाहिए, कक्षा तीन के बाद मौखिक और लिखित माध्यम से उच्च स्तरीय संवाद–कौशल के प्रयास होने चाहिए,कक्षा चार के बाद समृध और रूचिकर अवसर दिये जाने चाहिए, तो बच्चे स्वयं इसे भाषा के मानक रूप में ग्रहण कर लेगे, भाषा के जटिल और समृद्ध संरचनाओं के नियम–जैसे –ध्वनि, शब्द, वाक्य और संवाद के स्तर पर भी उनका नियंत्रण होता है। यहाँ शिक्षक को यह स्वीकारना करना होगा कि , गलतियाँ अधिगम का हिस्सा है। इसीकारण गलतियाँ और कमियों पर ध्यान न देते हुए , बच्चों को विस्तृत रूचिकर और चुनौतीपूर्ण निवेश दिए जाने चाहिए।

भारत के बहुभाषी समाज में बहुभाषा देश में विभिन्न समृद्ध भाषाएँ, उपभाषाएँ एवं बोलियों से जहाँ व्यक्ति को निखारता है, तो अंग्रेजी भाषा की पकड़ होने पर वैश्विक भाषा से जोड़ता है। इससे शिक्षकों में दक्षता तथा विद्यार्थियों को स्कूल के बाहर भाषा से सामना करने में सुगमता होती है। बहुभाषीय उपागम हेतु पाठ्यचर्चा के भी दोहरे लक्ष्य होने चाहिए, प्रथम तो बुनियादी दक्षता प्राप्त करना। दूसरा, साक्षरता द्वारा भाषा का ऐसा विकास कि वह अमूर्त चिंतन और ज्ञान का उपकरण बने, बहुभाषी रणनीति के अर्न्तगत ऐसी शैक्षणिक गतिविधयाँ करवाई जाएँ जिससे दुनिया के बारे में बच्चे की जागरूकता बढ़े। बाद में सभी चरणों में अधिगम भाषा के द्वारा ही होते है। उच्च स्तर का भाषा– कौशल सभी भाषाओं में समान होता है, उदाहरण के तोर पर– पढ़ना एक ऐसा कौशल है जा दूसरों को सिखाया जा सकता हैं एक भाषा में सुधार का असर अन्य भाषाओं में भी सुधार लाता है। अपनी भाषा को पढ़ने में यदि कोई असफल होता है, तो उससे दूसरी भाषा के पठन पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के तौर पर अंग्रेजी भाषा एकांकी नहीं है। अंग्रेजी शिक्षण का लक्ष्य ऐसे बहुभाषी लोग को तैयार करना है जा हमारी भाषाओं को समृद्ध कर सके, यह एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण है इसीकारण विभिन्नता लिए भारत के राज्यों में अन्य भारतीय भाषाओं के साथ अंग्रेजी का स्थान बनाने की आवश्यकता है, इससे अन्य भाषाएँ को समृद्ध करे, यहीं अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में अंग्रेजी के वर्चस्व को कम करने के लिए अन्य भारतीय भाषाओं के मूल्यवर्धन की जरूरत है। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों की तुलनात्मक सफलता यह बताती है कि भाषा तब सीखी जाती है जब वह भाषा के रूप में नहीं पढ़ाई जाती बल्कि सार्थक संदभों से जोड़कर उसे पढ़ाया जाता है, संपूर्ण पाठ्यचर्चा के अंतर्गत भाषा शिक्षण अत्यन्त महत्वपूर्ण है तथा सभी शिक्षण एक अर्थ में भाषा शिक्षण ही होता है।

अन्य महत्वपूर्ण रणनीति है पाठ्यचर्चा निवेश– समृद्ध संप्रेषण , इसके अन्तर्गत आते है– पाठ्यपुस्तकें शिक्षार्थी द्वारा चयनित पाठ, कक्षा पुस्तकालय जिसमें अनेक भाषाओं तथा विधाओं के लिए जगह हो, छपी सामग्री एक से अधिक भाषा में समांतर पुस्तकें और सामग्री , मीछिया सामग्री ,मैगनीज ,समाचार पत्र के स्तंभ , रेडियों, ऑडियो कैसेट, और प्रामाणिक सामग्री ।

स्कूलों को सामुदायिक शिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करना चाहिए, नवाचार, पद्धतिँ एवं दृष्टिकोण को बढ़ावा देने को जरूरत है। बुनियादी दक्षता सुनिश्चित होने के उपरान्त ही उच्चस्तरीय कौशल दक्षता की तरह दिशा लेनी चाहिए, इससे साहित्यिक आस्वाद और जेंडर संबंधी दृष्टिकोण निर्धारण में भाषा की भूमिका शामिल है। अतः शिक्षक के पास विविध प्रकार की सामग्री उपलब्ध होनी चाहिए ताकि पाठ्यचर्चा निवेश–समृद्ध हो, मूल्यांकन की पुनः नियोजित कर नई रणनीतियाँ अपनाई जानी चाहिएं शिक्षार्थी की प्रगति का निरन्तर आकलन होना चाहिए तथा पोर्टफोलियों के रूप में उसका लेखन रखना चाहिए।

3.8 इकाई सारांश –

- भाषा के कार्य दो भागों में विभाजित है–प्राथमिक तथा द्वितीय कार्य।
- भाषा के कक्षा के भीतर तथा बाहर के काय्र विभिन्न कार्य है।
- भाषा अधिगम से तात्पर्य भाषा की संरचना, वाक्य रचना, व्याकरण से है, वहीं भाषा के माध्यम से अधिगम या सीखना में जिस भाषा को संप्रेषण का माध्यम चुना गया है, उसके द्वारा अधिगम की प्रक्रिया की जाती है।
- द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे– वह बच्चे जो दो या दो से अधिक भाषाएँ बोलते एवं समझते है, उन्हें द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे कहलाते है।
- बहुभाषी कक्षाएँ से अभिप्राय है कि जब एक कक्षा में विभिन्न भाषाओं को बोलने वाले बच्चे पढ़ते है तो वह बहुभाषिक कक्षा कहलाती है, भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल है।
- बहुभाषी व्यवस्था में लोगों को बहुभाषी क्षमता की आवश्यकता होती है। बहुभाषात्मक प्रकृति को स्कूली जीवन की समृद्धि के लिए संसाधन के रूप में देखा जाना चाहिए।
- कक्षा में बहुभाषावाद को बढ़ावा देने हेतु कार्यनीति एंव कई रणनीतियों के द्वारा लक्ष्य के रूप में रखना, रचनात्मक भाषा शिक्षकों का कार्य है।

3.9 निहित कार्य :–

- भाषा का अर्थ बताते हुए उसके कक्षा के भीतर एवं बाहर के कार्यों की विवेचना कीजिए।
- बहुभाषिक कक्षा में शिक्षक की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
- मातृभाषा और माध्यम भाषा में अंतर स्पष्ट कीजिए।
- द्विभाषी एंव बहुभाषी बच्चों में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

3.10 चर्चा तथा स्पष्टीकरण को बिन्दु

3.10.1 चर्चा के बिन्दु

_____

_____

_____

3.10.2 स्पष्टीकरण के बिन्दु

_____

_____

_____

3.11 सन्दर्भ

- एन.सी.ई.आर.टी. (2006) राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा, 2005 ,एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली।
- यादव सियागम, पाठ्यक्रम एवं भाषा, संस्करण 2016 , श्री विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।
- चतुर्वेदी डॉ. शिखा, हिन्दी शिक्षण, संस्करण 2013, आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
- पाण्डेय ,रंजना (2016), लेंगवेज एक्रास करिकुलम, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
- सिंह निरंजन कुमार (2017) माध्यमिक विद्यालय में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी , जयपुर।
- www.ncert.nic.in
- www-eklavya.org
- www. open.edu

DELED 03

खण्ड – 2

इकाई 4 कक्षा में भाषा का विकास

4. 0 प्रस्तावना
4. 1 इकाई के उद्देष्य
इकाई 4. 1 बच्चों की बाल का महत्व स्वंय की बालचीत, सहकर्मी की बातचीत, भाषा सीखने के लिए एक संसाधन
4. 1.1 प्रस्तावना
4. 1.2 बोलना और सीखना
4. 1.3 छात्रों की बातचीत मे संकेत के रूप में चित्रों का उपयोग करना
4. 1.4 भाषा की कक्षा और संवाद
4. 1.5 भाषा की कक्षा और चित्र
4. 1.6 भाषा की कक्षा और कहानियाँ
4. 1.7 साहित्य से परिचय
4. 1.8 समझकर पढ़ना और सुसंगत लिखना
4. 1.9 भाषा सीखने के लिए संसाधन
1. पाठ योजना बनाना
2. रिकॉडिंग
3. कक्षा में स्थानीय विषेषताओं का उपयोग करना,
4. स्थानीय विषेषताओं का उपयोग करना,
5. बाहय पर्यावरण का उपयोग करना
6. कहानी, गाना, रोलप्ले और नाट्क
4 1.10 सारांष
4. 11 संदर्भ
इकाई : 4. 2 भाषा के विकास में खेल का महत्व
4. 2.1 प्रस्तावना
40 2.2 खेल की विषेषता
4. 2.3 विकास में खेल का महत्व
1. खेल संज्ञानात्मक विकास को आगे बढ़ाता है।
2. माता–पिता की भूमिका
3. खेल कल्पनाषीलता और सृजनात्मकता को बढ़ावा देना है।
4. खेल भाषायी विकास मे सहायक होता है।
5. खेल द्वारा बच्चे सामाजिक होना सीखते है,
6. खेल भावनात्मक विकास में सहायक होता है।
4. 2.4 विकास का खेल पर प्रभाव
इकाईः 4.3

4.4.5 सीखने को कठिनाईयों के लिए हस्तक्षेप
4.4.6 सारांष
4.4.7 संदर्भ ग्रंथ
इकाई : 4.3 भाषा सीखने मे साहित्य की भूमिका : ग्रंथों के प्रकारः कथा और प्रदर्षनी साहित्य , एक पाठ साथ संलग्न, पाठ्यक्रम में साहित्य का उपयोग करना
4.3.1 प्रस्तावना
4.3.2 भाषा षिक्षण में साहित्य की भूमिका
4.3.3 ग्रंथों के प्रकार (साहित्य के प्रकार)
1. सृजनात्मक साहित्य
2. विवेचनात्मक साहित्य
3. रचनात्मक सृजनात्मक साहित्य
4.3.4 साहित्य की विधाएँ
1. नाट्क
2. एकांकी
3.उपन्यास
4. कहानी
5. निबंध
6. आत्मकथा
7. जीवनी
8. यात्राा वृतांत
9. रेखाचित्र
10. संस्मरण
11. कविता
4.3.5 भाषा षिक्षण में साहित्य का उपयोग
4.3.6 सारांष
4.3.7 संदर्भ
इकाई : 4.4.4 भाषा सीखने और विषेष जरूरतों वाले बच्चे, निदान और प्रांरभिक भाषा हस्तक्षेप
4.4.1 प्रस्तावना
4.4.2 शैक्षणिक आवष्यकताओं के भेद
4.4.3 विविधताओं के साथ काम करना
4.4.4 सर्वसमाहित ढंग से कार्य करना
1. प्रत्येक बच्चे के लिए सही वर्कषीट
2. प्रत्येक बच्चे के लिए सही ग्रहकार्य
3. प्रत्येक बच्चे के लिए सही परीक्षा

4. 0 प्रस्तावना :

भाषा के अक्सर अभिव्यक्ति का माध्यम भर माना जाता है और इसी के अनुरूप भाषा की कक्षाओं की षिक्षण प्रक्रिया संचालित होती है जहाँ भाषा को केवल एक विषय के रूप मे

पढ़ाया जाता है। पाठ्यपुस्तक साधन की बजाय साध्य बनकर रह जाती है और सारा ध्यान शषा सीखने की बजाय पाठ के पीछे के अभ्यास हल करने तथा उच्चारण और लिपि की शुद्धता तक सीमित होकर रह जाता है।

यदि भाषा की प्रकृति और इसके उद्देष्यों को समझा जाए तो विचारों की अभिव्यक्ति भाषा का एक बेहद छोटा व सीमित क्षेत्र है। भाषा हमारे जीवन में इससे कहीं बढ़कर काम करती है। भाषा हमारी समझ का आधार है। यह विचार करने तर्क करने, चिन्तन करने ,दूसरे की बात समझने जैसे बहुत से काम करती है। दूसरे शब्दों में भाषा हमारे समूचे जीवन का आधार है। भाषा हमें समाज से जोड़ती है समाज में अपना स्थान सुनिष्चित करने में मदद करती है ओर भाषा को इस स्तर तक विकसित करने की जिम्मवारी विद्यालयों की मानी जाती है। बच्चे जब विद्यालय में आते हे। तो उनकी अपनी भाषा पर (मौखिक) उनका पूर्ण समझ अधिकार होताह` वह अपनी भाषा में वाक्यों की रचना और व्याकरण की पूर्ण समझ रखते है। हाँ किताबों या विद्यालय की शषा जरूर उनके लिए अपरिचित हो सकती हे, उन्हें उसे सीखने में प्रारंभिक स्तर पर कठिनाई भी महसूस हो सकती है। यहाँ बच्चों की भाषा और पुस्तकों की भाषा (मानक भाषा) के बीच पुल बनाने और बच्चों को आसानी से इस पार लेकर आने के लिए भाषा षिंक्षक प्रक्रियाएँ ऐसी होनी चाहिए जो बच्चे की भाषा सीखने में रूचि बढ़ाए, भाषा सीखना उसे सहजः—सरल प्रतीत हो और वह उस

4.4.4

4 ए 0 प्रस्तावना :

[illegible]

[illegible]

4ण्0ण्1

- को जानेंगें

- [illegible] ा [illegible]

4ण1 [illegible] ए [illegible]

;प्उचवतजंदबम व बीपसकतमदष् जंसारू ैमस जिंसाए चममत पदजमतंबजपवदेरू ज्ंसा ` ं तमेवनतबम
वित संदहनंहम समंतदपदहद्ध

4ण 1 प्रस्तावना : [illegible]

4ण1ण2 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4ण1ण3

4ण1ण4

[illegible]

4ए1ए5 [illegible]

[illegible]

4ए1ए6 [illegible]

[illegible]

4.1.7

4.1.8

□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□
□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□
□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ए □□□□ □□□□ □□
□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□
□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□

□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□
□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□
□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□
□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□
□□□ □□□-□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□
□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□
□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□
□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□
□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ (□□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□ □□□□ □□□□) □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□
□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□-
□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ए □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□
□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□
□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□
□□□□-□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□□-□□□□

□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□
□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□
□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□
□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□
□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□
□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□
□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□
□□□□ □□ए □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□
□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□
□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ए □□□□□□□
□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□
□□□□□□□
□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□□□□ □□ □ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□

2

□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ए □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□□□□ □□:

- □□□□□□□दृ□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□/□□□□□□□/□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□
- □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ (□□□□□□ए □□□□ए □□□□□□ए □□□□□□□□□□□ए □□□□□□□□ □□□□) □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□
- □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□
- □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ए □□□□□□□□□□□ए □□□□□□□□□ए □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

3 □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ दृ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□□ (□□□□□□□ए □□□□□□ए □□□□□□□ए □□□□ए □□□□□□) □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ए □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□दृ□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□य □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ए □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ए □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ दृ □□□□□ए □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□

4

5

□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□) □ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ए □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ दृ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ए □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□दृ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□दृ□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□:

- □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□
- □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□
- □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□
- □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□
- □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□
- □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□ए □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ए □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ए □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ए □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

6

□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ए □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□

□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□

□□□

□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ए □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□

□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □ □□□□ए □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□

□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ दृ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□

□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ए □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ए □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ए □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ए □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ए □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ ए □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□

□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□:

- □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□
- □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□
- □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□
- □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ए □□□□□□□ □□ □□□□ए □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ए □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□□□□ ৳□□□□□ष्ए ৳□□□□□□□ □□ □□□□□□□৳ □□ ৳□□□□□□৳ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ए ৳□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ष्ए ৳□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ब्ब □□ ৳□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ब्ब □□ □□□□□□□ □□

□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ए □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ए □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ए □□ □□□□ □□□□ □□□ए □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ए □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ ए □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□य □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ए □□ □□दृ□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ए □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□

□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ए □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ए □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ए □□□□ए □□□□ए □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□ए □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □

[illegible]

4ण1ण0 [illegible]

[illegible]

4.2 [illegible] ;प्उचवतजंदबम वि चसंल पद संदहनंहम कमअमसवचउमदजद्ध

4ण2ण1 प्रस्तावना :

[illegible]

4.2.2

4ʊ2ʊ3

1

[illegible]

2 [illegible]

;[illegible]) [illegible]

;[illegible]) [illegible]

;[illegible]) [illegible]

;[illegible]) [illegible]

3 [illegible]

[illegible]

4

5

6

4ण2ण4

[illegible] ;[illegible]/ ´वदम व ि च्तवगपउंस क्मअमसवचउमदज . ´च्क द्ध [illegible] ष[illegible]ष [illegible] [illegible]ए [illegible]

[illegible] रू

- ;[illegible]) [illegible]
- ;[illegible]) [illegible]
- ;[illegible]) [illegible]

4ण्3 [illegible]: [illegible]य [illegible]ए [illegible]य [illegible]

; त्वसम व ि सपजमतंजनतम पद संदहनंहम समंतदपदहरू ज्लचमे व ि जमगजेय दंततंजपअम ´दक मगचवेपजवतल सपजमतंजनतमए म्दहंहपदह ूपजी ´ जमगजय न्पदह सपजमतंजनतम ´बतवे जीम बनततपबनसनउद्ध

4ण्3ण्1 प्रस्तावना :

[illegible]

□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□-□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ε □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ף □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ף □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□

□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□□ □□□□□ף □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□-□□ □□□□-□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ ט□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ט □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□

4ए3ए2

4ए3ए3

18

4ण3.4

1940 1960

1970 80

द्य

4प4 रू

;संदहनंहम

समंतदपदह ंदक बीपसकतमद ूपजी `चमबपंस दममकेरू क्पंहदवेपे ंदक मंतसल संदहनंहम पदजमतअमदजपवदण्द्ध

4ण्4ण्1

[illegible]

4ए4ए3

- □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ए □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□
- □□ □□□□□□ए □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□

□□□□□□

□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□-□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□

4ण1ण11 त्मिमितमदबमे

- ठंतदमेए क्ण ;1992द्ध *थ्तवउ ब्वउउनदपबंजपवद जव ब्नततपबनसनउ* ए 2दक मकदण च्वतजेउवनजीए छभ्रू ठवलदजवदध्ब्वा.भ्मपदमउंददण
- ठंतदमेए क्ण ;2008द्ध ष्म्गचसवतंजवतल जंसा वित समंतदपदहष् पद डमतबमतए छण ंदक भ्वकहापदेवदए ैण ;मकेद्ध *म्गचसवतपदह ज्ंसा पद ैबीववस* ण स्वदकवदरू ैहम च्नइसपबंजपवदेए चचण1दृ15ण
- थ्पीमतए क्णए थ्तमलए छण ंदक त्वजीमदइमतहए ब्ण ;2008द्ध ष्ब्वबमकनतमे वित बसेंतववउ जंसाए बिंचजमत 5 पद *ब्वदजमदज ।तमं ब्वदअमतेंजपवदेरू भ्वू जव च्संद क्पेबनेपवद.ठेंमक स्मेवदे वित क्पअमतेम स्ंदहनंहम स्मंतदमते* ण ।समगंदकतपंए टंरू ।ेवबपंजपवद वित ैनचमतअपेपवद ंदक ब्नततपबनसनउ क्मअमसवचउमदजण ।अंपसंइसम तिवउरू ीजजचरूध्ध्ूूूण्ेबकण्वतहध्चनइसपबंजपवदेध्इववोध्108035ध्बींचजमतेध्ब्वबमकनतमे.वित.ब्सेंतववउ. ज्ंसाण्ेंचग ;बबमेमक 28 ब्जवइमत 2014द्ध
- ।हदपीवजतपण् ह्ण ;2007द्ध भ्पदकपरू ।द म्ेमदजपंस ळतंउउंतण स्वदकवदरू त्वनज समकहम
- ॅवता च्ंचमते वद जीम ैनउउमत प्देजपजनजम वद स्पदहनपेजपबे न्दपअमतेपजल वद छवतजी क्ंावजं ैमेपवद 1997 टवसनउम
- ऋतंदीमदए ैजमचीमद क 1981 च्तपदबपचसमे ंदक च्तंबजपबम पद ैमबवदक स्ंदहनंहम ।बुनपेपजपवदण् म्दहसपेी स्ंदहनंहम ज्मंबीपदह ैमतपमेण स्वदकवदरू च्तमदजपबम द्द भ्ंसस प्दजमतदंजपवदंस ;न्ज्ञद्ध स्जकण